धर्मक्षेत्र कुरुक्षेत्र

के. एल. ढल
सहायक पुस्तकालयाध्यक्ष
कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय
कुरुक्षेत्र

R.K. Publications
Ambedkar Chowk, Railway Road
Kurukshetra – 132118

के. एल. ढल

Published by :-

R.K. Publications

Kurukshetra.

Price : *Rs.*125.00

Printed at:

Mahajan Enterprises

5-A, Ram Nagar

Ambala Cantt

Phone No : 25010

अनुक्रम

प्रस्तावना एवं आशीर्वाद

श्रीमद्भगवद्गीता के प्रथम श्लोक में सर्वप्रथम लिखे दो शब्द 'धर्मक्षेत्र कुरुक्षेत्र' स्वयमेव पूर्ण हैं एवं समस्त गीता का दिव्य सन्देश संजोए हुए हैं। वह दिव्य संदेश है 'क्षेत्रे क्षेत्रे धर्म कुरु' अर्थात आप जहाँ भी हों, जिस स्थिति में हों धर्म को अपनाएँ। धर्म का तात्पर्य हिन्दु सिख, ई स्लाम, जैन या पारसी धर्मानुयायी होना नहीं अपितु धर्म कार्य करना है अपना कर्तव्य निभाना है जिस का विस्तृत क्षेत्र है – मानव सेवा।

प्रभु ने हमें मानव जीवन एक अमूल्य रत्न दिया है और उस के बदले में हमारा भी कुछ कर्तव्य है कि हमने प्रभु कार्य, कितना किया। दूसरे शब्दों में हम यूं भी कह सकते हैं कि हरि सभी में आत्मस्वरुप व्याप्त हैं तो हम मानव मानव के लिए क्या धर्म कार्य कर रहे हैं।

'मानव धर्म है – मानव सेवा'। मानव सेवा द्वारा ही समाज सेवा एवं देश सेवा संभव हो सकती है। इस प्रकार मानवसेवा देश सेवा हेतु प्रथम सोपान है। यदि हम मानव सेवा का संकल्प लेते हैं तो अन्य सेवांए अवश्य फलीभूत होंगी। इसी आशय को सार्थक बनाने हेतु मेरे द्वारा मानव धर्म मिशन की स्थापना की गई थी। इस मिशन के मुख्य उद्देश्य हैं – नैतिक मूल्यों का निर्माण, आत्मिक एंव आध्यात्मिक विकास के लिए साहित्य सृजन सत्संग साधना एवं उपयुक्त धार्मिक स्वंयसेवी संस्थाओं द्वारा एवं पूजास्थलों की स्थापना। श्री ढल जी द्वारा विरचित पुस्तक मिशन के इन्हीं सिद्धान्तों को प्रतिपादित करती है।

सदसाहित्य मानव के आध्यात्मिक विकास एवं नैतिक मूल्यों की प्रतिष्ठा हेतु नितान्त आवश्यक है। भगवद् प्रेमी वही होते हैं जो उस की सृष्टि से अपना नाता जोड़ कर एक हो जाते हैं और सब के सुःख दुःख के भागी होते हैं। वे भाग्यशाली दूसरों की सहायता हेतु सदैव तत्पर रहते हैं। इसी उद्देश्य को सार्थक करने हेतु मानव धर्म मिशन के अन्तर्गत स्वंय सेवी संस्था श्री भारतीय सनातन धर्म महावीर दल का शुभारम्भ 1972 में किया गया तब से ही श्री ढल जी दल के सक्रिय कार्यकर्ता एंव महामन्त्री हैं। अस्तु इन के द्वारा धर्मक्षेत्र एवं समीचीन है। धार्मिक परम्पराओं एवं नैतिक मूल्यों की प्रतिष्ठा में इन की गहरी अभिरुचि है और सद्साहित्य का सृजन आज के विकराल समय की मांग है। ऐसे कलिकाल में मानव सेवा हेतु कुछ दिशा बोध संभव हो सकता है तो केवल मात्र सद्साहित्य द्वारा ही हो सकता है। श्री ढल जी का यह प्रयास वास्तव में प्रशंसनीय है। मुझे विश्वास है कि इस प्रकार प्रबुद्ध लेखन कार्य वे भविष्य में भी करते रहेंगे। मेरा आर्शीवाद सदैव उनके साथ है।

मानव भवन
कुरुक्षेत्र

गुलजारी लाल नंदा
संस्थापक मानव धर्म मिशन

दो शब्द

धर्मक्षेत्र कुरुक्षेत्र की पावन पुनीत धरा से मेरा लगभग 44 वर्षों से निकट एवं गहन सम्बन्ध रहा है। प्रस्तुत रचना इसी गहन सम्बन्ध, धार्मिक निष्ठा एवं अटूट विश्वास का फल है। वर्ष 1947 से ही हम पश्चिमी पाकिस्तान से यहाँ आए तो पूज्य गोलोकवासी गुरुवर श्रद्धेय स्वामी दुर्गागिरि जी महाराज एवं पूज्य माता स्वर्गीय श्रीमति सुमित्रादेवी जी का यही स्वप्न था कि इस पावन धरा का यशोगान मुग्ध कण्ठ से किया जाए। उन्होंने संभवतः कुरुक्षेत्र की पावन महिमा को हृदयरत्त किया हुआ था। महाराज श्री उच्चकोटि के संत ही नहीं थे एवं सर्वदा परोपकार के लिए तत्पर रहते थे। उन्हीं के चरणों में बैठकर मुझे भी कई वर्षों तक उनके सत्संग प्रवचन एवं संकीर्तन श्रवण करने का सौभग्य प्राप्त हुआ। श्री हनुमान मंदिर सब्जी मण्डी जिस का विवरण 'कुरुक्षेत्र के प्रसिद्ध मंदिर' शीर्षक के अन्तर्गत किया गया है पूज्य महाराज जी के चरणों के प्रताप का जीता जागता उज्जवल स्वरुप है। यहाँ पहले एक छोटी सी हनुमान जी की प्रतिमा, शिव लिङ्ग तथा पीपल का वृक्ष था, परन्तु आज जनता जनार्दन के सहयोग से श्री हनुमान मंदिर कम्पलैक्स का भव्य निर्माण हो चुका है जिस के अन्तर्गत भगवान शंकर–पार्वती, दुर्गा माँ, श्री हनुमान जी की भव्य प्रतिमायें स्थापित की जा चुकी हैं। सुन्दर संत निवारा, वाचनालय तथा निःशुल्क औपाधालय का निर्माण भी हो चुका है। अतः संतजनों के पावन आर्शीवाद का फल है इस पुस्तक की संरचना जो पाठक के हाथ में है।

प्रस्तुत पुस्तक किसी पूर्णाता का दावा नहीं करती। कारण ज्ञान का सागर असीम एंव अगाध है और त्रुटियों का रहना संभव है। श्री मैथिलीशरण गुप्त के शब्दों में भूल इस भाव में मनुष्य से होती है और अंत में सुधारता है वही। इस सम्बन्ध में अधिकारी एवं प्रतिष्ठित विद्वान जो भी सुझाव प्रदान करेंगे उन का सहर्ष स्वागत है। पुस्तक प्रणयन में अनेक विद्वानों की कृतियों का उन के लेखों एवं सुझावों को समाहित किया गया है उन सब के प्रति लेखक हृदय से आभारी है। पुस्तक की प्रस्तावना के रुप में परम श्रद्धेय राजार्पि श्री गुलजारी लाल नंदा संस्थापक मानव धर्म मिशन भूत पूर्व अध्यक्ष कुरुक्षेत्र विकास मण्डल को वस्तुतः अपना आर्शीवाद प्रदान किया है जिनका मैं सदैव आभारी रहूंगा।

कुरुक्षेत्र
गीता जयन्ति (16 XII. 1991)

के.एल. ढल

धर्मक्षेत्र कुरुक्षेत्र

भारत में ही नहीं विश्व भर में कुरुक्षेत्र का महत्वपूर्ण स्थान है। कुरुक्षेत्र प्राचीन काल से ही भारतीय संस्कृति एवं आध्यात्मिक चिन्तन का उद्‌गम स्त्रोत रहा है। कुरुक्षेत्र की लोकप्रियता एवं प्रसिद्धि पर दृष्टिपात करें तो इस की पावन गरिमा की श्रृंखला इस प्रकार बनती है –

सर्वप्रथम स्वंयभू प्रजापति ब्रहमा को ज्ञानस्वरुप वेद भगवान का दर्शन इसी स्थान पर हुआ। इस प्रकार वैदिक संस्कृति का प्रादुर्भाव इसी पावन धरा पर हुआ। कुरुक्षेत्र भूमि का कण कण स्वयं में एक तीर्थ रुप है। इसके समीपवर्ती भाग में प्राचीन सभ्यता एवं संस्कृति जन्मी फूली एवं विश्व भर में ख्याति को प्राप्त हुई। अस्तु विश्व रचना का आधः स्थल कुरुक्षेत्र को ही माना जाता है।

तैतरीय ब्राह्मण के अनुसार " दैवा वै सत्रामासत् तेषां कुरुक्षेत्र वेदि आसीत " अर्थात देवताओं ने पुण्यमयी सरस्वती के पावन पट पर यज्ञ किये और उन की वेदि कुरुक्षेत्र में ही थी। शतपथ ब्राह्मण ग्रन्थ में भी ऐसा उल्लेख मिलता है कि देवताओं ने यहीं पर सैंकड़ों यज्ञ किए –

" अविभुक्तंवै कुरुक्षेत्रं देवानां देवयजनं "

धर्मक्षेत्र कुरुक्षेत्र की पावन पुनीत धरा पर ही योगेश्वर भगवान श्री कृष्ण ने मानवता को श्रीमद्‌भगवद्‌गीता का दिव्य सन्देश प्रदत्त किया। यह दिव्य सन्देश समस्त भारतीय चिन्तन एवं दर्शन का सार है। इस अलौकिक ज्ञान ने मानव पर जो हृदयस्पर्शी छाप छोड़ी है उसे विश्वभर में असंख्य प्रशंसक दर्शन का अनुपम एवं सर्वश्रेष्ठ ग्रंथ मानते हैं।

शास्त्रों के अनुसार कुरुक्षेत्र द्वादश योजन अठतालीस कोस अथवा लगभग एक सौ साठ किलोमीटर वर्ग क्षेत्र में फैला महाजनपद प्रदेश है। (केवल मात्र थानेसर तहसील अथवा कुरुक्षेत्र ज़िला नहीं) एवं यह प्रदेश अत्यन्त पवित्र माना जाता है।

महाभारत वन पर्व के अनुसार कुरुक्षेत्र सरस्वती नदी के दक्षिण में तथा दृषद्‌वती नदी के उत्तर में स्थित है। इस का आदि नाम ब्रहमावर्त अथवा ब्रह्मवेदि था, आगे चलकर नागहृद, रामहृद, समन्तपंचक और पुनः राजा कुरु के भूमि कर्षण के पश्चात कुरुक्षेत्र सर्वप्रतिष्ठित हुआ।

आद्यं ब्रह्मसरं पुण्यं ततो नागहृदं स्मृतम्।
कुरुणां ऋषिणा कृष्टं कुरुक्षेत्र ततः स्मृतम् ।।

कुरुक्षेत्र की रक्षा चारों दिशाओं में चार यक्ष करते हैं|–
तरन्तुक (वर्तमान रतगल ग्राम में स्थित है)
अरन्तुक (बहिर ग्राम में स्थित है)
रामहृद (वर्तमान राम राय में स्थित है)
मचकुक (वर्तमान सींख गांव में स्थित है)

विभिन्न पुराणों में कुरुक्षेत्र की महिमा का यशोगान कुछ इस प्रकार किया गया है:

जो लोग इस क्षेत्र की रक्षा करते हैं, यहां के सरोवरों में स्नान करते हैं अथवा क्षण भर के लिए भी यहां रहते हैं अथवा इस क्षेत्र में शरीर छोड़ते हैं वे मृत्युपरान्त सीधे स्वर्ग को जाते हैं। इस पावन भूमि का नाम लेना भी एक महान पुण्य कार्य है। नारद पुराण में तो यहां तक कहा गया कि कुरुक्षेत्र के समान न तो कोई (स्थान) हुआ न होगा। यहां सेवन करने वाला मनुष्य पुनः मृत्युलोक में नहीं आता।

कुरुक्षेत्र सम तीर्थ न भूतं न भविष्यति।
तत्र द्वादश यात्रास्तु कृत्वा भूयो न जन्मयाक।।

वामनपुराणानुसार कुरुक्षेत्र में वायु वेग से उड़ी हुई धूलि भी यदि शरीर से स्पर्श कर जाए तो बुरे कर्मों के पाप स्वमेव नष्ट होकर मनुष्य को मोक्ष की प्राप्ति हो जाती है।

पांसवोऽपि कुरुक्षेत्रे वायुनासमुदीरताः
महा दुष्कृत कर्माणः प्राप्यन्ति परं पदम्।
वायु पु० 45/33/

अपवित्र अथवा पवित्र अथवा सशर्वास्या प्राप्त जो भी व्यक्ति कुरुक्षेत्र का स्मरण करे तो वह बाहर तथा भीतर अर्थात मन एवं शरीर से पवित्र हो जाता है।

अपवित्र पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा
यः स्मरेत् कुरुक्षेत्रं स बाह्याभ्यन्तरः शुचि ।
वामन 12/61

दूर रहते हुए भी जो मनुष्य 'मैं कुरुक्षेत्र जाऊंगा', 'वहां निवास करुंगा', इस प्रकार सदा कहता है, वह सभी पापों से छूट जाता है।

दूरस्थोऽपि कुरुक्षेत्रे गच्छामि च वसाभ्यहम्।
एवः यः सततं ब्रुयात् सोऽपि पापै प्रमुच्यते।।
वाम० सरो० 12/10

धर्मक्षेत्र कुरुक्षेत्र

कुरुक्षेत्रे गमिष्यामि कुरुक्षेत्रे वसाम्यहम्।
सः एव सततं ब्रुयात सर्व पापैः प्रमुच्यते।।
वाम० 12/7

कुरुक्षेत्र जाऊंगा और मैं कुरुक्षेत्र में निवास करुगा, इस प्रकार का वचन कहने वाला मनुष्य सब पापों से छूट जाता है।

ब्रहज्ञानं गया श्राद्धं गो गृहे मरणं तथा
वासः पुसां कुरुक्षेत्रे मुक्ति रुक्ता चतुर्विद्याः
वामन 12/8

मनुष्य के लिए ब्रह्मज्ञान, गया में श्राद्ध, गौ की रक्षा हेतु मृत्यु एवं कुरुक्षेत्र में निवास, चार प्रकार की मुक्ति बतलाई गई है। महाभारत वनपर्व एवं पद्मपुराण में उल्लेख आया है कि पृथ्वी पर नेमिषारण्य तीर्थ, अन्तरिक्ष में पुष्कर तीर्थ श्रेष्ठ है परन्तु तीनों लोकों में कुरुक्षेत्र सर्वश्रेष्ठ तीर्थ है

पृथ्व्यां नैमिषं तीर्थ अन्तरिक्षे च पुष्करम्।
त्रयाणामपि लोकानां कुरुक्षेत्रं विशिष्यते।।
वन 83/202/ मतस्य 108/3 पद्म 27/87

मत्स्य पुराण के अनुसार कुरुक्षेत्र सर्व श्रेष्ठ तीर्थ है। एवं महापुण्यशाली कुरुक्षेत्र में प्रयागादि तीर्थ समाहित है–

संगमे यत्र तिष्ठति गंगायां पितरः सदा।
कुरुक्षेत्र महापुण्यं सर्व तीर्थ समन्वितम्।।
मत्स्य 22/8

कुरुक्षेत्र पुण्य भूमि पर काम्यक, अदिति, व्यास, फल्कि, सूर्य, मधु और सीवन (शिव) इन नामों से सात वन हैं। सरस्वती दृषद्वती, वैतरणी, गंगा, मंदाकिनी, मधुस्त्रवा, कौशिकी एवं हिरण्यवती सात ही पवित्र नदियां हैं।

थानेसर, जींद, सफीदों, कैथल, कलायत, पुण्डरी, पेहोवा सात प्रसिद्ध नगर हैं। इसमें चार प्रसिद्ध कूप हैं|– देवीकूप (शक्तिकूप), चन्द्रकूप, विष्णुकूप तथा रुद्रकूप।

आधुनिक नगर थानेसर में चार प्रसिद्ध धाम हैं |– श्री गीताधाम, श्रीकृष्णधाम, श्रीवेदधाम एवं मानवधाम। सोमावती अमावस्या एवं सूर्यग्रहण के अवसर पर भारी पर्व रुप में यहां विशाल मेला लगता है जिसमें श्रद्धालु स्नान ध्यान द्वारा अपने को कृतकृत्य करते हैं। सूर्यग्रहण के अवसर पर सन्निहित तीर्थ पर स्नान का महत्व महाभारत वन पर्व में इस प्रकार मिलता है:–

सन्निहित्या मुप स्पृश्य राहु ग्रस्ते दिवाकरे।
अश्वमेधं शतं तेन इष्टं भवति शाश्वतम्।।
वनपर्व० 81/67

सूर्यग्रहण के अवसर पर इस तीर्थ का स्पर्शमात्र करने से सौ अश्वमेध यज्ञ का फल प्राप्त होता है।

कुरुक्षेत्र के पांच प्रसिद्ध सर हैं – ब्रह्मसर, सन्निहित, ज्योति, स्थाणु तथा कालेसर।

कुरुक्षेत्र के पवित्र शिव तीर्थ हैं – स्थाणेश्वर, कालेश्वर, दुःखभंजनेश्वर, सर्वेश्वर एवं संगमेश्वर।

कुरुक्षेत्र के दर्शनीय स्थल हैं – बिरला मंदिर, बाणगंगा, (भीष्मकुण्ड), मंदिर श्रीलक्ष्मी–नारायण, मंदिर कौरव पांडव, गीताभवन, श्री हनुमान मंदिर इत्यादि।

यात्रियों के निवास हेतु यहां धर्मशालाएं हैं जिनमें प्रमुख–श्रीसंतराम अरोड़ा धर्मशाला (श्रीकृष्णधाम), सैनीसमाज, जाट धर्मशाला, काली कमली, पालगडरिया एवं श्री ब्राह्मण धर्मशाला, ताराचन्द धर्मशाला तथा अरोड़ा धर्मशाला इत्यादि।

कुरुक्षेत्र में एवं समीपवर्ती स्थानों में विभिन्न पुराणों में वर्णित तीन सौ पैंसठ तीर्थ हैं जिनकी सूचि परिशिष्ट में दी गई है। प्रसिद्ध स्थानों का विवेचन यथास्थान किया गया है।

अस्तु कुरुक्षेत्र वास्तव में भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता का उद्‌गम स्त्रोत है। इस पावन पुनीत एवं ऐतिहासिक स्थल को जीवित एवं पुर्नजागरण करने का श्रेय जाता है, कुरुक्षेत्र विकास मंडल के वर्तमान अध्यक्ष, माननीय श्री गुलज़ारीलाल जी नंदा को जिन के तत्वाधान में सरोवरों की नवीन छवि एवं मन्दिरों की प्रतिष्ठा स्पष्टतया उभर कर सामने आई है। इस भूमि के पग पग पर तीर्थ हैं। कण कण में गीता का उदघोष है। आवश्यकता है तो बस श्रद्धा एवं विश्वास की, इस स्थल के पूर्ण खोज की ताकि हम इस विश्व प्रसिद्ध धर्मक्षेत्र कुरुक्षेत्र की नैसर्गिक प्रतिभा एवं अलौकिक सम्पदा को मानव मात्र को समर्पित कर सकें।

यहां किया हुआ पुण्य कार्य तेरह दिन तक तेरह गुणा बढ़ता है तभी तो भगवान ने गीता के प्रथम अध्याय में ही " धर्मक्षेत्र कुरुक्षेत्र" कह कर सम्बोधित करवाया है।

कुरुक्षेत्र को पुण्य एवं पावन धरा, मन्दिरों एवं तीर्थों की धरती कहा जाता है। यह अठतालीस कोस की धरती लगभग तीन सौ पैंसठ तीर्थों से सुशोभित है। यहीं वह धर्मक्षेत्र है जहां आ[illegible] से

पांच हज़ार वर्ष पूर्व योगेश्वर भगवान कृष्ण ने सर्व वेदों एवं उपनिपदों का सार श्रीमद्भगवद्गीता का उपदेश समस्त मानव जाति के कल्याण के लिए प्रक्षत किया। गीता का अमर सन्देश "कर्मयोग" सारे विश्व के लिए प्रेरणा का सन्देश है। इसलिए इसे लगभग विश्व की सभी भाषाओं में अनुदित किया जा चुका है। ऐसी पावन पुनीत धरा जो आज भी मनुष्य को सुकर्म एवं सुधर्म की प्रेरणा देती है, वास्तव में अर्चनी य है, वन्दनीय है। दिव्य ज्ञान की प्रदायिनी यह धरती मानव मूल्यों की पोपक है, ज्ञान विज्ञान की उद्घोपक है, शस्यश्यामला एवं रमणीय है।

धर्म की परिभापा का विवेचन करते हुए महर्पि व्यास लिखते हैं:–

अष्टादश पुराणेषु व्यासस्य वचनं ध्रुवम्।
परोपकार पुण्याय पापाय परपीड़नम्।।

परोपकार के समान कोई धर्म अथवा पुण्य नहीं एवं दूसरे को कष्ट देने के समान कोई पाप नहीं। श्रीरामचरित मानस के प्रणेता कविवर तुलसी ने यही भाव इस प्रकार दोहराया है –

परहित सरिस धर्म नहिं भाई।
पर पीड़ा सम नहिं अधभाई।।

जीवन के इस कर्मक्षेत्र में धर्म का पालन करने से ही पुण्य प्राप्त होता है। अतः हम मन, वाणी एवं कर्म से किसी प्रकार भी किसी जीव को कष्ट न दें। हृदय क्षेत्र में प्रेमतत्व को बसाकर ही हम ब्रहमक्षेत्र में जा सकते हैं। मन में सद्भाव अपनावें। कुभावों का परित्याग करें। जगत में जैसा भाव हम जीवन के प्रति रखेंगे वैसा ही प्रतिभाव हमें प्राप्त होगा। कुभाव मन को बिगाड़ता है, सद्भाव उसे शुद्ध बनाता है। अतः मानव में मागध को जानकर सदा ही सेवाभाव से मन को प्रसन्न रखना चाहिए। अतः जीवन में पुण्यकार्यों का संचय ही धर्म है सद्भाव, कर्तव्यपरायणता एवं मानव मात्र से प्रेम इत्यादि सद्भाव जब हमारे हृदय क्षेत्र में बस जाएंगे तो ब्रह्मक्षेत्र जाने में अर्थात भगवद्प्राप्ति में तनिक भी बाधा न होगी।

एक कवि ने इसी भाव को बड़े ही सुन्दर ढंग से व्यक्त किया है ––

जीवन के इस कुरुक्षेत्र में
याद दिलाता है हम को,
धर्म से ही बढ़ना है आगे हम को,
धर्म से ही निभाना है प्रेम हम को।
हृदय क्षेत्र में बसाकर सब को,
ब्रह्मक्षेत्र में पहुंचना है हम को।

धर्मक्षेत्र कुरुक्षेत्र

कुरुक्षेत्र को धर्मक्षेत्र क्यूं कहा जाता है इसका विवरण हमें श्रीमद्भगवद्गीता, महाभारत एवं विभिन्न पुराणों में इस प्रकार मिलता है --

धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः ।
मामकाः पाण्डवाश्चैव किमकुर्वत संजय।।
गीता 1/1

कुरुक्षेत्र गमिष्यामि कुरुक्षेत्र वसाम्यहम्।
इत्येव वाचसुत्सृज्य सर्व पाप प्रभुच्यत ।।
महाभारत वनपर्व 83/21

" मैं कुरुक्षेत्र जाऊंगा और मैं कुरुक्षेत्र में निवास करुगा। " इस प्रकार का वचन कहने से ही मनुष्य सभी पापों से मुक्त हो जाता है।

देवता ऋष्य| सिद्धा | सेवन्ते कुरुजांगलम्।
तस्य सं सेवनानित्यं ब्रह्म चात्मनि पश्यति।।
वामन सरो ० 2/13

देवता श्रपि एवं सिद्ध पुरुष सदा कुरुक्षेत्र का सेवन करते हैं। वहां नित्य रहने से मनुष्य अपने भीतर ब्रह्म का दर्शन करता है।

ग्रह नक्षत्र ताराणां कालेन पतनाद्भयम्।
कुरुक्षेत्रे मृताणां च पतन नैव विद्यते।।

समय आने पर ग्रह नक्षत्र तारागण आदि को भी पतन का भय होता है किन्तु कुरुक्षेत्र में मरने वालों का कभी पतन नहीं होता।

अस्तु इस महान पवित्र स्थल की महिमा इतनी अधिक है कि जिस में उड़ी हुई धूलि का कण अति निकृष्ट व्यक्ति को पवित्र बनाने की क्षमता रखता है तो धार्मिक एवं सदाचारी बनकर रहने से तो निश्चय ही परमतत्व की प्राप्ति हो सकती है। कुरुक्षेत्र के नामोच्चरण से ही कुल पवित्र हो जाता है धर्मनिष्ट बनकर यहां निवास करने से हमें कितना पुण्य होगा इसका अनुमान लगाना कठिन है।

****

नामकरण

कुरुक्षेत्र से शाब्दिक अर्थ है कुरु का क्षेत्र अर्थात कुरु के नाम से ही इस क्षेत्र का नाम कुरुक्षेत्र पड़ा । कुरु भरतवंशी महाराज संवरण के पुत्र थे। सूर्यकन्या तपती उनकी माता थी। कुरु की शुभांगी तथा वाहिनी नाम की दो स्त्रियां थी। वाहिनी के पांच पुत्र थे जिसमें कनिष्ट का नाम जनमेजय था जिसके वंशज धृतराष्ट्र एवं पाण्डु हुए। कुरु के अन्य पुत्रों के नाम विदूरथ, अश्वरत, अभिष्यत्, चैत्ररथ तथा मुनि और जनमेजय हैं। इस प्रकार कुरु कौरवों एवं पाण्डवों के पूर्वज थे इनका वंश भी इन्हीं के नामानुसार "कुरु" नाम से प्रसिद्ध हुआ। राज्य भार ग्रहण करने के बाद इन्होंने पृथ्वी पर भ्रमण करना प्रारंभ किया। जब वे समन्तपंचक पहुंचे तो कुरु ने उस क्षेत्र को महाफलदाया बनाने का निश्चय करते हुए सोने के हल से यहां कृषिकार्य प्रारम्भ किया और अनेक वर्षों तक इस क्षेत्र को बार बार कर्षित किया। इस प्रकार उन्हें कृषि कार्य में प्रवृत्त देखकर इन्द्र ने उनसे जाकर कठोर परिश्रम का कारण पूछा। कुरु ने कहा, " जो भी व्यक्ति यहां मरेगा, वह पुण्य लोक मे जाएगा।" इन्द्र उनका परिहास करते हुए चले गये। इन्द्रलोक जाकर उन्होंने इस बात को सभी देवताओं को भी बतलाया। देवताओं ने इन्द्र से कहा – यदि संभव हो तो कुरु को अपने अनुकूल बना लो, अन्यथा यदि लोग वहां यज्ञ करते हुए हमारा भाग दिये बिना ही स्वर्गलोक चले गये तो हमारा भाग नष्ट हो जायेगा। तब इन्द्र ने पुन| कुरु के पास जाकर कहा, " नरश्रेष्ठ तुम व्यर्थ ही इस प्रकार का कष्ट कर रहे हो। यदि कोई भी पशु, पक्षी या मनुष्य निराहार रह कर अथवा युद्ध करके यहां मारा जायेगा तो स्वर्ग का भागी होगा।" कुरु ने यह बात मान ली

यावेदतन्मया कृष्टं धर्मक्षेत्र तदस्तु च
वामनपुराण । 23/33/।

आदि काल से " कुरुक्षेत्र" नाम हमें विभिन्न वेदों ब्राह्मणग्रन्थों एवं पुराणों में मिलता है। पुराणों के अनुसार यह क्षेत्र ब्रह्मवेदि के नाम से जाना जाता था। पुनः इस क्षेत्र का नाम समन्तपंचक हुआ और अन्त में कुरुक्षेत्र। महाभारत से पूर्व इस क्षेत्र का नाम कुरुक्षेत्र के साथ–साथ प्रजापति की वेदी पंचविंश ब्राह्मण में भी प्राप्त होता है।

वामन पुराण में ब्रह्मा की पांच वेदियों को ब्रह्मवेदी कहा गया है। पांचों वेदियों में प्रयाग मध्यवेदि है। अनन्त फल दायिनी बिरजा दक्षिण वेदी है। तीन कुण्डों में सुशोभित पुष्कर पश्चिम वेदी है। अव्यय समन्तपंचक उत्तरवेदी है तथा पूर्ववेदी "गया" है।

प्रयागो मध्यमा वेदि गया शिरः ।
विरजा दक्षिणा वेदिरनन्त फल दायिनी।।

प्रतीची पुष्करावेदिस्त्रिभिः कुण्डैरंलकृता।
समन्तपंचका चौक्ता वेदि रे तीत्तराव्यया।।
वामनपुराण। 23/20

महाभारत एवं पुराणों में समन्तपंचक और उतरवेदी को एक ही क्षेत्र कहा गया है।

समन्तपंचके युद्धं कुरुपाण्डव सेनयोः
महा० आदिपर्व 12/13

महाकवि भास ने भी अपने काव्य उरुभंग में महाभारत युद्ध के उपरान्त समन्तपंचक में सर्वत्र राजाओं के मृत शरीर का वर्णन किया है

राजां शरीर समाकीर्णे समन्तपंचके ।
उरुभंग। 7

इस प्रकार कुरु के कर्षण सम्बन्धी कार्य से पूर्व कुरुक्षेत्र का नाम समन्तपंचक, ब्रह्मवेदि इत्यादि नामों से मिलता है, किन्तु कुरु की तपस्या एवं प्रताप के कारण इस का नाम कुरुक्षेत्र कहलाया जो कि आज भी अपरिवर्तित है। इसमें सन्देह नहीं कि अनेकानेक राजाओं ने इस प्रदेश पर शासन किया किन्तु कुरुक्षेत्र का नाम आज भी शाश्वत है। जीवनमूल्यों की महान परम्परा, अर्थात् पितृ सेवा, श्राद्ध, तर्पण, नारायण बलि इत्यादि जो धार्मिक अनुष्ठान कुरुकाल से निरन्तर यहां प्रवाहित हो रही है उसमें तनिक भी अन्तर दिखाई नहीं पड़ता। असत्य पर सत्य की विजय अर्थात कौरवों पर पाण्डवों की विजय, कर्मयोग का महान सन्देश जो सार्वभौम, एवं सार्वकालिक है आज भी इसी क्षेत्र के साथ जुड़ा हुआ है। धर्म को कर्म के साथ जोड़कर भगवान ने धर्म को अत्यन्त महान बना दिया है। गीता के अनुसार धर्म धारण करने की वस्तु है। कोई भी कार्य जो परहित के लिए किया गया है धर्म है। धर्म कोई हिन्दु, मुसलमान या सिख के अपनाने का नाम नहीं अपितु समस्त मानव जाति को एक सूत्र में बांधने का परिचायक है। धर्म वह इन्सान बनाता है जो मानवता के गुण रखता हो। जो केवल अपने लिए न जिए वरन् देश धर्म एवं मानव सेवा के लिए निरन्तर प्रयत्नशील हो।

इस प्रकार कुरुक्षेत्र धर्मभूमि है, कर्मभूमि है। एक अत्यन्त पवित्र स्थल है। पितामह ब्रह्मा की तपोभूमि होने के कारण सृष्टि की रचना का सौभाग्य भी इसे प्राप्त हुआ । वैदिक ऋषियों ने अपनी महान यज्ञ साधना इसी क्षेत्र में सरस्वती के पावन तट पर बैठ कर की। अपनी तप साधना द्वारा इसे तपोभूमि बनाया। विश्वामित्र ऋषि ने तो क्षत्रिय धर्म त्याग कर ब्राह्मण धर्म को अपनाना स्वीकार कर लिया। महाभारत, विभिन्न पुराण एवं तत्कालीन संस्कृत साहित्य कुरुक्षेत्र के धार्मिक सन्दर्भों से ओत प्रोत हैं। शताब्दियों से भारतीय चिन्तन धारा को अपूर्व

धर्मक्षेत्र कुरुक्षेत्र

मोड़ देने वाली इस कुरुक्षेत्र भूमि को जहां कुरु राजा ने कर्षण किया, ऋषि मुनियों ने अपने योग बल से इसे आप्लिवित किया। आयतन सस्यस्यामला रुपी यह भूमि समस्त भारत के लिए मां अन्नपूर्णा अथवा धान्य साम्राज्ञी कही जाए तो अतिश्योक्ति न होगी।

जबालोपनिपद् के अनुसार यह ब्रह्मसदन देवभूमि कुरुक्षेत्र सब प्राणियों के लिए मुक्तिदायिनी है। इसलिए इसे अविमुक्त क्षेत्र भी कहते हैं। वामनपुराण के अनुसार अपवित्र या पवित्र अथवा सशर्वास्था प्राप्त व्यक्ति भी यदि कुरुक्षेत्र का स्मरण करे तो वह बाहर तथा भीतर (शरीर एवं अन्तःकरण) से पवित्र हो जाता है।

अपवित्र पवित्रो वा सर्वास्थां गतोऽपिवा।
यः स्मरेत कुरुक्षेत्रं स वाह्याभ्यन्तरः शुचि ।।

****

तीर्थ यात्रा का महत्व

तन एवं मन की शुद्धि हेतु ही श्रद्धालु जन तीर्थ यात्रा करते हैं। आत्मोद्वार की भावना ही उन का मुख्य उद्धेश्य होता है। तीर्थ पर हमारे जाने का एकमात्र उद्धेश्य संसार के मोहमाया से दूर रहकर आत्म संयम एवं सत्संग द्वारा अपने जीवन का उद्धार करना है। जगत में ब्रह्म ही सत्य है बाकी सब नश्वर है। अतः हम इस नश्वरता को छोड़कर, संसार असार के प्रति मोहमाया का त्याग कर, भगवद् भक्ति में मन को लगावें। महापुरुषों का सत्संग करें तभी इस जीवन को कल्याणमय बनाया जा सकता है। तीर्थ तीन प्रकार के माने गये हें –

जंगमतीर्थ, स्थावरतीर्थ एवं मानसतीर्थ।

स्वधर्म निष्ट आदर्श संत महात्मा एवं ब्राह्मण जंगम तीर्थ हैं जो कि अपने सत्संग से दूसरे के पाप को हर लेते हैं। इनके दर्शनमात्र से ही सम्पूर्ण कामनायें सफल हो जाती हैं।

मानसतीर्थ के अन्तर्गत सत्य, क्षमा, दया, इन्द्रियनिग्रह, ऋजुता, दान, मनोविग्रह, सन्तोष, ब्रह्मचर्य, विवेक, धृति, तपस्या आदि श्रेष्ठ गुण आते हैं जिन को अपनाने एवं धारण करने से परमगति प्राप्त होती है। वामनपुराण में कहा भी है कि आत्मा नदी है, सयम पुण्यतीर्थ है, उन में शील समाधि सत्य रुपी जल है। इस जल में स्नान करने वाले संत महात्मा प्रकाश में चंद्रमा के समान विराजमान होते हैं।

आत्मानदी संयम पुण्यतीर्था, सत्योदकम् शील समाधि युक्ता।
तत्र स्नातः प्रयत्रः संयमात्मा विराजवेदिति सेमोययैव ।।
वामन । 43/25

स्थावर तीर्थ के अन्तर्गत पृथ्वी के यह असंख्य पवित्र स्थान, सागर, नदियां, सरोवर, कूप एवं जलाशय हैं जो किसी पौराणिक आधार पर भगवान के लीला क्षेत्र रहे हैं। ऐसी पावन पवित्र भारत भूमि में तीर्थराज प्रयागराज, पुष्कर, नेमीषारण्य, कुरुक्षेत्र, काशी, उज्जैन, मथुरा, हरिद्वार एवं चारों धाम स्थावर तीर्थ के अन्तर्गत आते हैं। इन सभी तीर्थों में कुरुक्षेत्र अति पवित्र एवं पुण्य है

कुरुक्षेत्र महापुण्यं सर्व तीर्था निषेवितम् ।

कूर्मपुराण में तीर्थ की परिभाषा इस प्रकार की गई है –
न तीर्थतां जलस्याहु मरुसथलस्य वनस्य वा अध्यासितं महदिभ्यत तीर्थ विदु बुधा ।

अर्थात साधारण जल स्थल वन को ही तीर्थ नहीं कहते वरन् वह स्थान तीर्थ है जहां सेवा, तप इत्यादि से महाऋषियों अथवा देवों ने सिद्धि प्राप्त की है।

तीर्थ क्यों जाना चहिए।

पद्मपुराण के अनुसार मानव जीवन का प्रमुख उद्धेश्य एवं परम लाभ है भगवद् प्राप्ति। मनुष्य के शरीर में चाहे झुरियां पड़ गई हों, सिर के बाल पक गये हों, अथवा वह अभी नवयुवक हो, मृत्यु से कोई टाल नहीं सकता। अतः ऐसा जानकर परमपिता परमात्मा की शरण में आना चाहिए। भगवान के कीर्तन, वन्दन, श्रवण में मन लगाना चाहिए। सांसारिक वस्तुयें क्षणभगुर हैं। अतः दु:खदायी हैं। परन्तु भगवान जरा जन्म, मृत्यु से परे हैं, वे नित्य, सत्य एवं सनातन हैं, सच्चिदानन्द हैं। उन के चिन्तन में ही मन को लगाना चाहिए। कवि ने कहा भी है:-

क्षणभुंगर जीवन की कालिका कल प्रात: को जाने खिली न खिली,
मलयागिरि की शुचि शीतल मंद सुगंध समीर चली न चली,
कलिकाल कुठार लिए फिरता तन नम्र है चोट झिली न झिली,
कहले हरिनाम अरि रसना,
जाने अंत समय में हिली न हिली।

उस भगवान का , उनके स्वरुप का ज्ञान (तत्व गुण लीला) होता है साधुसंग से। जिनकी कृपा से मनुष्य दु|ख से दूर हो जाते हैं, उन के दर्शन मात्र से पाप छूट जाते हैं। ऐसे जीवनमुक्त महापुरुषों का सत्संग तीर्थ जाने पर ही संभव हो सकता है। अतः भगवद् प्राप्ति के लिए जहां महापुरुषों का संग आवश्यक है वहां उनके दर्शन हेतु तीर्थ पर जाना अति आवश्यक है। काम, क्रोध, मोह, लोभ आदि विकारों को छोड़ कर जो मनुष्य तीर्थ में प्रवेश करता है उसे तीर्थयात्रा से कोई भी वस्तु अलभ्य नहीं रहती।

****

धर्मशास्त्रों में कुरुक्षेत्र

कुरुक्षेत्र अत्यन्त पुनीत स्थल है। इसका इतिहास पुराणों में समा सा गया है। ऋगवेद में त्रस्दस्यु के पुत्र कुरुश्रवण का उल्लेख मिलता है जिसका अर्थ है कुरु की भूमि में सुना गया। अथर्ववेद में भी एक कौरण्य पति की चर्चा की गई है। ब्राह्मण ग्रन्थों में भी कुरुक्षेत्र पवित्र तीर्थस्थल के रुप में उल्लिखित है। शतपथब्राह्मण में उल्लेख है कि देवों ने कुरुक्षेत्र में एक यज्ञ किया था जिसमें उन्होंने दोनों अश्विनों को पहले यज्ञ भाग से वंचित कर दिया था। मैत्रायणी संहिता में "देवा वै सत्रमासत" तेषां कुरुक्षेत्र वेदिरासीत् का कथन है कि देवों ने कुरुक्षेत्र में सत्र का सम्पदान किया। इस प्रकार ब्राह्मणग्रन्थों के काल से ही कुरुक्षेत्र एक धार्मिक भूमि, यज्ञवेदि एवं वैदिक संस्कृति का केन्द्र माना जाता है। देवों को देवकीर्ति इसी स्थान से प्राप्त हुई जिससे उन्होंने धर्म, यज्ञ एवं तप का पालन किया।

निरुक्त में व्याख्या के अन्तर्गत देवापि एवं शान्तनु ऐतिहासिक व्यक्ति थे और कुरु के राजा ऋष्टिषेण के पुत्र थे।
महाभारत में कुरुक्षेत्र का अत्यधिक उल्लेख मिलता है। इसमें बताया गया है कि सरस्वती नदी के दक्षिण में एवं दृषद्वती के उत्तर की भूमि कुरुक्षेत्र में थी और जो लोग यहां निवास करते थे वे स्वर्ग में रहते थे।

> दक्षिणेन सरस्वत्या दृषद्वत्युत्तरेण चाये।
> वसन्ति कुरुक्षेत्रे ते वसन्ति त्रिविष्टपे।।
> महा० वनपर्व। 83/3/204

वामनपुराण के अनुसार भी कुरुक्षेत्र को ब्रह्मावर्त कहा गया है। सरस्वती एवं दृषद्वती के बीच का क्षेत्र कुरुजांगल था। मनु ने सरस्वती एवं दृषद्वती नामक पवित्र नदियों के मध्य में बनाया है। आर्यावर्त में ब्रह्मावर्त सर्वोत्तम देश था और कुरुक्षेत्र से ही बहुत अंशों में इस की समानता थी। सरस्वती अत्यन्त प्राचीन पुनीत नदी थी जो कि कुरुक्षेत्र से होकर बहती थी।

प्रारम्भ में कुरुक्षेत्र ब्रह्मा की यज्ञवेदी कहा जाता है। आगे चलकर इसे समन्तपंचक कहा गया जबकि परशुराम ने अपने पिता की हत्या के प्रतिशोध में क्षत्रियों के रक्त से पांच कुण्ड बना डाले जो पितरों के आशीर्वाद से बाद में पांच पवित्र जलाशयों में परिवर्तित हो गये। बाद में यही भूमि कुरु राजा के कर्षण से कुरुक्षेत्र कहलाई। कुरु ने इन्द्र से वरमांग कर इस भूमि को धर्मक्षेत्र में परिवर्तित किया।

धर्मक्षेत्र कुरुक्षेत्र

यावदेन्तन्मया कृष्टं धर्मक्षेत्रं तदस्तुव
स्नातानां च मृतानां च महापुण्यफलंत्विह।
वाम० 22/33/34

श्रीमद्भगवद्गीता के प्रथम श्लोक में "धर्मक्षेत्र कुरुक्षेत्रे" कहा जाना इसी तथ्य का द्योतक है कि यह भूमि अत्यनत पावन है। वायु एवं कूर्भपुराण में आया है कि श्राद्ध के लिए कुरुजांगल एक योग्य प्रदेश है । महाभारत वनपर्व एवं वामनपुराण में कुरुक्षेत्र का विस्तार पांच योजन में कहा गया है

यथा तरन्तुक एवं कारन्तुक तथा मचकुक

(यज्ञ प्रतिभा) एवं रामहृदों के बीच की भूमि ही कुरुक्षेत्र या समन्तपंचक एवं उतर ब्रह्मवेदि है । इस प्रकार कुरुक्षेत्र कई नामों से अभिव्यक्त रहा है।

कनिंघम के शब्दों में

प्राचीन काल में वैदिक लोगों की संस्कृति एवं कार्यकलापों का केन्द्र कुरुक्षेत्र था।

****

श्रीमद्भगवद्गीता एवं कुरुक्षेत्र

श्रीमद्भगवद्गीता का महात्म्य वाणी द्वारा वर्णन करना असंभव है क्यूंकि यह एक परम रहस्यमय ग्रंथ है। इसमें सम्पूर्ण वेदों एवं उपनिपदों का सार संग्रहित है। संस्कृत भापा में होते हुए भी थोड़ा अभ्यास करने से मनुष्य इसे सहज में ही समझ सकता है, परन्तु इस का आशय इतना गम्भीर है कि आजीवन अभ्यास करने पर भी उस का अन्त नहीं होता। वेदव्यास जी ने महाभारत में गीता का वर्णन करते हुए कहा है –

गीता सुगीता कर्तव्या किमन्यैः शास्त्रविस्तरैः ।
या स्वयं पद्मनाभस्य मुखपद्माद्विनिः सृता ।।

गीता सुगीता करने योग्य है अर्थात श्रीगीता जी को भली प्रकार पढ़ कर अर्थ और भावसहित अन्तः करण में धारण कर लेना मुख्य कर्तव्य है, जो कि स्वयं भी पद्मनाभ| भगवान विष्णु के मुखारविन्द से प्रस्फुटित हुई है, फिर अन्य शास्त्रों के विस्तार से क्या प्रयोजन है ?

गीता को गंगा की तरह पवित्र कहा जाता है। गंगा में जो स्नान करता है उसका कोई भी धर्म हो, गंगा उसे स्वच्छ एवं निर्मल बना देती है। गीता मानव मात्र की दर्शक है। मानव मात्र का कल्याण करने वाली है। कर्म, भक्ति एवं ज्ञान की त्रिवेणी है। कतिपय विद्धानों ने गीताविपयक जो वचन कहे हैं, दृप्टव्य हैं:–

गीता हमारी सदगुरु है, माता रुप है, और हमें विश्वास होना चाहिए कि उसकी गोद में सर रखकर हम सही सलामत पार हो जाएंगे।

(गांधी जी)

भगवद्गीता ऐसा असाधारण ग्रन्थ है जिसे प्रत्येक धर्म का मनुष्य आदर के साथ पढ़ सकता है और उसमें अपने धर्म के तत्व देख सकता है ।

(गांधी जी)

जो मनुष्य गीता का भक्त होता है उस के लिए निराशा की कोई जगह नहीं है। वह हमेशा आनन्द में रहता है। **(गांधी जी)**

गीता हमारे धर्म ग्रन्थों का एक अत्यन्त तेजस्वी निर्मल हीरा है। **(लोकमान्य तिलक)**

गीता जीवन के सर्वोच्च लक्ष्यों को हृदयंगम करने में महत्वपूर्ण सहायता देती है।

(डा० राधाकृष्णन)

जैसे अन्धेरे में लालटेन प्रकाश देती है और हमें ठीक मार्ग बताती है, ठीक उसी प्रकार गीता भी हमें कर्तव्य एवं अकर्तव्य का ज्ञान कराती है। यह हमें आध्यात्मिक और सांसारिक दोनों का ऊंचे से ऊंचा उपदेश देती है।

(महामना मालवीय जी)

गीता संसार का अनमोल रत्न है और इसके एक एक अध्याय में कितने कितने रत्न भरे पड़े हैं। इसके पद पद और अक्षर अक्षर से अमृत की धारा बहती है।

(मालवीय जी)

गीता हिन्दु दर्शन और नीतिशास्त्र के सब से प्रामाणिक ग्रन्थों में से एक है। सभी सम्प्रदायों ने उसे इसी रुप में स्वीकार किया है। हमारे युवक और युवतियां यदि इसके चुने हुए श्लोकों का भी अध्ययन कर लें और उसका मनन करें तो अपने पूर्वजों के धर्म को समझ सकेंगे।

(चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य)

गीता उपनिषदों का भी उपनिषद है। क्योंकि समस्त उपनिषदों को दुहकर यह गीता रुपी दुग्ध भगवान ने अर्जुन को निमित्त बना कर संसार को दिया है। जीवन के विकास के लिए आवश्यक प्रायः प्रत्येक विचार गीता में आ गया है। इसलिए अनुभवी पुरुषों ने यथार्थ ही कहा है कि गीता धर्मज्ञान का एक कोष है।

(विनोबाभावे)

कुरुक्षेत्र को गीतास्थली कहलाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। कौरव एवं पाण्डवों के बीच जो महाभारत संग्राम हुआ उस का युद्धस्थल कुरुक्षेत्र ही था। कुरुक्षेत्र महाभारत एवं गीता तीनों ही शब्द बहुत व्यापक अर्थ संजोए हुए हैं। आइए इसके प्रतीक अर्थ पर भी विचार कर लिया जाए। कुरुक्षेत्र का युद्ध प्रतीक है उस आन्तरिक युद्ध का जो मानव देह में सक्रिय है। हमारा शरीर कुरुक्षेत्र है तथा धर्मक्षेत्र भी है। यदि इसे हम ईश्वर का निवास स्थान मान लें और सद्गुणों को अपनावें तो धर्मक्षेत्र है। क्योंकि नरदेह से ही धर्म की, आत्मदर्शन की साधना हो सकती है। इस शरीर के अन्दर भले बुरे विचारों की , सदगुणों एवं दुर्गणों की लड़ाई हमेशा चलती रहती है। दुर्गणों का प्रबल होना कौरवों की जीत है। सदगुणों का प्रबल होना पाण्डवों की जीत है। जब तक जीवन है यह युद्ध समाप्त नहीं होता। युद्ध चलता रहता है जीवन संग्राम में जब मनुष्य राग द्वेष के कारण अपने पराये का भेदभाव करने लगता है तो अपने कर्तव्य कर्म का निर्णय नहीं कर पाता। अस्थिर चित, अशान्त मन, विपाद युक्त (अर्जुन) को गीता माता की शरण में आकर ही परम शान्ति मिलती है।

भगवान कृष्ण ने कौरव एवं पाण्डवों की सेना के मध्य जाकर रथ का खड़ा किया एवं उन्होंनें अर्जुन से कहा – हे पार्थ, यहां युद्ध की इच्छा से इकट्ठे हुए कौरवों को देख लो। अर्जुन को मोह हुआ और यहीं पर भगवान कृष्ण ने गीतारुपी अमृत वाणी का ज्ञान अर्जुन को दिया। इस स्थान की खोज हेतु हमें दो बातें जानना आवश्यक है –

(1) महाभारत कालीन कुरुक्षेत्र की स्थिति।
(2) पाण्डव कौरव सेना तथा शिविर की स्थिति।

श्री वृन्दावन कानूनगो अपने एक लेख में एतदर्थ विचार करते हुए लिखते हैं कि कुरुक्षेत्र हिरण्यवती, दृपद्वती और सरस्वती नदी के मध्य का क्षेत्र है। जिसको ब्रह्मवेदी, समन्तपंचक

एवं कुरु के कर्षन उपरान्त कुरुक्षेत्र कहने लगे। तरन्तुक से मरन्तुक यज्ञ तक, रामहृद से मचक्रुक तक बीस योजन विस्तार अर्थात 107 मील का प्रदेश था। हिरण्यवती के तट पर श्री कृष्ण ने खाई खुदवाकर पाण्डवों के शिविर लगाए थे।

महाभारत उद्योगपर्व अध्याय तेरह में भी लिखा है कि आगे कैकेय, अनुविन्द, द्रोणाचार्य, उन के पीछे अश्वत्थामा, भीष्म पितामह, जयद्रथ, शकुनि, कृतवर्मा, शल्य, ब्रह्मदत तथा दुर्योधन चलकर कुरुक्षेत्र के मैदान में पश्चिम अर्धभाग में स्थित हुए। इस प्रकार कौरव कुरुक्षेत्र के पश्चिम भाग में एवं पाण्डव पूर्वभाग में अर्थात कुरुक्षेत्र के समीप ही पड़ाव डाले हुए थे।

वामनपुराण के अन्तर्गत "कुरुक्षेत्रद्वार का भी वर्णन आया है।

कुरुक्षेत्रस्य तन्द्वारं विश्रुतं पुण्यवर्धनम्

इस द्वार का उल्लेख वामनपुराण में पुण्डरीक तीर्थ के बाद आया है, इस प्रकार यह निश्चय ही वर्तमान पुण्डरी के निकट बनाया गया होगा। यही कुरुक्षेत्र का द्वार पुण्यों की वृद्धि करने वाला है। कुरुक्षेत्र यात्रा के अन्त। । वामनपुराण अध्याय 34/3-7 तक कुरुक्षेत्र का विस्तृत विवरण प्राप्त होता है जिसमें कुरुक्षेत्र के वन, नदियों अर्थात काम्यक वन, अदिति वन, व्यासवन, फलकीवन सूर्यवन, मधुवन, शीतवन आदि सात वन एवं नौ नदियों, सरस्वती, दृषद्वती, वैतरणी, आपगा, मन्दाकिनी, कौशिकी आदि का उल्लेख है। इस प्रकार यह क्षेत्र निश्चय ही अत्यन्त पुण्यमय प्रदेश रहा है। सरोवर महात्म्य के अन्तर्गत भी कुरुक्षेत्र को तपोभुमि कहकर इस की महानता को दर्शाया गया है। सरस्वती नदी को पापनाशिनी कह कर इस का महत्व अत्यन्त अलौकिक एवं अद्भुत बना है।

कुरुक्षेत्र के समीपवर्ती तीर्थ भी इस बात का द्योतक हैं कि यह अत्यन्त पावन धर्मभूमि एवं तपोभूमि है। ज्योतिसर तीर्थ पर ही गीता ज्योति का आर्विभाव माना जाता है। भगवान का विराट दर्शन एवं यहां स्थित अक्षयवट इस बात की पुष्टि करते हैं कि गीता का ज्ञान यहीं पर प्रस्फुटित हुआ। आज के वैज्ञानिक मतानुसार भी अक्षयवट लगभग 6000 वर्ष पुराना है। सरस्वती प्राची, पृथुदक फलकीवन, ब्रहमसर, सन्निहित तीर्थ, स्थाणु तीर्थ, इत्यादि भी कुरुक्षेत्र में स्थित हैं। सो गीतास्थली कुरुक्षेत्र एक शाश्वत सत्य है जो स्वयं के मुख से गीता के प्रथम श्लोक में भगवान ने प्रतिपादित करवाया है।

धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः ।
मामकाः पाण्डवाश्चैव किम कुर्वत संजय।।

इस प्रकार कुरुक्षेत्र मैदान बीस योजन विस्तार में था। पांच योजन घेरे में कौरव एवं पाण्डवों की सेना चारों ओर पड़ाव डाले हुए थी। मध्य में दोनों सेनाओं के बीच का भाग खाली था।

दोनों ओर की सेनायें भिन्न–भिन्न भागों में पड़ाव डाले थीं। मुख्यद्वार कुरुक्षेत्र ही था या इसके समीप ही था। कौरव एवं पाण्डव दिन में युद्ध करते थे किन्तु रात्रि में एकत्रित भी होते थे। रात्रि को युद्ध नहीं होता था। भगवान कृष्ण द्रौपदी को रात्रि में ही नंगे पांव भीष्म पितामह के पास ले गये थे। इससे यह भी अनुमान लगता है कि कौरव एवं पाण्डवों के शिविर पास पास ही थे।

****

कुरुक्षेत्र के सरोवर तीर्थ

ब्रह्मसरोवर

वामनपुराण में ब्रह्मसर तीर्थ का उल्लेख करते हुए महर्षि लोमहर्षण कहते हैं—– समस्त तीर्थों के विषय में वर्णन करने से पहले मैं ब्रह्मा जी, ईश, कमलासन पर स्थित विष्णु, रुद्रदेव एवं तीर्थवर ब्रह्मसर को सिर के बल प्रणाम करता हूँ।

ब्रहमाणमीशं कमला सनस्थं विष्णुं च लक्ष्मी सहित तथैव।
रुद्र च देव प्रणिपत्य मूर्धना तीर्थ वरं ब्रह्मसरः प्रवक्षये।।
वामन । 22/50

इस प्रकार तीर्थ का महत्व त्रिदेव के समान ही वर्णित है। महाभारत तथा पुराणों में वर्णित लेखों के अनुसार ब्रह्मसरोवर प्राचीनकाल में आठ मील लम्बा तथा इतना ही चौड़ा था। यहाँ स्वयं ब्रह्मा जी ने सतयुग के आदि में यज्ञ किया जिस से इसका नाम ब्रहमसर हुआ। महर्षि परशुराम ने अनेक बार पितृ तर्पण हेतु यहाँ यज्ञ किए जिससे इसका नाम समन्तपचंक हुआ। इसी क्षेत्र में जब महाराजा कुरु ने कर्षण किया तो इसे कुरुक्षेत्र के नाम से ख्याति प्राप्त हुई।

ब्रहमसर लगभग 3680 फुट लम्बा एवं 1860 फुट चौड़ा है। प्राचीन समय में तालाब के चारों ओर सीढ़ियों की लम्बी श्रृंखलाएं थीं परन्तु ये उत्तरी किनारे पर पाई जाती थीं तथा तालाब के मध्य एक बड़े तथा एक छोटे द्वीप ने उस की सुन्दरता को बढ़ा रखा था और इसे यात्रियों के लिए आकर्षक बना रखा था। इन द्वीपों मे पौराणिक तथा ऐतिहासिक महत्व के मन्दिर तथा स्थान हैं। छोटा द्वीप एक पुल के द्वारा सर्वेश्वर महादेव से जुड़ा हुआ था और बड़ा द्वीप एक अन्य पुल से जुड़ा हुआ था जो कि उत्तरी किनारे पर मध्य भाग से प्रारम्भ होता है और तालाब को दो भागों में बांट देता है। बड़े द्वीप पर कुछ खण्डहर स्थित हैं जिन के बारे में कहा जाता है कि वे बादशाह औरंगजेब के छोटे किले थे। यहां हथियारबंद सैनिकों की नियुक्ति की गई थी जो आने वाले तीर्थ यात्रियों से जज़िया वसूल करते थे। मुगलपुरा जो कि आजकल पुरोषत्तम बाग के नाम से जाना जाता है एक ऐसा ही अवशेष है। कहा जाता है कि एक लोटा पानी के लिए एक रुपया तथा स्नान क लिए पांच रुपया कर के रुप में वसूल किया जाता था।

सन् 1850 ई० में थानेसर के जिलाधीश श्री लारकिन ने इस तीर्थ को खुदवाया एवं इस का पुनर्निर्माण किया । किन्तु तीर्थ को वर्तमान स्वरुप देने का श्रेय परम आदरणीय श्रद्धेय श्री गुलज़ारीलाल नंदा, अध्यक्ष कुरुक्षेत्र विकास मण्डल को जाता है। इनके तत्वाधान में विकास मण्डल की स्थापना 1968 में हुई। सर्वप्रथम इसी सरोवर का विकास कार्य प्रारम्भ हुआ। सरोवर की गहरी खुदाई हुई। चारों ओर से सरोवर को छोटा किया गया, पुराने घाटों को तुड़वाकर कर नए घाट बनाये गये। यात्रियों के ठहरने हेतु रैन बसेरे बनवाये गये। स्नानहेतु, सरोवर

पर 20 फुट चौड़ा पलेटफार्म बनवाया गया। सरोवर को 15 फुट गहरा किया गया। अब इस समय इसमें स्वच्छ जल भरा रहता है। सरोवर के मध्य में भगवान सर्वेश्वर महादेव का प्राचीन मन्दिर स्थित है जो सरोवर के उतरी तट से एक पुल द्वारा जोड़ा गया है।

सन्निहित सरोवर तीर्थ

यह सरोवर कुरुक्षेत्र ब्रह्मसरोवर की अपेक्षा बहुत ही छोटा है। इस की लम्बाई 500 वर्गगज़ एवं चौड़ाई 150 वर्गगज़ है। इस सरोवर का पुनर्निर्माण भी कुरुक्षेत्र विकास मण्डल द्वारा किया गया एवं इसके तीनों ओर सुन्दर व पक्के घाट बनाये गये हैं। पुरोहित यात्रियों से श्राद्ध तर्पण इसी स्थान पर करवाते हैं। धर्मशास्त्रों में इस पावन क्षेत्र को ही सन्निहित की संज्ञा दी गई है। विद्वानों का मत है कि ऋगवेद शर्मण बल तथा शतपथ का अदतः प्लक्ष सर कुरुक्षेत्र में विद्यमान आज का सन्निहित सरोवर ही है। इस प्रकार यह सरोवर अपने आप में उतना ही पुराना है जितना ऋगवेद।

भागवत पुराण में कहा गया है कि पुरुखा ने उर्वशी को कुरुक्षेत्र में सरस्वती के तट पर देखा तो वह सरस्वती का तट सन्निहित सर ही है क्यूंकि नारदपुराण में सरस्वती को सन्निहित सर से ही होकर पश्चिम में बहने वाली नदी बतलाया गया है। वामन पुराण के इस श्लोक से भी इस सरोवर की प्राचीनता एवं विशालता का
वर्णन मिलता है:-

सर० सन्निहितं प्रोकं ब्रहमणा पूर्वमेवतु।
कलि द्वापरथोर्मध्ये व्यासेन च महात्मना ।।

अर्थात कलि और द्वापर के मध्य में महात्मा वेदव्यास जी ने इसी सर को प्रमाणित बतलाया है जिसे सतयुग में स्वयं ब्रह्मा जी ने निर्मित किया था। इस प्रकार ब्रहमसर तथा सन्निहित सरोवर में कोई अन्तर दिखलाई नहीं पड़ता।

वामनपुराण के अनुसार यह सरोवर अत्यन्त पुण्यमय एवं महान बृद्धिद्योतक है। देववर विश्वेश्वर से पावनी सरस्वती है, उसी के निकट यह सन्निहित कहलाने वाला तीर्थ चारों ओर अर्धयोजन के प्रमाण वाला बतलाया गया है। इसी का आश्रय करने वाले ऋषिगण देव वृंद यहां आकर सभी मुक्ति की कामना हेतु यहां तीर्थ का सेवन करते हैं। प्रजा का सृजन करने की कामना से प्रजापति ब्रह्मा ने इसका सेवन किया। भगवान विष्णु ने भी हरि रुप से जगत की स्थिति (पालन पोषण) की कामना लेकर इस तीर्थ का सेवन किया, भगवान शिव ने इस सर के मध्य प्रवेश करके महान तेजस्वी देव के रुप मे इसका सेवन किया। तभी से वह भगवान स्थाणुत्व को प्राप्त हुए और स्थाणेश्वर महादेव के रुप में नगर के इष्टदेव कहलाने लगे।

ब्रहमणा सेवितं इदं सृष्टि कामेन योगिना
विष्णुना स्थिति कामेन हरिरुपेण सेवितम्
रुद्रेण च सरोमध्यं प्रविष्टेन महात्मना
सेव्य तीर्थ महातेजाः स्थाणुत्व प्राप्त वान्हरः
वामन पु० 22/57–58

अनुरिहान बराह मिहिर जिनका समय लगभग ईस्वी पूर्व दूसरी शती है कहते हैं कि सूर्यग्रहण के अवसर पर सभी सरोवरों का जल कुरुक्षेत्र के सन्निहित सरोवर में आता है। जस से कि स्नान करने वाला एक समय में ही सभी सरोवरों में किए गये स्नान का फल प्राप्त कर लेता है।

धर्मशास्त्रों में इस पावन क्षेत्र को ही सन्निहित की संज्ञा दी गई है जिसके अन्तर्गत ब्रहमसर, कालेसर, स्थाणेसर, ज्येतिसर आदि प्रमुख सरोवर आ जाते हैं। प्रत्येक मास की अमावस्या को ब्रहमादि देव, ऋषिगण तथा समस्त पृथ्वी के तीर्थ यहां इसी स्थान पर एकत्रित होते हैं। स्वयं भगवान विष्णु यहां सदैव निवास करते हैं। इस तीर्थ में स्नान कर भगवान विष्णु का पूजन करने से सहस्त्र अश्वमेध यज्ञ का फल मिलता है तथा बैकुण्ठ लोक की प्राप्ति होती है।
सूर्यग्रहण के अवसर पर सन्निहित तीर्थ में दान एवं स्नान का अक्षय पुण्य है:–

ब्रहमवेदि कुरुक्षेत्रे पुण्य सन्निहित सरः
सेवमाना नरा नित्यं प्राप्नुवन्ति परं पदम्
पुनः सन्निहित्यां वै कुरुक्षेत्रे विशेषतः
अर्चयेच्च पितृस्तत्र स पुत्र रुत्वनृणो भवेत

कुरुक्षेत्र ब्रहमवेदि में सन्निहित सरोवर है। जो मनुष्य उस में नित्य स्नान करता है उसे परम पद की प्राप्ति होती है। कुरुक्षेत्र में जो सन्निहित तीर्थ है उसमें श्राद्ध तर्पण करने वाला पितृ ऋणों से उऋण हो जाता है।
वामनपुराणानुसार सन्निहित सरोवर की सीमा विश्वेश्वर से अस्तिपुर तक, वृद्ध कन्या जरदगवी से आधवती तक बतलाई गई है।

विश्वेश्वराद्धस्तिपुरं तथा कन्या जरग्दवी ।
यावदोधवती प्रोत्मा तावत्सन्निहितं सदः ।
वामन 122/53

वामनपुराण में सन्निहित की उत्पत्ति के सम्बन्ध में महर्षि मार्केण्डेय ने कहा है:–

पूर्व समय में यह सम्पूर्ण विश्व चराचर नष्ट हो गया था और केवल मात्र समुद्र ही दिखलाई पड़ता था। उस समय में एक बृहत अण्ड निकला जो प्रजाओं के बीजोत्पादक रुप वाला था। ब्रहमा उस अण्ड में स्थिर होकर सोने लगे। एक सहस्त्र वर्ष तक वह क्रमशः सतयुग, त्रेता, द्वापर एवं कलियुग में सोते रहे। जब वे एक सहस्त्र युग तक सो कर उठे तो उनका सत्व गुण था। संसार उस समय शून्य था। ब्रह्मा सृष्टि की चिन्ता करने लगे तो इस प्रकार वे रजोगुण से मोहित हुए जो कि सृष्टि के लिए आवश्यक था। सत्वगुण स्वभाव स्थिर करता है एवं तमोगुण नाश करता है। ईश्वर इन तीनों गुणों से ऊपर है। उसी के द्वारा सारे ब्रहमांड की रचना, विकास एवं नाश अथवा संहार होता है। वही ब्रहमा है। जो उसे जानता है वह मोक्ष को प्राप्त करता है। ब्रह्मा की उत्पत्ति का कारण नारायण ही है। जलों को ही नारा कहते हैं और ये आप (जल) ही नरसूनू है। उन जलों में जो शमन करता है उसे नारायण – इस नाम से जाना जाता है। उस विशुद्ध जल में जगत को जानकर भगवान ने अण्ड को विभक्त कर दिया और फिर उसे **ओम** यह उत्पन्न हुआ, फिर उस से **भू** हुआ और दूसरा **भुव** हुआ, तृतीय शब्द **स्व** यह हुआ था। इस तरह भूः भवः स्वः की उत्पति हुई। उसमें जो सवितुवैरेण्यं तेज का अभ्युदय हुआ था, इस तेज ने जल को सुखा दिया। तेज से गर्म होकर गाढ़ा होने पर साफेन से बुलबुला हुआ, बुलबुले से पृथ्वी बनी। पृथ्वी समस्त प्राणियों को धारण करने वाली है। पृथ्वी के मध्य में अण्ड स्थित था, जिस स्थान में अण्ड स्थित था उस में सर सन्निहित" था अर्थात सन्निहित सरोवर वहीं विद्यमान था। और उसी में अण्ड स्थित था जिस से सृष्टि की रचना हुई।

काठिन्याद्धारिणी ज्ञेयां भूतानां धारिणी हि सा।
यस्मिन्स्थाने स्थितं ब्रह्माण्डं तस्मिन्सन्निहित सरः।
वामन। 43/35

महाभारत वनपर्व के अन्तर्गत भी सन्निहित सरोवर की महिमा का वर्णन हुआ है।

ततो गच्छेत धर्मज्ञ तीर्थ सन्निहतीमपि
तत्र ब्रहमादयो देवा ऋषय| च तपोधनाः।

हे धर्मराज युधिस्ठर वहां से सन्निहित तीर्थ को जावें जहां ब्रहमादि देव तपोधनी ऋषि महर्षि महापुण्य युक्त होने से वहां प्रतिमास आते हैं।

मासि मासि समायान्ति महतोत्त्रिता
सनिहत्या मुपस्पृश्य राहु ग्रस्ते दिवाकरे

सूर्य को राहु द्वारा आच्छादित करने पर अर्थात सूर्यग्रहण के अवसर पर सन्निहत तीर्थ में स्नान करने पर पुरुष को सौ अश्वमेध यज्ञ का फल मिलता है।

अश्वमेध शतं तेन तत्रेष्ट शाश्वतं भवेत
पृथ्वियां यानि तीर्थानि अन्तरिक्ष चराणि च
निः संशयम वास्यां समेष्यन्ति नराधिवः

पृथ्वी एवं स्वर्ग पर जितने भी तीर्थ हैं हर अमावस्या को सन्निहित में आते हैं ।

मासि मासि नरव्याघ्र संनिहत्यां न सशयः
तीर्थ सन्निहिता देव सम्हित्येति विभ्रुता

तत्र स्नात्वा च पीत्वा च स्वर्ग लोके महीयते ।
अमावस्यां तत्रैव राहु ग्रस्ते दिवाकरे ।
यः श्राद कुरुते मर्त्यस्तस्य पुण्यं फलं शृणु ।।
यतकिचितं दुष्कृत कर्म स्त्रिया व पुरुषे वा ।
स्नातमात्रस्य तत सर्व नश्यते नात्रसंशयः।।

अमावस्या को सन्निहित में स्नान करने से पुरुप स्वर्गलोक में पूजित होता है । तमोरुप राहु से सूर्य के आच्छादित होने पर, सन्निहित तीर्थ पर श्राद्ध करने से विधि पूर्वक मनुष्य को एक हज़ार अश्वमेघ यज्ञ का फल प्राप्त होता है और उसमें स्नान करने से सारे पाप नष्ट हो जाते हैं ।

ब्रहमवेदि कुरुक्षेत्र में पुण्यमय सन्निहित सरोवर है। जो भी यहां स्नान करता है उसे परम पद की प्राप्ति होती है । स्कन्दपुराण के अनुसार इस तीर्थ में यदि कोई एक गरीब ब्राहमण को अन्न दान करता है तो उस एक व्यक्ति को खिलाना करोड़ों व्यक्तियों को खिलाने के समान है ।

यस्तत्र भोजदेन विप्रं षडरसं विधिपूर्वकम्
एकेन भोजितैनेव कोटिर्भवति भोजिताः

जो सन्निहित में होम करता है उस को करोड़ों होम का फल मिलता है

मस्तत्र कारमेदं होम सन्निहित्या समीपतः
एकैकहुति दानेन कोटि होम फलं भवेत ।
स्कन्द । 7/82

वामनपुराण की एक अन्य गाथा के अनुसार शिव ने ऋषियों से कहा कि वे सन्निहित तीर्थ में उनके लिंग की स्थापना करें किन्तु ऋषि लोग लिंग को हिलाने में समर्थ न हो सके । अतः शिव ने कृपा करके स्वयं ही इस सर में लिंग की स्थापना की–

युष्मामि पतितं लिंग सारमित्वा महत्सरः
सन्निहित्यं तु विख्यातं 'तस्मि शीघ्रं प्रतिप्ठिम ।
वामन । 23/13

इस प्रकार सन्निहित कुरुक्षेत्र के प्रसिद्धतम तीर्थों में एक है । स्वयं प्रजापति ब्रह्मा ने इस सर का विस्तार किया । दूसरे सरोवर तीर्थों का विवरण "शिव तीर्थ" के अन्तर्गत किया गया है ।

****

कुरुक्षेत्र के शिव तीर्थ

स्थाण्वीश्वर तीर्थ

कुरुक्षेत्र गीता के उपदेश स्थल के रुप में विश्वविख्यात है, महाभारत का विश्व व्यापी युद्ध भी यहीं पर हुआ, किन्तु यह भी सत्य है कि अनादि काल से यह स्थान आसुतोष, औढ़रदानी, देवाधिदेव भगवान शंकर का भी अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान रहा है । यहां के इष्टदेव प्रमुख रुप से स्थाणीश्वर महादेव ही रहे हैं । स्वयं प्रजापति ब्रह्मा ने अपने कर–कमलों से स्थाणु लिंग विग्रह की स्थापना की थी ऐसा प्रमाण हमें वामनपुराण में प्राप्त होता हैः

एवं स्तुतो देवगणैः सुभक्तया स ब्रहमामुख्यैश्च पितामहेन
त्यक्त्वा तदाहस्तिरुपं महात्मालिंग तदा सनिधानं चकार ।
वामन । 44/38

अस्तु स्थाण्वीश्वर तीर्थ की प्राचीनता असन्दिग्ध है । स्थाण्वीश्वर महादेव थानेसर नगर के अधिष्ठाता हैं, आराध्य हैं और स्वामी हैं । कुरुक्षेत्र आने पर जिसने स्थाणवीश्वर महादेव के दर्शन नहीं किये समझिये उस की कुरुक्षेत्र यात्रा अधूरी है । वामनपुराण में ब्रहमादिदेव कृत शिव स्तुति में कहा गया है–

स्थाण्वीश्वरे स्थितो यस्माततः स्थाण्वीश्वरः स्मृतः
ये स्मरन्ति सदा स्थाणुं ते मुक्ताः सर्वकिल्वबैः ।
वामन 44/15

स्थाणु में ईश्वर स्थित होने से ही इसे स्थाण्वीश्वर कहा जाता है । जो व्यक्ति सदा स्थाणु का स्मरण करते हैं वे सभी विपत्तियों से छुटकारा पा जाते हैं । स्थाणु लिंग के दर्शन मात्र से शुद्ध देह वाले होकर मोक्ष के गामी हो जाते हैं ।

शुद्धदेहा भविष्यन्ति दर्शनान्मोक्षगामिनः ।
वामन 44/16

वामनपुराण में नानाविध शिवलिंगस्थान माहात्म्य के अन्तर्गत स्थाण्वीश्वर महादेव एवं स्थाणुतीर्थ की महिमा का वर्णन इस प्रकार मिलता है –

अकामो वा सकामो वा प्रविश्य स्थाणुमन्दिरम्
विमुक्तः पातकै घोरैः प्राप्नोति परमं पदम् ।
वामन() 46/55

अर्थात मनुष्य कामना युक्त हो या निष्काम भाव वाला हो, भगवान स्थाणु के मन्दिर में प्रवेश कर घोर पातकों से विमुक्त हो जाता है ।

आज्ञानाज्ज्ञानतोवाऽपि स्त्रिया वा पुरुषस्य वा
नश्यते दुष्कृतं सर्वं स्थाणुतीर्थ प्रभावतः ।
वामन0 45/24

अज्ञान से अथवा ज्ञान से स्त्रियों के अथवा पुरुषों के जो भी दुष्कृत कर्म होते हैं वे सब स्थाणु तीर्थ के प्रभाव से नष्ट हो जाते हैं ।

लिंगस्य दर्शतान्मुक्तिः स्पर्शनाच्च वटस्य च
तत्सन्निथौ जले स्नात्वा प्राप्नोत्यभिमतं फलम् ।
वामन0 45/25

स्थाणुलिंग के दर्शन से एवं वटवृक्ष के स्पर्श से मुक्ति मिलती है । उसके समीप से मनवांछित फल की प्राप्ति होती है ।

पिताणां तर्पण यस्तु जले तस्मिन्करिष्यति
बिन्दौ बिन्दौ तु तोयस्य हन्यननतफ फलभाग्भवेत ।
वामन0 । 45/26

उस जल में जो कोई भी अपने पितृगण का तर्पण किया करता है तो जल के प्रत्येक बिन्दु में अनन्त फल का भागी होता है ।

यस्तुकृष्णतिलैः श्राद्ध स्थाणोलिंगस्य पश्चिमें
तर्पयेच्छद्धया युक्तः प्रींणयेत्स युगतयम् ।
वामन० 45/27

जो कोई पुरुष काले तिलों से स्थाणुलिंग के पश्चिम में श्राद्ध करता है और श्रद्धा से युक्त होकर तर्पण करता है वह तीनों युगों में सब को प्रसन्न किया करता है ।

अन्येऽपि प्राणिनः केचित्प्रविष्टाः स्थाणुमुत्तमम्
ते सर्वे पापनिमुक्ताः प्रयान्ति परम पदम् ।
वामन0 46/18

अति उत्तम स्थाणु तीर्थ में प्रवेश करने वाले सभी प्राणी सभी पापों से मुक्त होकर परम गति को प्राप्त करते हैं ।

स्थाणोर्वटस्य पूर्वेण हस्तिपादेश्वरः शिवः
तं हष्ट्वा मुच्यते पापैश्न्य जन्म निसभवैः ।

वामन0 ~46/2

स्थाणुवट के पूर्व भाग में हस्ति पादेश्वर शिव विराजमान हैं । उनका दर्शन करके मनुष्य अन्य पूर्व जन्मों में होने वाले पापों से भी मुक्त हो जाता है ।

स्थाण्वीश्वर महादेव का मन्दिर कुरुक्षेत्र के प्राचीनतम स्थानों में से है । स्थाणु रुद्र ही इस स्थान पर प्रतिष्ठित हैं । महाभारत युद्ध से पूर्व भगवान कृष्ण ने पाण्डवों सहित यहां आकर भगवान स्थाणु का पूजन किया था एवं विजय के लिए आशीर्वाद ग्रहण किया था । स्कन्द भगवान को इसी तीर्थ पर देव सेनापति के पद पर अभिषिक्त किया गया था । महर्षि दधीचि ने भगवान स्थाणु की आराधना करके बज्र देह प्राप्त की थी । महाभारत द्रोणपर्व में वेदव्यास जी अर्जुन को भगवान शिव की महिमा बतलाते हुय कहते हैंः–

महत्पूर्व स्थितों यच्च प्राणेत्पति स्थितश्चयत्
स्थित लिंगस्य यन्नित्यं तस्मात स्थाणुरितिस्मृत

वे (भगवान शिव) पूर्वकाल से ही महान रुप में स्थित हैं । प्राणों की उत्पत्ति, स्थिति के कारण हैं तथा उनका लिंगमय शरीर सदा स्थिर रहता है । अतः उन्हें "स्थाणु" कहते हैं । सम्राट हर्षवर्धन के पूर्वज पुण्यभूति ने भगवान स्थाण्वीश्वर के नाम पर ही अपनी राजधानी का नाम "स्थाणवीश्वर" रखा था जो बाद में अपभ्रंश होकर "थानेसर" हो गया। इसी मन्दिर को महमूद गजनवी ने लूटा और तुड़वाया। इसी के बाद आधुनिक मन्दिर पानीपत तृतीय युद्ध के वीर सेनानी श्रीमद् सदाशिव राव भाऊ मराठा ने बनवाया था ।

मन्दिर आज भी अपनी प्राचीनता बनाए हुए हैं । स्थाणुमंदिर की अद्भुत विशेषता यह है कि यहां आने वाले को आत्मिक शांति का आभास होता है । मन निर्मल होकर चित्तवृत्ति स्थिर हो जाती है । प्रभु भजन में मन लगता है । मन्दिर में सदैव अखण्ड ज्योति प्रकाशित रहती है । श्रद्धालु जन वांछित फल प्राप्त करते हैं । जब से यह मन्दिर महानिर्वाणी अखाड़ा के अन्तर्गत श्री दिगम्बर बाबा शरणपुरी जी के सानिध्य में आया है तब से ही विकास के शिखर पर पहुंचा है । पुराने जीर्ण शीर्ण खंडहर को एक अति आधुनिक विशाल सज्जायुक्त तीर्थ का रुप दे दिया गया है । मन्दिर में विशाल सत्संग भवन का निर्माण हुआ है जिसमें मां आदिशक्ति सिंहवाहिनी दुर्गा की विशाल मूर्ति है । उनका मनोहारी श्रृगांर देखकर दर्शनार्थी अपलक दृष्टि से एक टक होकर देखते रह जाते हैं । मन्दिर में नित्यप्रति आरती सत्संग, कीर्तन एवं भजन का आयोजन होता है । शिवरात्रि महापर्व तो अनेकों श्रद्धालु सेवा एवं दर्शन के लिए यहां आते हैं । कुरुक्षेत्र में धार्मिक वातावरण बनाने में इस मन्दिर का प्रमुख योगदान है । विशेष रुप से मन्दिर के वर्तमान स्वामी दिगम्बर प्रभात पुरी जी के कुशल नेत्रित्व में प्रशंसनीय प्रगति हुई है ।

स्थाण्वीश्वर तीर्थ स्थित सरोवर का भी जीर्णोद्वार हुआ है । चारों ओर सुन्दर पक्का घाट

है। उसमें स्वच्छ जल भरा रहता है। ऐसा कहा जाता है कि यह तीर्थ इतना पवित्र है कि इस के पवित्र जल की कुछ बूंदों से ही एक राजा "बाण" के कुष्ट रोग का निवारण हो गया था । पाण्डवों ने विजयश्री हेतु यहां पर भगवान शिव की आराधना की । महाराज हर्ष तो इतना प्रभावित हुए कि भारत वर्ष की राजधानी ही थानेसर बना दी ।

कालेश्वर तीर्थः-

स्थाणुं तीर्थ को जाते हुए बाईं ओर एक बहुत ही प्राचीन शिवतीर्थ है "कालेश्वर"। ऐसा कहा जाता है कि कंकाल रुप महात्मा रुद्र ने इस लिंग की स्थापना की थी । इस के दर्शन करने मात्र से ही सब पापों का नाश हो जाता है। ये मुक्ति प्रदाता हैं एवं अग्निष्टोम यज्ञ फल को देने वाले हैं । ऐसा भी कहा जाता है कि रावण ने भी यहीं पर भगवान रुद्र की प्रतिष्ठा की थी । यहां रुद्र ध्यान हेतु सैकड़ों भक्तजन आते हैं ।

चतुर्मुख महादेवः-

स्थाणु शिव मन्दिर के समीप ही झांसा रोड पर बाईं ओर यह शिव तीर्थ विद्यमान है । यहां पर चतुर्मुख महादेव जी का छोटा सा मन्दिर है । साथ ही पवित्र सरोवर है । सृष्टि रचयिता पितामह ब्रह्मा से पूजित महेश्वर चतुर्मुख नाम से संस्थापित हुए ।

चतुर्मुखं ब्रहमतीर्थ यत्र मर्यादया स्थितम्
ये सेवन्ते चतुर्दश्यां सोपवासा बसन्ति च ।
वामन 42/28

मर्यादा संस्थित चतुर्मुख महादेव का जो पुरुप उपवास करते हुय चतुर्दशी विधि में उस का सेवन (पूजन) करते हैं अथवा वहां वास करते हैं वे परम सूक्ष्म तत्व का दर्शन प्राप्त करते हैं एवं पुनः जन्म ग्रहण नहीं करते । उनका यत्नपूर्वक पूजन करके उपवास के साथ जितेन्द्रिय पुरुप अगम्या स्त्री गमन आदि दोषों से मुक्त हो जाता है । वसिष्टाश्रम में स्थित चतुर्मुख की स्थापना करके सर्वोत्तम सिद्धि की प्राप्ति हो सकती है ।

कालिकाले तु सम्प्राप्ते वसिष्टाश्रमभास्थितः ।
चतुर्मुखं स्थापयित्वा ययौ सिद्धि मनु त्तमाम् ।
वामन 49/49

श्री सर्वेश्वर महादेवः-

भगवान शंकर का यह प्राचीन मन्दिर कुरुक्षेत्र सरोवर के मध्य में स्थित है । मन्दिर में पांच कक्ष बने हैं जो ऊपर से भी पांच शिखरों में स्पष्ट दृष्टिगोचर होते हैं । प्राचीन कक्ष में भगवान शंकर का लिंग विग्रह है तथा शिव पार्वती गणेश एवं नंदी की मूर्तियां हैं । दूसरे

कक्ष में भगवान गरुड़ नारायण जी की श्वेत संगमरमर की बनी हुई पांच फुट ऊंची अत्यन्त मनोहारी प्रतिमा है । अन्य कक्षों में क्रमशः श्रीहनुमान जी, महामाया, कृष्णबलराम की मूर्तियां स्थापित हैं । कहा जाता है कि कुन्ती ने इस स्थान पर स्वर्णकमल के द्वारा भगवान शंकर का पूजन किया था । मन्दिर कुरुक्षेत्र ब्रहम सरोवर के मध्य स्थापित होने से इसकी शोभा भी देखते ही बनती है ।

दुःखभंजनेश्वर महादेवः-

सन्निहित सरोवर के पूर्वी तट पर दुःखभंजनेश्वर महादेव का मन्दिर पिछले कुछ वर्षो से शिव भक्तों के आकर्षण का केन्द्र बना हुआ है । श्रद्धालु जन यहां नित्यप्रति आकर भगवान शंकर की आराधना करके फलीभूत होते हैं । मन्दिर का जीर्णोद्धार कुरुक्षेत्र विकास मण्डल द्वारा हुआ है । घाटों का सुन्दर निर्माण एवं सरोवर में पवित्र जल इस मंदिर की शोभाश्री में वृद्धि किए हुए है । थानेसर शहर के निकट होने से यहां पर्याप्त संख्या में श्रद्धालु जन भगवान शंकर की आराधना से पुण्य लाभ प्राप्त कर रहे हैं ।

नीलकंठ महादेवः-

सन्निहित सरोवर के समीप ही हाल में निर्मित नीलकण्ठ महादेव की मूर्ति समस्त श्रद्धालुओं के आकर्षण का केन्द्र बनी हुई है । इसे डा() कुशवाहा, प्रवक्ता शिक्षण महाविद्यालय, कुरुचक्षेत्र ने कई वर्षों के लगातार प्रयत्नों के बाद पूर्ण किया । सन्निहित सरोवर के मध्य स्थापित होने पर इस मूर्ति की अपनी अलग ही अनुपम पहचान है । इन के दर्शन मात्र से हृदय उत्साह एवं श्रद्धा से स्वयं ही नतमस्तक हो जाता है ।

****

पेहोवा के शिव तीर्थ

पृथवीश्वर महादेव –

कुरुक्षेत्र की सीमा के अन्तर्गत पेहोवा में भी शिवतीर्थ विद्यमान है जिनका अपना विशेष महत्व है । जैसा कि विदित है महाराजा पृथुदक के नाम से ही इस क्षेत्र का नाम पड़ा । पृथु अनन्य शिवोपासक थे । अतः उन्होंने अपने आराध्य देव की स्थापना हेतु "पृथ्वीश्वर महादेव" मंदिर का निर्माण करवाया अर्थात पृथ्वी के स्वामी "पृथ्वीश्वर"। कालान्तर में महाराजा रणजीत सिंह ने इस मन्दिर का जीर्णोद्धार करवाया । अब कुरुक्षेत्र विकास मंडल के तत्वाधान में पृथ्युदक तीर्थ का विकास हो रहा है । किन्तु अभी भी सरोवर में स्वच्छ जल एवं मन्दिर के नव–निर्माण की आवश्यकता है ।

संगमेश्वर महादेवः–

अरुणायाः सरस्वत्याः संगमे लोक विश्रुते
त्रिरात्रोपोपिता स्नातो मुच्यतैः सर्व किल्विषैः
प्राप्ते कलियुगे घोरे अधर्मे प्रत्युपस्थिते
अरुणा संगमे स्नात्वा मुक्तिमाप्नोति मानवाः

अरुणा एवं सरस्वती नदी के लोक विख्यात संगम में तीन रात तक आवासपूर्वक स्नान करने वाला समस्त पापों से मुक्त हो जाता है । घोर कलियुग आने पर तथा अधर्म का प्रसार होने पर मनुष्य अरुणाम के संगम पर स्नान करने से मुक्ति प्राप्त करता है ।

श्री संगमेश्वर महादेव का प्राचीन मन्दिर पेहोवा –अम्बाला मार्ग पर पूर्व की ओर पिहोवा से लगभग तीन मील की दूरी पर स्थित है । वामनपुराण में इस तीर्थ की उत्पत्ति के विषय में संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है –

राजर्षि विश्वामित्र एवं महात्मा वसिष्ठ में तपस्पर्धा के कारण वैरभाव उत्पन्न हो गया । वसिष्ठ जी का आश्रम स्थाणु तीर्थ पर था । उसके पश्चिम में विश्वामित्र का आश्रम था । एक बार वसिष्ठ जी देवाधिदेव भगवान शिव की आराधना में तल्लीन थे । उनकी तपस्या से विश्वामित्र क्रोधित हो गये । उन्होंने सरस्वती को बुलाकर कहा–तुम मुनि वसिष्ट को अपने वेग से यहां पर ले आओ । मैं उन्हें यहां मारुगा । यह वचन सुनकर मां सरस्वती अति पीड़ित हुई। उन्होंने वसिष्ठ मुनि से वैसा कहा, वसिष्ठ जी ने उत्तर में कहा–विश्वामित्र के यहां मुझे ले चलो । इस पर सरस्वती ने वसिष्ठ जी को उस स्थान से जल में प्रवाहित किया । उनके द्वारा स्तुति किए जाने पर भगवती सरस्वती उनको सुखपूर्वक विश्वामित्र के आश्रम में ले आई । वसिष्ठ जी को देखकर विश्वामित्र उन्हें मारने को दौड़े । इस पर ब्रह्म हत्या के भय से भीत हो कर सरस्वती ने विश्वामित्र को वंचित कर वसिष्ठ जी को जल में बहा दिया । विश्वामित्र ने क्रोधवश सरस्वती को शाप दिया तुम राक्षसों से संयुक्त होकर

रक्त वहन करो । सरस्वती को इस प्रकार रक्तमय प्रवाहित होते देखकर ऋषि, देवता, गन्धर्व एवं अप्सरायें दुःखी हुए तथा वहां पवित्र तीर्थ में रुधिर बहते देख कर भूत, पिशाच एकत्रित होकर नाचने लगे ।

तदनन्तर वहां तपस्वी ऋषि महात्मा तीर्थ यात्रा के लिए जब सरस्वती तट पर पहुंचे और सरस्वती से सारा वृत्तान्त सुना तो वे अभी नदी के पवित्र जल वाली तथा सर्वपापनाशिनी अरुणा नदी को वहां लाए । इससे सरस्वती का जल पवित्र एवं शुद्ध हो गया । सरस्वती के जल को शुद्ध हुआ देखकर राक्षस बड़े दुखी हुए और दीनतापूर्वक मुनियों से अपनी मुक्ति की प्रार्थना करने लगे–इस प्रकार उन तपस्वी ऋषियों ने उस तीर्थ को शुद्ध कर राक्षसों की मुक्ति के लिए वहां एक संगम की रचना की। "यही अरुणाय संगम" के नाम से प्रसिद्ध हुआ । इसी संगम के स्थान पर आदिदेव महादेव जी की स्थापना की गई और यह स्थान संगमेश्वर महादेव के नाम से सुप्रसिद्ध हुआ ।

श्री पशुपतिनाथ महादेव :-

श्री पशुपति महादेव जी का विशाल एवं भव्य मन्दिर पिहोवा के दक्षिण में बाबा श्रवणनाथ जी के डेरे में स्थित है । मन्दिर प्राचीन स्थापत्य कला का अद्भूत नमूना है । मन्दिर के शिखर एवं भीतरी स्तम्भ बहुत ही ठोस एवं आकर्षक बने हुए हैं । मन्दिर में भगवान शिव लिंग चतुर्मुखी रुप में हैं जो कि शुद्ध कसौटी के पत्थर का बना हुआ है । आशुतोष भगवान शंकर का यह विग्रह अत्यन्त विशाल है जो कि कुरुक्षेत्र में ही नहीं अपितु सारे भारत में अद्वितीय है । नेपाल स्थित पशुपतिनाथ के पश्चात यही मात्र ऐसा विग्रह है जो कसौटी के पत्थर का बना है ।

मुख्य शिव मन्दिर में चार अलग–अलग भागों में चार मन्दिर बने हुए हैं तथा एक ओर भगवान जगन्नाथ जी, बलराम एवं सुभद्रा जी की काष्ठ प्रतिमायें हैं जो चन्दन की बनी हुई हैं । चार अलग–अलग स्थापित मन्दिरों में सरस्वती, सत्यनारायण, गौरी शंकर एवं हनुमान जी की प्रतिमाएं हैं । हनुमान जी की विशालमूर्ति अष्टधातु की बनी हुई है । इस पर सिन्दूर चढ़ाया जाता है । कहा जाता है कि यह मूर्ति भूमि की खुदाई करवाते हुए प्राप्त हुई थी ।

दक्षेश्वर महोदव :-

इस तीर्थ में दक्षेश्वर शिव विराजमान हैं । यहां शिव का दर्शन करने मात्र से ही व्यक्ति अश्वमेध यज्ञ के फल को प्राप्त करता है ।

तोदक्षाश्रम गत्वा दृष्टवा च दक्षेश्वरं शिवम्
अश्वमेधस्य यज्ञस्य फलं प्राप्नोति मानवः
वामन 13/21

यह तीर्थ दाचर नामक स्थान पर करनाल से दक्षिण पश्चिम दिशा में बतीस किलोमीटर की दूरी पर स्थित है ।

भूतेश्वर–ज्वाला मालेश्वर :–

यह तीर्थ जींद में वाराह के समीप है । वामन पुराण के अनुसार ये दोनों लिंग हैं । इनकी पूजा करने से व्यक्ति पुनर्जन्म प्राप्त नहीं करता ।

भूतेश्वर च तत्रैव ज्वालामालेश्वरं तथा
तावचौ लिंगावभ्यचर्य न भूयो जन्म च्चाप्नुयात्
वामन। 13/36

****

पृथुदक (पिहोवा) तीर्थ

महाभारत वन पर्व में कुरुक्षेत्र को धर्मक्षेत्र एवं पुण्यमय कहा जाता है; किन्तु कुरुक्षेत्र से भी अधिक पुण्यमयी है सरस्वती जहां कि हमारे ऋषि आचार्यें ने वेद संहिताओं की रचना की ; सरस्वती से भी पवित्र है उस के तटवर्ती तीर्थ एवं उस से भी अधिक पवित्र है पृथुदक अर्थात पिहोवा तीर्थ ।

पुण्यबाहु कुरुक्षेत्र कुरुक्षेत्रात्सरस्वती ।
सरस्वत्यश्च तीर्थानि तीर्थभ्यश्रय पृथुदकम् ।

महा 0 वन 0 । 18/25

राजा पृथु द्वारा बसाए जाने पर ही इस तीर्थ का नाम पृथुदक पड़ा । महाभारत के अनुसार राजा पृथु बेन राजा के पुत्र थे । इन्होंनें बाहुबल से समस्त राजाओं को जीत लिया था। इन्होंने पृथ्वीतल को प्रोथित समतल बनाया था इसलिए ये पृथु कहे जाते हैं । इन के राजसूय यज्ञ में महर्षि गण उपस्थित हुए थे और उन्होंने इनका राज्याभिषेक किया था । इनके शासनकाल में बिना जोती हुई भी भूमि अन्न उत्पन्न करती थी। धेनु समूह काम दुहा थी । प्रबल प्रतापी महाराज पृथु ने अनेक यज्ञ सम्पादन किए । समस्त प्राणियों को अभिलषित द्रव्य देकर सन्तुष्ट किया था । इसी दानी राजा ने अपने अश्वमेध यज्ञ में पृथ्वी के समस्त पदार्थों की स्वर्ण प्रतिमाएं बनाकर ब्राहमणों को दी थीं । उन्होंने 66 हज़ार सुवर्णछत्र और मणिरत्न भूषित सुवर्णमय पृथ्वी दान की थी ।

हरिवंशपुराण के अनुसार पृथु कवच, धनु और दिक शर लेकर उत्पन्न हुए थे । सत्पुत्र पृथु के उत्पन्न होने पर वेन पुन्नाम नरक से रक्षा पा कर स्वर्ग गये । अनन्तर ब्रह्मा देवताओं के साथ वहां उपस्थित हुए और उन्होंने पृथु को चक्रवर्ती राजा बनाया । पृथ्वी संस्थित मनुष्यों को सुख सम्पन्न विधान कर के उन्होंने राज्य किया था । एक समय प्रजा ने राजा के समीप उपस्थित होकर अपनी-अपनी वृत्तिनिश्चित कर देने के लिए प्रार्थना की । पृथु ने उनकी प्रार्थना पर शरसंधान करके पृथ्वी पर आक्रमण किया । पृथ्वी पृथु के भय से गौ-रुप धारण करके भागी । पृथु भी धनुषबाण लेकर सब स्थानों में उस का अनुसरण करने लगे। अन्त में पृथ्वी महाराज पृथु की शरण में आई। पृथु बोले-पृथ्वी तुम सब प्रजाओं को जीविका प्रदान करो और मेरी पुत्री बनो। पृथ्वी बोली - मैं आप के प्रस्ताव से सहमत हूँ। परन्तु किस प्रकार मुझ से आप प्रजारक्षा करना चाहते हैं यह पहले स्थिर कर लें। प्रजा की जीविका विधान हेतु मेरा दोहन करना होगा। दोहन करने के लिए आपनको बछड़ों की आवश्यक्ता होगी। क्यूंकि बछड़ों के बिना कभी दूध नहीं निकलता और मुझे समतल भी करना होगा नहीं, तो मेरा दूध सब स्थानों में कैसे फैलेगा। पृथु ने पृथ्वी की बात सुनकर धनुष के अग्रभाग से अनेक पर्वतों को उलट दिया। इस प्रकार समस्त पृथ्वी समतल हो गई। अनन्तर महाराज पृथु ने भगवान स्वायंभुव मनु को वत्स बनाकर अपने हाथ से गोरुप धारिणी पृथ्वी के अनेक शस्य दोहन

किए। उसी अन्न द्वारा प्रजाजीवन धारण करती है। अनन्तर ऋषियों ने सोमदेव को वत्स बनाकर पुन| पृथ्वी को दोहन किया। इस बार देवगुरु वृहस्पति दोहन कर्ता बने थे। तदनन्तर इन्द्र आदि देवताओं ने मिलकर पुन: पृथ्वी को दुहा। इस बार इन्द्र स्वयं वत्स बने थे और सविता दोग्धा बनी। यज्ञीय हवि इस बार क्षीर रुप से दुहा गया था। भूमि पृथु की पुत्री हुई थी, इसी कारण भूमि का नाम पृथ्वी पड़ा। इस प्रकार महाराज पृथु असमान्य प्रताप से राजाओं में अग्रणी हुए थे।

श्रीमद्भागवत में भी पृथु की कथा इस प्रकार आई है । ब्राह्मणों ने अपुत्रक वेन के दोनों बाहुओं का मंथन किया। एक बाहु से पुरुप और दूसरे से एक स्त्री उत्पन्न हुई। उस समय ऋपियों ने कहा था – तुम सब से प्रथम राजा हो। अतएव तुम्हारा नाम पृथु होगा और कन्या का नाम अचि होगा। ऋपियों के कहने से अचि और पृथु का ब्याह हुआ। अनन्तर पृथु को कुबेर ने स्वर्णमय आसन, वरुण ने श्वेत छत्र, वायु ने दो कंगन, ब्रह्मा ने वेदमय कवच, हरि ने सुदर्शन चक्र और लक्ष्मी ने सम्पत्ति दी। भगवान रुद्र ने एक तलवार दी। अग्नि ने पृथु को छाम, सूर्य ने रश्मिवाण और भूमि ने योगमयी पादुका उपहार में दी।

महाराज पृथु भगवान के अंश से उत्पन्न हुए थे। उन्होंने समस्त प्रजाओं पर भगवान दिवाकर के समान अपना प्रताप फैलाया था। पृथु ने उत्तम कार्यों द्वारा सब को प्रसन्न किया था। वे पर स्त्री को माता एवं अपनी स्त्री को अपने शरीरार्द्ध के समान समझते थे। उन्होनें सौ अश्वमेघ यज्ञ किए। अन्तिम यज्ञ के समाप्त होने से पहले ही देवराज इन्द्र ने उनका यज्ञीय अश्व चुरा लिया था। महाराज पृथु ने सनत्कुमार की आराधना करके ब्रह्म ज्ञान प्राप्त किया एवं यथासमय उन्होनें सदगति प्राप्त की।

प्रसिद्ध पेहोवा तीर्थ हरियाणा राज्य में जिला कुरुक्षेत्र में स्थित है। थानेसर से इस तीर्थ की दूरी लगभग 31 किलोमीटर है। पवित्र सलिला नदी के तट पर अवस्थित इस तीर्थ का भारतीय संस्कृति एवं इतिहास में अपना विशिष्ट स्थान है। इस तीर्थ की महिमा का वर्णन महाभारत, भागवत, भविष्य पुराण, वामन, वायु पुराण इत्यादि कई धार्मिक ग्रन्थों में मिलता है। राजा पृथु ने इस स्थान को हज़ारों वर्ष पहले बसाया था। दूसरे पृथु उदक से तात्पर्य जहां पर राजा पृथु ने अपने पित्रों को उदक (जल) दिया। इस प्रकार पेहोवा संस्कृत शब्द पृथु उदक का ही अपभ्रंश रुप है। इस तीर्थ की महिमा अनन्त है। विश्वामित्र व वशिष्ट जैसे महान ऋषि मुनियों ने इस पतितपावनी सरस्वती नदी के किनारे घोर तप करके इस तीर्थ की महिमा को बढ़ाया। ब्रहमयोनि तीर्थ में स्वयंभू ब्रहमा जी ने अनेक यज्ञ किए। इस तीर्थ की महिमा का यशोगान वामनपुराण में इस प्रकार किया गया है –

पृथुदकं चैर्न दृष्टं न श्रतुम स्मृत तथा
इतिनास्ते वृथा पुत्राः पितरः प्रवदन्तिहि

जिन पुरुषों ने पृथुदक तीर्थ का नाम न सुना हो, न देखा हो और न ही मन मे स्मरण किया हो, उन के पितर कहते हैं कि हमारी संतान हुई या न हुई एक समान है।

सरस्वत्युतरे तीर्थे यस्त्यजेदात्मन स्तनुम।
पृथुदके जप्य परो नैवस्य मरणं भवेत।
वामन 39/19

सरस्वती के उतर में जो अपने शरीर का त्याग करता है और पृथुदक में जो जप्य में परायण करता है उसका मरण ही नहीं होता।

पेहोवा तीर्थ को हिन्दु तीर्थों में अत्यन्त पवित्र माना जाता है। यहां प्रतिदिन सैंकड़ों यात्री श्रद्धालु जन, पिंड दान, पितृ तर्पण हेतु आते हैं । इसी तीर्थ पर ऋषि विश्वामित्र ने क्षत्रित्व को त्यागकर ब्राह्मयत्व को प्राप्त किया । देवगुरु वृहस्पति ने यहां अनेकों यज्ञ किए । ययाति राजा ने यहा विधिपूर्वक 99 यज्ञ किए । और इसी राजा के यज्ञों से प्रसन्न हुई सरस्वती मधुस्रवा होकर प्रवाहित हुई । पुराणों के अनुसार ब्रह्मा जी ने यहीं पर सृष्टि की रचना की जिस का प्रमाण ब्रह्मयोनि तीर्थ से मिलता है । यही पर भगवान शंकर ने कृष्ण चतुर्दशी (चैत्रमास) पर भूत प्रेत एवं पिशाचों को दिव्य लोक प्रदान किया । इसी कारण इस चतुर्दशी का नाम पिशाचमोचिनी चतुर्दशी पड़ा । ऋषि वशिष्ठ का आश्रम भी यहीं स्थिर है जहां वे भगवान शंकर की आराधना किया करते थे ।

कुरुक्षेत्र भूमि में पृथुदक के समान अन्य तीर्थ नहीं है क्योंकि और तीर्थों में स्नानादि करने से पाप नष्ट होते हैं परन्तु यहां तो केवल मात्र नाम लेने से ही पाप दूर हो जाते हैं ।

पृथुदकसम तीर्थ नाम्ना पाप प्रमोचनम् ।
कुरुक्षेत्र गतं नान्यछत्र लंभो सदा स्थिति ।

महाभारत युद्ध में मारे गये वीरों की सुगति प्रदान करने हेतु यहीं पर युधिष्ठर द्वारा पिंड दान करवाये गये थे । श्रेष्ठ मुनि उनक अपने पुत्रों सहित गंगा तट को त्यागकर मोक्ष के लिए यहां पधारे । सषंगु नामक ऋषि ने यहीं पर सिद्धि प्राप्त की । उन्होंने सरस्वती नदी में स्नान करके अपने पुत्रों से कहा था–पृथुदक तीर्थ में अपने शरीर का त्याग करने वाला जप परायण पुरुष निश्चय ही देवत्व को प्राप्त होता है ।

सिख गुरुओं में भी इस तीर्थ के प्रति पूरा सम्मान रहा है । यहां स्नान हेतु गुरु नानक देव जी, गुरु गोविंद सिंह जी, गुरु हरराय जी, एवं महाराजा रणजीत सिंह भी दो बार यहां आये थे । अतएव इस तीर्थ का महत्व समस्त हिन्दु जाति के लिए आज भी ज्यों का त्यों परम्परागत बना हुआ है । आज भीप्रत्येक वर्ष चैत्र चोदस के दिन भारी मेला लगता है जिसमें लाखों श्रद्धालु अपने पितरों के कर्मकाण्ड, नारायण बलि, गति, पिंडदान हेतु यहां आते हैं । हरियाणा

सरकार ने इसे राजकीय मेला घोपित किया है । सरकार यहां उचित प्रबन्ध करती है । भारतीय सनातन धर्म महाबीर दल के निप्काम सेवकों द्वारा यात्रियों को स्नान एव पिण्डदान में पूरा सहयोग मिलता है । हरियाणा से ही नहीं अपितु पंजाब से बहुत से श्रदालु यहां मां सरस्वती को श्रद्धासुमन अर्पित करने यहां अते हैं । सच कहा जाय तो यह हिन्दु सिख एकता का पवित्र संगम स्थल है । गंगा के जल में मरने से मुक्ति प्राप्त होती है, काशी में जल तथा थल में मरने से मुक्ति मिलती है । अर्थात यहां की जल, मिट्टी वायु तीनों ही मोक्षदायिनी हैं । पेहोवा तीर्थ में पावन सलिला सरस्वती के तट पर अनेक तीर्थ है जिनका विवरण पुराणों में इस प्रकार मिलता है:–

विश्वामित्र तीर्थः––

यहां मुनि विश्वामित्र जी का विख्यात तीर्थ है यहीं पर उन्हें ब्राहमणत्व प्राप्त हुआ था । वामनपुराण के अनुसार यहां तीर्थ स्नान करने से मनुष्य निश्चय ही ब्राहमणत्व को प्राप्त करता है तथा विशुद्धात्मा ब्राह्मण तो परम पद को प्राप्त करता है ।

ब्राहमण्यं लब्धवान्यत्र विश्वामित्रो महमुनिः
तस्मिस्तीर्थ वरे स्नात्वा ब्राहमण्यं लभते ध्रुवं ।
वामन । 39/15
ब्राहमणस्तु विंशुद्धात्मा पर पदभवाप्नुयात ।
वामन() 39/16

यह तीर्थ सरस्वती के दक्षिण तट पर 4() फुट ऊंचे टीले पर स्थित है । यहां प्राचीन मन्दिर के अवशेष है द्वार पर सुन्दर मानवकृति हैं जिसने अपने हाथ गोद में रखे हुए हैं । तीनों तरफ दो हाथी उसका अभिनन्दन कर रहे हैं । बाई ओर नवग्रह दाई ओर अष्ट शक्तियां विराजमान हैं ।

पृथ्वीश्वर महादेवः–

यह अत्यन्त प्राचीन शिव मन्दिर है जिसका निर्माण स्वयं महाराज पृथु ने करवाया था । मुगलकाल में इसे धवस्त कर दिया गया किन्तु मराठा शासकों ने इसे पुनः जीवन दिया एवं देवालय का निर्माण करवाया । कहते हैं कि बाद में महाराजा रणजीत सिंह जी ने भी इस मन्दिर का जीर्णोद्वार किया ।

वशिष्ठ तीर्थः–

जैसा कि नाम से पता चलता है इस स्थान पर वशिष्ठ ऋषि का आश्रम है । यहीं पर उन के द्वारा यज्ञों का आयोजन हुआ था । इस स्थान पर भगवान शिव के तीन मन्दिर तथा गुफा हैं । एक कूप भी है ।

कार्तिकेय तीर्थः-

पृथ्वीश्वर महादेव के समीप ही स्वामी कार्तिकेय का अत्यन्त प्राचीन मंदिर है । इसमें श्रद्धालु तेल तथा सिन्दूर चढ़ाते हैं । स्त्रियों के लिए इस तीर्थ का दर्शन वर्ज्य है । कहते हैं कि कार्तिकेय का मन्दिर युद्ध देवता कार्तिकेय के उद्देश्य से महाभारत युद्ध के पहले का प्रतिष्ठित है ।

ययाति तीर्थः-

तत्र तीर्थं सुविख्यातं यायातं नाम नामतः
यस्यह यजमानस्य मधु-सुस्राव वै नदी ।
वामन० 39/36

पावनसलिला सरस्वती नदी के तट पर महाराज ययाति ने अनेकों यज्ञ किए । इस कारण ययाति तीर्थ के नाम से सुविख्यात है । राजा ययाति की इच्छानुसार सरस्वती ने दूध घी तथा मधु प्रवाहित किया था । अतः इन पर बने घाटों को मधुसव्रा तथा दुग्धस्त्रवा कहते हैं । महाभारत के अनुसार जब राजा ययाति यज्ञ कर रहे थे तो सरस्वती ने अपने प्रति उनकी अटूट श्रद्धा भक्ति को ध्यान में रखते हुए, यज्ञ में आए हुए ब्राहमणों को जो भी उन्होंने चाहा वे सभी मनोवांछित वस्तुएं प्रदान की । राजा के यज्ञ के निमित से आया हुआ जो भी ब्राहमण जहां कही ठहरा हो वहीं पर सरस्वती ने पृथक गृह, शयया आसन भोजन तथा अनेक प्रकार के दान की व्याख्या की । यहां भक्ति युक्त स्नान करने से व्यक्ति समस्त पापों से मुकत हो जाते हैं एवं अश्वमेघ के फल को प्राप्त करते हैं ।

तस्मिन स्नातो नरो भक्तया मुच्यते सर्वकिल्वषैः
फल प्राप्नोति यज्ञस्य अश्वमेघस्स्य मानवः
वामन सरो० 18/38

अवकीर्ण तीर्थः-

वामन पुराण में पृथुदक तीर्थ के बाद इस तीर्थ का वर्णन आया है । इस तीर्थ से सम्बन्धित संक्षिप्त कथा इस प्रकार है- इस स्थान पर "बकदालभ्य" ने महान क्रोध में भरकर तथा तपस्या द्वारा अपने शरीर को कृश बनाकर धृतराष्ट्र के राष्ट्र का होम कर दिया था । कथा के अनुसार नेमिषारण्य में रहने वाले ऋषियों ने बारह वर्ष का एक सत्र प्रारम्भ किया । सत्र की समाप्ति पर सभी ऋषि पांचाल देश गये । वहां जाकर उन्होंने उस देश के राजा से दक्षिणा रुप में धन याचना की वहां उन्हें पशुओं की दक्षिणा प्राप्त हुई । इस पर वकदालभ्य ने उन पशुओं को ऋषियों में बांट दिया और स्वयं धृतराष्ट्र के पास जाकर पशुओं को मांगने लगा । धृतराष्ट्र ने क्रोध वश उसे मरे हुए पशुओं को ले जाने को कहा । इस से वकदालभ्य अपमानित हुए

और वह मुनि उन मृत पशुओं के ही मांस को काट कर धृतराष्ट्र के राष्ट्र को आहुति देने लगा । वकदालभ्य के प्रतिकार स्वरुप पशुओं के मास द्वारा इस राष्ट्र का विनाश होने लगा तो सभी ने राजा को सलाह दी कि वे जाकर मुनि को प्रसन्न करें । तत्पश्चात वह राजा पुरोहितों को साथ लेकर रत्नों को लेकर बकदालभ्य मुनि के पास पहुंचा तथा उससे रक्षा की प्रार्थना की । इस पर प्रसन्न होकर मुनि ने राजा को ब्राहमण के निरादर न करने की सलाह दी और कहा कि अपमानित ब्राहमण तीन पीढ़ियों को नष्ट कर देता है।द महाभारत के अनुसार वृहस्पति ने राक्षसों के विनाश के लिए तथा देवताओं के अभ्युदय हेतु यहां यज्ञ का अनुष्ठान किया । इस तीर्थ में जो जितेन्द्रिय व्यक्ति श्रद्धापूर्वक स्नान करता हे वह नर नित्य मन मरो वांछित फल को प्राप्त करता है ।

तस्मिस्तीर्थ तु युः स्नाति श्रद्धानो जितेन्द्रियः
स प्राप्नोति नरो नित्यं मनसा चिन्तितं फलम्
वाम सरो() । 18/36

ब्रहमयोनि तीर्थः–

चातर्वर्ण्य ततो दृष्टवा आश्रमाः स्थापिता स्ततः
एवं प्रतिष्ठित तीर्थ ब्रहमयोनीति संज्ञितम्
वाम सरो() 39/23

चारो वर्णो की रचना को ध्यान में रखते हुए ब्रहमा जी ने चार आश्रमों की स्थापना की इस तरह से ब्रहमयोनि–इस संज्ञा वाला तीर्थ प्रतिष्ठित हुआ । वहां स्नान करके जो मुक्ति की कामना वाला पुरुप है वह पुनः किसी भी योनि का दर्शन नहीं करता । यह तीर्थ स्थान पृथुदक तीर्थ से बिल्कुल जुड़ा हुआ है कहा जाता है कि ऋपियों ने तपस्या करके मोक्ष प्राप्त किया । ब्रहमाजी के मुख से ब्राहमण, बाहुओं से क्षत्रिय, जंघाओं से वैश्य और पैरों से शुद्र यहीं उत्पन्न हुए थे । चारों वर्णो की स्थापना होने से ही यह तीर्थ ब्रहमयोनि कहलाया ।

सरस्वती तीर्थः–

पेहोवा तीर्थ के साथ सरस्वती तीर्थ का वर्णन न हो तो उचित नहीं लगता । यहा पर सरस्वती देवी का एक छोटा सा मन्दिर सरस्वती नदी के तट पर ही बना हुआ है इस का निर्माण भी मराठों ने करवाया था मन्दिर का द्वार अत्यन्त सुन्दर एवं गुप्तकालीन मूर्ति कला का परिचायक है ।

अग्नि तीर्थः–

महाभारत में इसी तीर्थ का वर्णन आता है । यह तीर्थ पेहोवा के समीप ही स्थित है । महाभारत में वर्णित कथा के अनुसार भृगु ऋपि के शाप से भयभीत होकर अग्नि देव शमी वृक्ष के अन्दर

अदृश्य हो गये । अग्निदेव को न दिखाई देने पर इन्द्र सहित सभी देवता अत्यन्त व्याकुल होकर उन्हें खोजने लगे । खोजते हुए उन्होंने अग्निदेव को शमीवृक्ष के गर्भ में निवास करते देखा । देवता वृहस्पति जी को लेकर वहां उपस्थित हुए किन्तु खाली हाथ लौटे । अग्निदेव ऋषि के शाप वंश सर्व भक्षी हो गये । इसीलिए यह तीर्थ अग्नितीर्थ कहलाया । इसमें स्नान करने से व्यक्ति अपने कुल का उद्धार करता है ।

अग्नि लोकभवाप्नोति कुलं चैव समुद्धरेत
वामपु० 81/119

****

कुरुक्षेत्र के कूप तीर्थ

चन्द्रकूपः –

कुरुक्षेत्र सरोवर के मध्य में स्थित पुरुपोतम पुरा (प्राचीनमुगलपुरा) में यह अति प्रसिद्ध कूप तीर्थ है । इस क्षेत्र के पवित्र कूपों में गिना जाता है । कहा जाता है कि धर्मराज युधिष्ठर ने महाभारत युद्ध के बाद इस स्थान पर विजय स्तम्भ बनवाया था जो कालान्तर में लुप्त हो गया। यहां गुप्त दान का महत्व है ।

देवीकूपः –

भगवती दुर्गा के प्रसिद्ध इकावन शक्तिपीठों में अद्‌भूत पीठस्थान है । मां भद्रकाली तीर्थ और इसी तीर्थ पर स्थित एम पवित्र कूप का नाम है देवीकूप । इसे दुर्गाकूप भी कहा जाता है । दक्ष के यज्ञ में भगवान शंकर का भाग न देखकर अपने पिता दक्ष को शिव की निंदा करते हुए सुनकर अत्यन्त क्रोध वश सती ने अपना शरीर त्याग दिया । भगवान शंकर सती का मृत शरीर कांधे परर धारण करते हुए उन्मत भाव से नृत्य करते हुए त्रिलोकी में घूमने लगे । ऐसा देखकर भगवान विष्णु ने अपने चक्र से राती के शरीर को विभाजित कर दिया । इस प्रकार इकावन टुकड़े हुए और उन्हीं स्थानों पर शक्तिपीठ स्थापित हुए । कुरुक्षेत्र में सती के शरीर का दायां टखना गिरा था । जहां सावित्री देवी शक्ति तथा स्थाणु भैरव प्रकट हुए । यह वही महान शक्ति पीठ है–

कुरुक्षेत्रे उपरो गुल्फः सावित्री स्थाणु भैरवम् ।
गत्वा सुशोभिते नित्यं देवयाः पीठो महामुनि ।।

प्राचीन परम्परा के अनुसार महाभारत युद्ध के समय अर्जुन ने भगवती दुर्गा का रणचण्डी के रुप में आह्वान किया था । भद्रकाली का पूजन तथा यज्ञ करके उन्हें प्रसन्न किया था । इस कारण इसे भद्रकाली के नाम से भी पुकारा जाता है ।

वामन पुराण में वर्णित कुरुक्षेत्र

महाराज कुरु द्वारा कर्षित किए जाने पर इस पुण्यभूमि का नाम कुरुक्षेत्र हुआ । इन्द्रदेव ने प्रसन्न होकर उन्हें यह वरदान दिया कि यह समस्त भूमि अर्थात जितना भी भू–भाग कुरु द्वारा कर्षित हुआ है धर्मक्षेत्र कहलाएगा ।

वरदो ऽस्मीत्ये युक्ते कुरुर्वस्य याचत ।
यावरे तन्मया कृष्टं धर्मक्षेत्र तदस्तुवः ।
वामन() 22/33

पुनः महाराज कुरु ने यह वरदान मांगा कि यहां जो भी स्नान करने वाले हों अथवा मृत्यु गत हों, उनके लिए यह स्थल महान पुण्य फल देने वाला हो यहां पर उपवास, दान, स्नान, जाप एवं होम आदि हों ।

स्नाताना च मृतानां च महापुण्यफलत्विह ।
उपवासश्चव दानं च स्नांन जप्यं च माधव ।।
वामन() 23/24

हे प्रभो अन्य भी शुभ कर्म अथवा अशुभ कर्म आप के प्रसाद से अक्षय एवं महान फल वाला हो जाए ।

होम यज्ञादिकं चान्यच्छुमं वाज्प्य शुभं विभो ।
त्वत्प्रसादादृषीकेष शंख चक्र गदाधार ।
वामन() 22/35
अक्षयं प्रवरे क्षेत्रे भवत्वत्र महाफलम् ।
तथा भवान्सुरैः सार्द्ध समं देवेन शूलिना ।
वामन 22/36
त्वसात्र पुण्डरीकाक्ष मनामण्यन्केच्युत ।
इत्यवमुक्तस्तेनाह राज्ञा वाढमुवाच तम ।।
वामन 22/37

राजा कुरु प्रभु से यह भी वरदान चाहते हैं कि हे पुण्डरीकाक्ष आप समस्त देवों तथा देवशूली के साथ यहां निवास करें और यह स्थान मेरे नाम का द्योतक होवे । इस प्रकार भगवान ने तथास्तु कह कर "सब ऐसा ही होगा" वरदान दे दिया । तदनन्तर भगवान पुरुषोतम प्रभु के इस क्षेत्र की रक्षा हेतु चन्द्र नाम वाले यक्ष को, वासुकि सर्प को, विद्याधर, शंकु, कर्ण, सुकेश, राक्षरोवर, अजावन, नृपति, महादेव, पावक इन सब को प्रदान किया और ये सभी यहां एकत्रित होकर कुरु जगंल की रक्षा करते हैं ।

अजावनं च नृपति महादेवं च पावकम् ।
एतानि सर्वतोऽभ्येत्व युक्तं रक्षन्ति कुरुजागंलम् ।।
वामन 22/41
तस्यैव मध्ये महापुण्य युक्तं पृथुदक पापहरं शिवं च
पुण्यानदी प्राइगं मुखतां प्रयाता जलौद्य युतास्य सुताजलाद्या ।
वामन 22/44

कुरुक्षेत्र के मध्य में एक परम पुण्य कल्याणकारी तीर्थ पेहोवा है जो कि पुण्य सलिला सरस्वती नदी के तट पर स्थित है । पहले इस नदी का सृजन पितामह ब्रहमा ने किया और समस्त भूतगणों के साथ यही नदी जल, अग्नि वायु तथा आकाश आदि में अधिक जल वाली थी ।

सरस्वती हपद्धत्योरन्तरे कुरुजाङ्गले
मुनिप्रवरमासीन पुराणं लोमहर्षणम्
वामन 22/47

कुरुक्षेत्र के अन्य तीर्थों के विषय में पूछे जाने पर मुनियों में परम प्रवर पुराण लोमहर्षण ने ऋषियों से कहा कि ब्रहमा जी ईश कमलासन पर स्थित विष्णु जी जो लक्ष्मी सहित विराजमान हैं, रुद्रदेव और तीर्थवर ब्रहमसर राव को शिर के बल प्रणाम करके ही मैं बताऊंगा । इस प्रकार ब्रहम सरोवर को भगवान का ही स्वरुप माना गया है ।

ब्रहमणमीश कमलासनस्थं विष्णुं च लक्ष्मी सहित तथैव
रुद्र च देव प्रणिपत्य मूधर्ना तीर्थ वरं ब्रहमसरः प्रवक्ष्ये
वामन 22/50

सन्निहित तीर्थ के लिए तो पुण्यमय एवं महान वृद्धि दायक अर्थात श्रेष्ठ फल देने वाला बतलाया गया है ।

रन्तुका दौजसचापि पावनाच्य चतुर्मुखम् ।
सरः सन्निहितं प्रोक्त ब्राहमणा पूर्वमेव तू ।
वामन 22/51

देववर विश्वेश्वर में भी पावन सरस्वती है । उसी के निकट यह सरोवर चारों ओर लगभग अर्धयोजन के प्रमाण वाला बतलाया गया है। देववृंद यहां आते हैं ये सभी मुक्ति की कामना पूर्ण करने हेतू एवं दूसरे स्वर्ग लोक की प्राप्ति हेतु इस तीर्थ का सेवन करते हैं:-

विश्वेश्वरा ववरात्पावनी च सरस्वती
सरः सन्निहितं प्रोक्तं समन्तादद्धयोजनम् ।।
वामन । 22/55

एतादिश्रत्य देवाश्रय ऋषयश्रय समागताः
सेवन्ते मुक्तिकामार्थ स्वर्गार्थ चापरे स्थिताः ।
वामन 22/56

ब्रहमणा सेवितंमिदं सृष्टि कामेन योगिना ।
विष्णुना स्थिति कामेन हरि रुपेण सेवितम् ।।
वामन 22/57

रुद्रेण च सरोमध्यं प्रविष्टेन महात्मना ।
सेव्य तीर्थ महात्तेजाः स्थाणुत्व प्राप्तवान्हरः ।।
वामन 22/58

आधेषा ब्रहमणो वेदिस्ततो रामहृदः स्मृतः
कुरुणा च यतः कृष्टं कुरुक्षेत्र ततः स्मृतम् ।।
वामन 22/59

तरन्तु कारन्तुक कर्योर्यदन्तरं यदन्तरं रामहृददस्य पण्चकात्
एतद कुरुक्षेत्र समन्तपंचक पितामहस्योत्तर वेदि रुच्यते ।।
वामन 22/60

प्रजा सृजन हेतु योगिराज ब्रहमा ने इस तीर्थ का सेवन किया । भगवान विष्णु ने भी हरि रुप से जगत की स्थिति हेतु इस का सेवन किया । रुद्रदेव भगवान शंकर ने तो इस सर के मध्य में प्रवेश कर के महान तेजस्वी देव बनकर इस तीर्थ का सेवन किया और तभी तो वे स्थाणुत्व को प्राप्त हुए । यहीं सर्वप्रथम ब्रहमा की वेदि थी फिर इसको रामहृद कहा गया; कुरु के कर्षण के बाद तो इसे कुरुक्षेत्र नाम से ही जाना जाता है । यह समन्तपंचक क्षेत्र कुरुक्षेत्र पितामाह की उतरवेदि थी । सरस्वती महात्म्य वर्णन के अन्तर्गत कुरुक्षेत्र तीर्थ की महिमा का अभूतपूर्व वर्णन हुआ है ।

तत्र सा रन्तुकं प्राप्य पुण्यतोया सरस्वती
कुरुक्षेत्रं समाप्लाव्य प्रयाता पश्चिमां दिशम् ।
तत्र तीर्थसहस्त्राणि ऋषिभिः सेवितानि च ।
तान्यहं कीर्तिमिष्यामि प्रसादा त्परयेष्टिनः ।।
तीर्थानां स्मरणं पुण्यं दर्शन पाप नाशनम ।
स्नानं पुश्यकरं प्रोक्तमपि दृष्कृत कर्मण ।।
ये स्मरिष्यन्ति तीर्थानां देवताः प्रीणयन्ति च ।

स्नान्ति च श्रद्धानाश्रय ते यान्ति परमां गतिम् * ।।
वामन । 33* 2-5

पुण्यमय जल वाली सरस्वती ने कुरुक्षेत्र को सम्पलवित करके पश्चिम दिशा में प्रगाण किया । वहां पर सहस्त्रों तीर्थ हैं जो ऋषियों के द्वारा सेवित हैं । इन तीर्थों का स्मरण करने से महान पुण्य होता है तथा दर्शन से सम्पूर्ण पापों का नाश होता है । जो कोई भी पुण्य तीर्थों का स्मरण करता हे उस पर देवगण परम प्रसन्न होते हैं और जो इन तीर्थो में स्नान करते हैं वे परम गति को प्राप्त करते हैं ।

कुरुक्षेत्र गमिष्यामि कुरुक्षेत्रे वसाम्यहम ।
अप्येतां वाचमुत्सृत्य सर्व पापैः प्रभुच्यते ।।
ब्रहमज्ञान गया श्राद्धं गागृ है मरणं ध्रुवम् ।
वासः पुंसां कुरुक्षेत्रे मुक्तिरुक्ता चतुर्विधा ।।
सरस्वती हषद्धत्योर्द्ध योर्नधोर्यदन्तरम् ।
तं देवनिर्मितं देशं ब्रहमावर्त प्रचक्षते ।।
दूरस्थोऽपि कुरुक्षेत्रं गमिष्यामि वसाभ्यहम् ।
एवं यः सततं वूयात्सोऽपि पापैः प्रमुच्येत ।।
तत्रैव च वसन्धीरः सरस्वत्यास्तटे स्थितः ।
तस्य ज्ञानं ब्रहममयं भविष्यति न संशयः ।।
देवता ऋषयः सिद्धा सेवन्ते कुरुजाङ्गलम् ।
तस्य संसेवनान्नित्य ब्रहम यात्मनि पश्यति ।।
वामन नं() 33/8-12

मैं कुरुक्षेत्र जाउंगा-ऐसी ही वाणी यदि कोई पुरुष कह देता है तो इतने कहने से ही वह सब पापों से मुक्त हो जाता है । ब्रह्म के स्वरुप का ज्ञान प्राप्त कर लेना, गया तीर्थ में जाकर पितरों का श्राद्धतर्पण करना, गोगृह में मृत्यु प्राप्त करना एवं कुरुक्षेत्र में निवास करना-चार प्रकार की मुक्ति बतलाई गई । सरस्वती और दृषद्धती इन दोनों नदियों का जो अन्तर भाग है वही ब्रहमावर्त कहा जाता है । दूर प्रदेश में रहने वाला भी मैं कुरुक्षेत्र जाउंगा और वहां पर निवास करुगा इस प्रकार जो निरन्तर बोला करता है वह सब पापों से मुक्त हो जाता है । जो धीर पुरुष सरस्वती नदी के तट पर स्थित इस क्षेत्रत्र में रहता है उसे निश्चय ही ब्रह्मज्ञान हो जाता है । इसमें लेशमात्र भी सन्देह नहीं । देवगण, ऋषिवृन्द, और सिद्ध लोग कुरुजाङ्गंल का सेवन करते हैं । उसके भली भांति सेवन से पुरुष नित्य ही अपनी आत्मा में ब्रह्म का दर्शन किया करता है ।

ब्रह्मवेदि कुरुक्षेत्र पुण्यं सन्निहित सरः ।
सेवमाना सरा नित्यं प्राप्नुवन्ति परं पदम् ।।

धर्मक्षेत्र कुरुक्षेत्र

ग्रह नक्षत्र ताराणां कालेन पतनाभद्‌यम् ।
कुरुक्षेत्र मृतानां च पतनं नैव विधते ।।
वामन । 33/15–16

ब्रह्मवदि कुरुक्षेत्रत्र एवं पुण्य सर सन्निहित का सेवन करते हुए मनुष्य नित्य परम पद को प्राप्त करते हैं । ग्रह, नक्षत्र तारागण इत्यादि का समय आने पर पतन संभव है किन्तु कुरुक्षेत्र में प्राण त्यागने वाले का कभी पतन नहीं होता ।

स्नानतीर्थमहात्म्य वर्णन के अन्तर्गत भी उल्लेख है–
स्नानत्वा Sभिगम्य तत्रैच महापातकनाशन् ।
कुरुक्षेत्रस्य तदद्धारं विश्रुतं पुण्यवर्धनम् ।।
वामन 24/40

अर्थात कुरुक्षेत्र द्वार पुण्यों की वृद्धि करने वाला है । वहां स्नान एवं अभिगमन (निवास) से महापातकों का नाश हो जाता है ।

वामन पुराण में वर्णित तीर्थ स्नान एवं उनके आधुनिक नामः–

सर्पिवधि	सफीदों	पंचनद	पाजु
वाराह	वराह	अश्वनी	आसन
भूतेश्वर	भूतेश्वर	सोमनाथ	सोमनाथ
सालुकि	शिलाखेड़ी	ज्वालामालेश्वर	ज्वालमाला
जिमनी	जींद	पुष्कर	पोखर खेड़ी
रामह्रद	रामराय	अवन्तिनगर	अग्रोहा
लोकोद्धार	लोधर	कपिलह्रद	कलायत
ब्रहमावर्त	वहिरगांव	सीतावन	सीवन
आपगा	आपगा	कपिस्थल	कैथल
त्रीविष्टम्	टयोढा	फलकिवन	फल्गु
		अरुनसरस्वती	अरुणाय
सप्तसारस्वत्	सांच	वंशभूल	बरसोला
एकहंस	ईक्कश	स्थाणेश्वर	थानेसर
कालेश्वर	कालूसर	श्रीतीर्थ	कसीन
कायशोधन	कसून	सुतीर्थ	सूथ
सांगनी	सजूमा	पुण्डरीक	पूण्डरी
मानरा	मानस	हनुमनस्थान	सारसा
रानावर्तन	रसीना	काम्यक	कमोदा
औसनस	ओगंद	सन्निहित	सनेत

धर्मक्षेत्र कुरुक्षेत्र

पृथुदक	पेहोवा	शालूकिनी	शालवण
गवेन्द्र	गोन्दर	अदिति	अमीन
कपिस्थल	कैथल	रारकतीर्थ	शेरगढ़
कलसीतीर्थ	कसीग्राम	मुदित	मुवाणा
केदारतीर्थ	क्योड़क	पवनह्रद	पपनावा
कोटितीर्थ	क्रोड़ा	वामनतीर्थ	बरराणा
मधुवन	मोहना	अनरक	नरकातारी
लोकुलातारण	कौल		

****

ब्रह्मणपुराण में वर्णित कुरुक्षेत्र

विभिन्न पुराणों के अन्तर्गत पुराणों की दी गई सूचि में थोड़ा बहुत भेद देखने में आता है । किन्तु ब्रह्मपुराण को सभी लेखकों ने प्रथम लेखकों ने प्रथम स्थान दिया है। इस का कारण वस्तुतः यही समाचीन लगता है कि यह समस्त विश्व ब्रह्मा से ही उद्‌भूत है इसीलिए सर्वप्रथम इसी का वर्णन करना उचित है। ब्रह्म पुराण के तीर्थ वर्णन में भी कुछ विशेषता है। इनमें जिन कपोत तीर्थ, पैशाच तीर्थ, सुधा तीर्थ चक्रतीर्थ गणिका संगम, अहिल्या संगम तीर्थ, श्वेत तीर्थ वृद्धावस्था तीर्थ ऋणमोचन तीर्थ, सरस्वती संगम तीर्थ खेती संगम तीर्थ, आदि का उल्लेख है वे किसी अन्य पुराण में नहीं मिलते । ब्रहमपुराण में सर्वप्रथम स्वयंभू ब्रह्मर्षि संवाद वर्णन के अन्तर्गत कुरुक्षेत्र धर्मक्षेत्र का परिचय प्राप्त होता है। मुनिगणों के पूछने पर कि इस पृथ्वी पर सब से उतम भूमि कौन सी है जो धर्म अर्थ काम और मोक्ष इन चारों को देने वाली है। और सर्वोतम तीर्थ कौन सा हैः–

लोमहर्षण जी कहते हैं–हे मुनिवरों यह उतम भूमि कुरुक्षेत्र में आसीन हैः जहां पर बुद्धिमानों में श्रेष्ठ महान ग्रन्थ के रचयिता समस्त शास्त्रों के मनीपी विद्वान सब प्राणियों के हित करने वाले पुराणों एवं आगमों के प्रवक्ता, वेदों और वेदांगों के रचयिता पाराशर मुनि के सुपुत्र श्रीवेदव्यास जी, जिस आश्रम में निवास करते है अर्थात व्यासवन ही उतम भूमि है। यहा पर व्यास आश्रम स्थित है एवं उनके दर्शन हेतु असंख्य मुनिगण प्रीति एवं श्रद्धापूर्वक वहां निवास करते हैंः–

कुरुक्षेत्र रामासीनं ब्यासं मतिमतां वरम् ।
महाभारत कर्तारं सर्वशास्त्र विशारदम् ।।
ब्रह्मपुराण 18/6

ब्रह्मपुराण में भारत वर्ष वर्णन के अन्तर्गत पुण्य तोया सरिताओं में गंगा, सरस्वती, सिन्धु एवं चन्द्रभागा का वर्णन हुआ है। ये सब सरिताएं शीतल जल वाली, पुण्यमयी एवं हिमालय के पादों से समुत्पन्न हुई हैं ।

सर्व्वा पुण्या सरस्वत्यः सर्वा गंगां सभुद्रगा
गंगा सरस्वती सिन्धु चन्द्रभागा तथा परा ।।

ब्रह्मपुराण 19/25

ये सभी नदियों विश्व की मातायें हैं तथा सब पापों का हरण करने वाली हैं।

विश्वस्य मातरः सर्व्वा सर्व्वा पापहरा स्मृताः
ब्रह्मपु० 19/39

कृष्ण स्नान महात्म्यवर्णन के अन्तर्गत कुरुक्षेत्र महिमा की तुलना श्री कृष्ण दर्शन से कुछ इस प्रकार की गई है:—

गंगाद्वारे कुरुक्षेत्रे स्नानदानेन यत्फलम् ।
दृष्टवा नदो व मेत्कृष्णं तत्फलं दक्षिणामुखम् ।।
ब्रह्मपु० 32/87

अर्थात् गंगा द्वार में कुक्षेत्र में स्नान करने तथा दान देने से जो फल मिलता है वही पुण्य फल दक्षिणाभमुख श्री कृष्ण के दर्शन से प्राप्त होते हैं ।

ग्रस्ते सूर्य कुरुक्षेत्रे स्नान दानेन यत्फलम्।
दृष्टवा नरो नमेत्कृष्ण तत्फलं दक्षिणामुखम् ।।
ब्रह्मपु० 32/92

कुरुक्षेत्र में सूर्यग्रहण के अवसर पर स्नान एवं दान का जो फल मिलता है ठीक वैसा ही फल दक्षिणाभिमुख श्री कृष्ण के अवलोकन से होता है।

सर्वतीर्थ माहात्म्य वर्णन के अर्न्तगत कुरुक्षेत्र, प्रयाग एवं पुष्कर को महान तीर्थ बतलाया गया है—

इन्द्रियावि वशं कृत्वा यत्र यत्र वसे० नरः ।
तत्र तत्र कुरुक्षेत्र प्रयांग पुष्कर तथा ।।
ब्रह्म 17/6

****

नारद पुराण में वर्णित कुरुक्षेत्र

मथुरा द्वारका विप्रा नर नारायणयम् ।
कुरुक्षेत्र नर्मदा च क्षेत्रं श्री पुरुषोतम ।।
न० पु० नारद सनक संवाद । 62

अर्थात मथुरा, द्वारिका, बदरिकाश्रम्, कुरुक्षेत्र, नर्मदाक्षेत्र तथा श्री पुरुषोतम क्षेत्र आदि परम पवित्र स्थल हैं । इन सब तीर्थो पर उत्तम पुराणों का पठन एवं श्रवण किया जाता है। इन तीर्थो पर शास्त्र श्रवण एवं पठन मात्र से ही घोर संसार रुपी सागर से प्राणी मुक्त हो जाया करता है।

जिस प्रकार अन्य समस्त व्रतों में एकादशी का व्रत, सब सरिताओं में भागीरथी श्री गंगा जी, सम्पूर्ण वनों में वृन्दावन, समस्त क्षेत्रों में कुरुक्षेत्र सब पावन पुरियों में कांशीपुरी, सम्पूर्ण अन्य तीर्थो में मथुरा एवं पवित्र सरोवरों में पुष्कर अत्याधिक श्रेष्ठ है– उसी प्रकार नारद पुराण अन्य समस्त पुराणों में श्रेष्ठ हैः–

एकादशी व्रतानां च सरिता जाहनवी यथा
वृदावनपरण्यां क्षेत्राणां कौरव यथा।।
ना० सनक संवाद । 64

गंगा माहात्म्य वर्णन के अन्तर्गत भी उल्लेख मिलता हैः–

कृते तु सर्व तीर्थानि त्रेत्रायां पुष्कर परं ।
द्वापरे तु कुरुक्षेत्रे कलौ गंगा विशिष्यते ।।

सतयुग में सभी तीर्थ फलदायक होते हैं, त्रेता में पुष्कर, द्वापर में कुरुक्षेत्र एवं कलियुग में गंगा श्रेष्ठ हैं इस प्रकार न केवल कलियुग में अपितु द्वापर में भी कुरुक्षेत्र को यज्ञभूमि पुण्यभूमि माना गया है। क्यूंकि आदि काल से इसे तपोभूमि कहा गया है। नेमिषारण्य, कुरुक्षेत्र, नर्मदा तथा पुष्कर तीर्थ में स्नान, स्पर्श एवं सेवन करने से मनुष्य के सभी पाप नष्ट हो जाते हैं । गंगा जी में चाहे जहां स्नान किया जाए वह कुरुक्षेत्र के समान पुण्यदायक होता है। ऐसी धारणा अब भी प्रचलित है कि कुरुक्षेत्र में मृतप्राणी के फूल बाहर नहीं जाते ।

नारदपुराण में फलगू तीर्थ का भी वर्णन इस प्रकार मिलता हैः–

फल्गुतीर्थे विष्णु जले करोमि स्नानमश्रतै ।
पितृणां विष्णु लोकाय मुक्ति युक्ति प्रसिद्ध ये ।।

जिस फल्गु के जल रुप में स्वयं भगवान विष्णु उपस्थित हों उसमें मैं स्नान करता हूँ जिस से पितरों को विष्णु लोक की और मुझे सांसरिक भोगों से मुक्ति प्राप्त हो। ऐसा उल्लेख मिलता है कि फल्गूतीर्थ में स्नान के बाद शिवंलिंग रुप में स्थित ब्रह्मा जी को नमस्कार करना चाहिए ।

नमः शिवाय देवाय ईशान पुरुषाय च ।
अघोर वाम देवाय सधोजाताय शम्यवै ।।

अर्थात ईशान तत्पुरुष अधोर, वामदेव तथा सयोजात इन पांच नामों से प्रसिद्ध भगवान शिव को नमस्कार है। फलगु तीर्थ में स्नान करके गदाधर भगवान का दर्शन करके नमस्कार करने वाला मनुष्य अपने पितरों के साथ बैकुण्ठ में जाता है । भगवान गदाधर के दर्शन का मन्त्र है:–

ऊं नमों वासुदेवाय नमः सकर्षणाय च ।
प्रधुभ्नाया निरुद्वाय श्री धराय च विष्णवे ।।

इसी प्रकार ब्रह्म सरोवर में स्नान एवं उसके साथ प्रकट होने वाले आम्र वृक्ष को सींचने से पितरों को मोक्ष प्राप्त होता है :–

आम्र ब्रहमसरोद भूतं सर्वदेव मयं विभुम् ।
विष्णु रुपं प्रसित्यामि पितृणा येव मुक्तये ।।

कुरुक्षेत्र तीर्थ के समान भूलोक में कोई पवित्र भूमि नहीं है। इस चालीस कोस भूमि की बारह बारयात्रा कर लेने से पुनर्जन्म नहीं होता।

कुरुक्षेत्रं सम तीर्थ न भूतं न भविष्यति ।
तत्र द्वादश यात्रास्तु कृत्वा भूययो न जन्मभाक ।।

नारद पुराण में वर्णित विभिन्न तीर्थों का विवेचन "कुरुक्षेत्र के अन्य तीर्थ" अध्याय के अन्तर्गत किया गया है।

भविष्यपुराण में वर्णित कुरुक्षेत्र

भविष्यपुराण के प्रतिसर्गपर्व तृतीय खण्ड में 32 अध्याय है इसे अग्निखण्ड़ भी कहा जाता है। इसमें भविष्यकाल के वैवस्वत मन्वन्तर के 28 वे द्वापर में कुरुक्षेत्र में हुए कौरव पाण्डव का संक्षिपत रुप युद्ध वर्णन किया गया है –

भविष्यारण्ये महाकल्पे प्राप्ते वैवस्वते उन्तरे।
अष्टाविशं द्वा परान्ते कुरुक्षेत्र हरणों भवत् ।।
भविष्य । 3/3/14

युद्ध के बाद 18 वें दिन भगवान कृष्ण ने योगेश्वर शिव की स्तुति की । साथ ही साथ पाण्डवों की रक्षा के लिए प्रार्थना की । भगवान शंकर नदी पर सवार होकर रक्षा हेतु पाण्डवों के शिविर में त्रिशूल लेकर खड़े हो गये । आधी रात में वहां अश्वत्थामा आया । भगवान शंकर को रक्षक के रुप में देखकर चिन्तित हो गया । फिर संभल कर भगवान कृष्ण की आराधना हेतु नतमस्तक होकर उन्हें प्रणाम किया। उनकी स्तुति की। आसुतोष इतने में ही प्रसन्न हो गये एवं उसे वरदान रुप में एक दिव्य तलवार दे बैठे । वह उस तलवार से धृष्टद्युम्न आदि महारथियों की हत्या कर अपने इष्ट स्थान को चला गया ।

पाण्डवों को हस्तिनापुर में जब इस वृन्तात का पता चला तो वे सब क्रोध में आपे से बाहर हो गए । भीम तो क्रोध वश मूर्च्छित ही हो गये। होश आने पर सभी हथियार लेकर शिवजी की ओर भागे और प्रहार करने लगे: किन्तु वे सभी अस्त्र भगवान शंकर के शरीर में विलीन हो गये। इस प्रकार शंकर जी ने उन्हें कलियुग में पुनः जन्म लेने का शाप दिया । इसी अभिशाप स्वरुप वे आल्हा ऊदल के रुप में वत्सराज के घर उत्पन्न हुए । इनमें युधिष्ठिर बलखानि हुए जो शिरीषपुर के निवासी थे । आल्हा ये इस का नाम मलखान है भीम ने जो बहुत दुर्वचन कहे थे, वीरणनाम से जन्म लिए । अर्जुन परिभल के पुत्र ब्रह्मानन्द हुए एवं नकुल लक्ष्मण तथा सहदेव देवसिंह के नाम से उत्पन्न हुए । धृतराष्ट्र के अंश से पृथ्वीराज हुए जो अजमेर के शासक थे कर्ण–तारक के रुप में उत्पन्न हुए ।

शंकर जी के शाप को सुनकर भगवान कृष्ण ने हंसकर कहा– कि पाण्डव मेरे भक्त हैं अतः मैं भी इन की रक्षा हेतु अवतार धारण करुगा । मेरा नाम उस समय आहलाद होगा । आल्हा के रुप में मैं अग्निवंशीय राजाओं की हत्या कर कलियुग को सीमित रखूंगा ।

विक्रमादित्य के शासन काल के अन्तर्गत भारत में 18 राष्टों का विभाजन दिखाई देता है। उस समय इन राष्टें का विभाजन इस प्रकार था– पांचाल, कुरुक्षेत्र, इन्द्रप्रस्थ, कांपिल, अन्तर्वेदी, वृजवीथी, मरुदेश अथवा मरुधन्व, गुर्जर अथवा सौराष्ट् आनर्त, महाराष्ट्, द्राविड़, कलिंग, आवन्त्य उडुपगा, अडुपी (यह तमिल नाडू के मंगलूर जिले में है)

बंगगोड (बंगलादेश) मगध, महाकौशल (मध्यप्रदेश) अजमेर (राजस्थान) एवं रोम (वर्तमानरोम) आते हैं ।

इन्द्रप्रस्थं च पान्चालं कुरुक्षेत्रं च कापिलम
अन्तर्वेदी ब्रजर्थ्य वाजमेरं मरुधन्व च ।
गोर्ज्जर च महाराष्ट्‌ द्राविड़ च कालिंगम्
आवत्यर्य चौडुप बंग गौड़ मागधमेवच
कौसव्यं च तथा रोमं तेपां राजा पृथक पृथक
भविष्य 13/3/2

भविष्यपुराण का यह भी कथन सत्य है कि 18 राज्यों में अलग अलग 18 भाषायें थी । इन भाषाओं में हिन्दी, पंजाबी, गुजराती, महाराष्ट्री मराठी तामिल, कन्नड़ उडिया, बंगला तैलगु आदि प्रमुख हैं ।

भविष्यपुराण के 125 वें अध्याय के अन्तर्गत सूर्य एवं चन्द्र ग्रहण के स्नान का विधान है। इसमें भी सप्तमृतिका, दंसोषधि एवं पंचगण्ययुक्त तीर्थ जल मिश्रित घड़ों में चन्दन, कुंकुम, इतर, खस आदि मिलाकर स्नान करना चाहिए । और इन्द्र, सूर्य,चन्द्र, वरुण, शिव विष्णु आदि के स्तोत्र को पढ़ना चाहिए । इनके पढ़ने से एवं स्नानादि से सभी पाप, ताप, अनिष्ट ग्रहपीड़ा दूर हो जाती है । ऋग, यजु एवं सामवेद के मन्त्रों से स्नान कर, शुक्ल वस्त्र चंदन पुष्पमाला आदि धारण कर लेना, देवता एवं ब्राहमण को भोजन दान इत्यादि से प्रसन्न करना चाहिये । सूर्यग्रहण में सूर्य का नाम एवं चंद्रग्रहण में चन्द्र के नाम का उल्लेख कर मंत्र पाठ करना चाहिए ।

इस प्रकार का आचरण करने पर मनुष्य को किसी प्रकार का गृह क्लेश, धन जन की हानि, आदि व्याधि की पीड़ा नहीं होती । उसे सुख सिद्धि एवं मुक्ति की भी प्राप्ति हो जाती है।

इस प्रकार विभिन्न पुराणों में पुण्यभूमि कुरुक्षेत्र की महिमा का यशोगान समृद्ध रूप में हुआ है । जिस प्रकार भगवान कृष्ण ने गीता के दसवें अध्याय में प्रत्येक सर्वश्रेष्ठ वस्तु को ईश्वरीय विभूति बतलाया है उसी प्रकार पुराणों में कुरुक्षेत्र को समस्त तीर्थ क्षेत्रों में वरिष्ठ कहा गया है । सरोवरों में मानसरोवर एवं धर्मनियमों में सत्य पालन को सर्वोपरि बतलाया गया है ।

ब्रह्माडंपुराण में भी कुरुक्षेत्र को धर्मक्षेत्र कहा गया है
धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे दीर्घसत्रस्तु ईजिरे
नधास्तीरे हपदवत्याः पुण्यायाः शुचिरोधसः

वायु पुराण के प्रारम्भ में भी कहा गया है कि असीम कृष्ण के राज्य में कुरुक्षेत्र में शौनकादि का यज्ञ हो रहा था। उसमें मुनि लोमहर्षण ने यह पुराण सुनाया। आगे चलकर शौनक के किसी वंशज ने अपनी कुल, परम्परा के अनुससार कुरुक्षेत्र धर्मक्षेत्र में "सत्र" नाम का महायज्ञ आरम्भ किया। इस प्रकार महाभारत काल से ही कुरुक्षेत्र तपोभूमि एवं धर्मभूमि मानी गई है, इसमें तनिक भी सन्देह नहीं।

असीम कृष्णे विक्रान्ते राज्येSनुपमत्विषि
प्रशसती मां धर्मेण भूमि भूमिष सप्तये
वायुपुराण 10/11

नारदपुराण में भी उल्लेख मिलता है कि कुरुक्षेत्र भूमि के तीर्थो के समान शुभ एवं अभ्युदय तीर्थ भूतल पर नहीं है जहां मृत्यु होने पर सदाचारी वा दुराचारी सभी स्त्री पुरुष मुक्त हो जाते हैं। तभी जावालआदि श्रुति स्मृतियों में इस भूमि को मोक्ष भूमि लिखा है–

कुरुक्षेत्रसमं पुण्यं नान्यद भुविशुभावहम्।
साचारी वाप्यनाचारी यत्र मुक्ति भवाप्नुयात् ।।

सूर्यग्रहण और कुरुक्षेत्र

भारत समृद्ध परम्पराओं का देश है। हमारे देश में जहां अत्याधिक भिन्नताएं हैं वहां इन भिन्नताओं को एकता में पिरोने के प्रयास भी हुए हैं । भारत के प्रमुख तीर्थ स्थल एवं विभिन्न मेले, अनेकता में एकता ढूंढने का ही प्रयास करते रहे हैं । अत्यन्त प्राचीन काल से ही इन मेलों की परम्परा रही है। हमारे ऋषि मुनियों ने भारत की धार्मिक भावनाओं को ध्यान में रखते हुए ही विशेष पर्वों पर मेलों का आयोजन करने की परम्परा का सूत्रपात किया । परिणामस्वरुप आज भी मेंलों में अपार जनसमुदाय असीम उत्साह एवं उमंग तथा श्रद्धा के साथ उमड़ता दिखाई पड़ता है ।हमारी विभिन्न भाषाएँ, विभिन्न धार्मिक रीतिरिवाज हैं, विभिन्न संस्कृतियां हैं, विभिन्न आकृतियां है, विभिन्न वेशभूषा है, किन्तु हमारी आस्था एक है। हमारी धार्मिक एवं सांस्कृतिक विरासत एक है। सनातन धर्म अनादि है, सत्य है अडिग एवं अचल है। इसी धार्मिक एकता के कारण काशमीर से कन्याकुमारी तक जहां भी हमारे धार्मिक मेंलों का आयोजन होता है, वहां करोड़ों की संखया में श्रद्धालू जन अनेक दिनों तक हजारों मील दूर, अपने घरों से दूर, इष्ट मित्रों सहित धार्मिक अनुष्ठान करते हैं । महापुरुषों की सत्संगति से उनके विचारों को हृदयसात करते हैं एवं तीर्थ स्नान, ध्यान, दान इत्यादि शुभ कर्मो से अपने जीवन में पुण्य लाभ प्राप्त करते हैं ।

सूर्यग्रहण क्यों और कैसे लगता है और इसका प्राणियों पर क्या प्रभाव पड़ता है इसके सम्बन्ध में विचार करना है। सूर्यग्रहण लगने के सम्बन्ध में विभिन्न विद्धानों तथा वेज्ञानिकों के विभिन्न मत हैं:-

वैज्ञानिक मतः-

सूर्य की कक्षा के नीचे चन्द्र की कक्षा है, अमावस्या के दिन सूर्य और चन्द्र एक ही राशि में रहते हैं । मेघ के सूर्य किरण को आच्छादित करने से जैसे सूर्य नहीं दीख पड़ता वैसे चन्द्र द्वारा आच्छादित सूर्य भी पृथ्वीवासियों से छिपा रहता है।

चन्दमण्डल द्वारा सूर्य के ऐसे ही आच्छादन का नाम सूर्यग्रहण है। सूर्य की गति से चन्द्र की गति अधिक होती है । चन्द्र पश्चिम दिशा से जाकर के क्रमशः सूर्य के निकट पहुंच कर उसको ढॉप लेता है। इसी से सूर्यग्रहण पश्चिम दिशा को स्पर्श होता है । चन्द्र की गति अधिक होने से चन्द्रमण्डल शीघ्र ही उसको अतिक्रमण करके पूर्व की ओर सरक जाता है अतः सूर्य ग्रहण में पूर्व दिशा में ही मोक्ष होता है।

पौराणिक मतः-

मद्भागवत पुराण में समुद्र मंथन का उल्लेख आता है इसी प्रसंग में हमें सूर्यग्रहण लगने के कारण का भी वर्णन मिलता है । इसमें वर्णित कथा के अनुसार जब देवताओं द्वारा समुद्र मंथन हुआ तो समुद्र से अन्य वस्तुओं के साथ साथ अमृत कलश भी निकला जिसे देवताओं ने आपस में बांटने का निर्णय लिया। भगवान विष्णु ने मोहिनी रुप धारण करके देवताओं में अमृत बांट दिया । राहू नामक असुर वेष बदल कर देवताओं की पंक्ति में जा बैठे और अमृतपान कर लिया। सूर्य और चन्द्रमा ने राहू को पहचान लिया और उन्होंने यह बात भगवान विष्णु को बतला दी । इस पर भगवान विष्णु ने राहू का सिर सुदर्शन चक्र से काट दिया अमृत पीने के कारण वह दो भागों में बट गया तथा राहू व केतु के नाम से अमरत्व को प्राप्त हुआ। इस प्रकार राहू सूर्य व चन्द्र को ग्रस्ता है तो उन्हें ग्रहण लग जाता है । राहू बिना धड़ के होने से सूर्य चन्द्र के मुख में प्रवेश कर दूसरी ओर निकल जाता है।

कुरुक्षेत्र में सूर्यग्रहण का महत्व :-

अब यह प्रश्न स्वाभाविक ही है कि कुरुक्षेत्र में सूर्यग्रहण का इतना महत्व क्यूं है जब कि ग्रहण तो भारतवर्ष के अन्य भागों में भी दिखाई पड़ता है। कुरुक्षेत्र में ऐसा कौन सा दिव्य आकर्षण है जिसे लेकर द्वापर, त्रेता व कलियुग में इस अवसर पर लाखों श्रद्धालू वशीभूत होकर कुरुक्षेत्र में खिंचे चले आते हैं । गंगा जमुना जैसी पवित्र नदियों में भी स्नान किया जा सकता है किन्तु फिर भी अनादिकालसे न केवल ऋषि, मुनि विद्वान एवं संत महात्मा ही इस अवसर पर कुरुक्षेत्र आते हैं वरन पुराणों के अनुसार तो स्वयं ब्रहमा, विष्णु श्रीरामचन्द्र जी भी इस पुण्य भूमि पर पधारे हैं एवं सूर्यग्रहण के अवसर पर यहां नानाविधि से दान, यज्ञ एवं स्नान द्वारा सुशोभित हुए हैं ।

प्रायः सभी विद्वानों ने सूर्यग्रहण का पर्व कुरुक्षेत्र में अति उतम माना है। स्वयं भगवान श्रीकृष्ण ने श्रीमद्भगवद्‌ गीता में इसे धर्मक्षेत्र की संज्ञा दी है। वेदमन्त्रों का उच्चारण सर्व प्रथम यहीं पर हुआ। पितामह ब्रह्मा ने, विश्वमित्र आदि ऋषियों ने यहां अनेकों यज्ञ किये । विश्वप्रसिद्ध ऋगवेद महाभारत एवं अन्य पुराणों की रचना यहीं पुण्यसलिला सरस्वती के पावन तट पर हुई । महाराज कुरु ने इसे पुण्यभूमि मान कर ही यहां बार बार कर्षण किया। न्याय एवं धर्म की भूमि मानकर ही भगवान ने महाभारत युद्ध यहीं लड़ने का निर्णय लिया ।

श्रीमद्भागवत पुराण के दशम स्कन्ध में लिखा है कि महाभारत युद्ध से पूर्व सूर्यग्रहण के अवसर पर भगवान श्रीकृष्ण सभी यदुवंशियों सहित द्वारिका से कुरुक्षेत्र पधारे थे। इस समय दूर-दूर के देश विदेश के सभी राजा महाराजा भी यहां एकत्रित हुए थे और सूर्यग्रहण के अवसर पर सभी ने स्नान पूजा पाठ तथा अन्य धार्मिक अनुष्ठान किए । मतस्यपुराण में उल्लेख आया है--

धर्मक्षेत्र कुरुक्षेत्र

"कुरुक्षेत्रे महापुण्यं राहु ग्रस्त दिवाकरे"

सूर्यग्रहण के अवसर पर कुरुक्षेत्र सेवन महापुण्यदायी है। सूर्यग्रहण के अवसर पर कुरुक्षेत्र के पवित्र सरोवरों में जो स्नान करते हैं । उन्हें एक हजार अश्वमेघ यज्ञ का फल प्राप्त होता है ।
वायुपुराण में भी कहा गया है--

कुरुक्षेत्र में सूर्यपर्व के समय दी गई दान दक्षिणा उतरोतर तेरह दिन तक तेरह गुणा बढ़ती है। देवी पुराण में तीर्थ प्रशंसा प्रकरण के अन्तर्गत उल्लेख है कि गंगा, कनखल, प्रयाग पुष्कर आदि सभी तीर्थ पवित्र पुण्यमय हैं और कुरुक्षेत्र में ब्रहमसर सन्निहित आदि बहुत पवित्र हैं।

ज्योतिष एवं गणित विधा के अनुसार भी सूर्य ग्रहण का महत्व कुरुक्षेत्र में प्रसिद्ध हो चुका है।
पृथ्वी की तुलना मनुष्य के शरीर से की गई है।

हिमालय के शिखर को सिर, दाएं बाएं प्रदेशों को भुजाए एवं कुरुक्षेत्र को पृथ्वी माना गया है।

सिद्धान्त शिरोमणि में उल्लेख हुआ है कि जो रेखा लंका और उज्जियनी में से होकर कुरुक्षेत्र आदि देशों का स्पर्श करते हुए मेरु में जाकर मिलती है उसी भूमि को मध्यरेखा कहते हैं इसीलिए कुरुक्षेत्र पृथ्वी का प्राण (प्रधान) प्रदेश है।

चन्द्रमा का संबंध मन से तथा सूर्य का संबंध हृदय से होता है। प्राण शक्ति का स्त्रोत सूर्य है अतः सूर्य शक्ति से वांछित होने पर पृथ्वी को निरन्तर मिलने वाली प्राण शक्ति में बाधा उत्पन्न हो जाती है। अतः सूर्यग्रहण के अवसर पर सांसारिक कार्य, छोड़कर पूजा पाठ ईश्वर स्मरण में, धार्मिक कार्यों में प्रवृत रहना चाहिए ।

कहते हैं कि सूर्यग्रहण के अवसर पर जो प्राणी कुरुक्षेत्र आकर तप दान तीर्थ स्नान करता है उन्हें हृदयरोग का भय नहीं रहता और उन्हें ग्रहण दोष भी नहीं लगता ।

वामनपुराण के अनुसार सूर्यग्रहण होते समय स्नान सिन्नहित में, उपरान्त शुद्ध स्नान ब्रहमसर में और फिर स्नान स्थाणु तीर्थ में करना चाहिए यह क्रम पूर्ण फलप्रद है। श्रीमदभागवत के अनुसार बलराम जी इन सब तीर्थों में स्नान के बाद बद्रिकाश्रम गये थे। सिख गुरुओं में श्रीगुरुनानक देव जी एवं गुरुगोविंदसिंह जी भी यहां सूर्यग्रहण के अवसर पर स्नान करने आये थे ।

पवित्र कुरुक्षेत्र भूमि में किया हुआ इष्ट–वापी, कूप तड़ाग मंदिरादि निर्माण पूर्वतप होमदान आदि पुण्य कर्म अक्षय फल से देने वाले हैं । लिखित स्मृति में लिखा है – यस्मृति में भी ऐसा ही उल्लेख आया हैः–

"इष्टेन लभते स्वर्ग पूर्व तो भो क्षमाप्नुयात्"

मन्दादो च युगादौ च ग्रहणे चन्द्रसूर्ययोः
महापाते च संक्रान्तौ पुण्ये चाप्यन्यवासरे ।
स्नातस्तत्र कुरुक्षेत्रे फलानन्त्यम वाप्नुयात् ।।

अर्थात मन्ततर तथा युगादि में चन्द्र सूर्य ग्रहण में व्यातिपात योग में मेपादि संक्रातियों में अमावस्या पूर्णिमादि तिथियों में किया हुआ कुरुक्षेत्र भूमि में स्नान और दान अनन्त फलदायक होता है।
वायुपराण में भी लिखा है–– सर्वस्थापित हि दानस्य संख्या वै प्रोतेम्य बुधै । कुरुक्षेत्रे चन्द्र सूर्यग्रहे संख्या न विधते । पथमपुराण एवं मतस्य पुराण में भी ऐसा लिखा है कि इन दोनों ग्रहणों के समय दान देना अत्यन्त पुण्यजनक है ।

यदयद ददाति यस्तत्र कुरुक्षेत्रे रविग्रहे ।
ततदेव सदाप्नोति नदो जन्मनि जन्मनि ।।

सूर्यग्रहण के अवसर पर कुरुक्षेत्र भूमि के तीर्थो में जो दान पुण्य किया जाता है वह जन्म जन्मान्तर तक प्राप्त होता है । वायुपुराण में तो यहां तक कहा गया है कि कुरुक्षेत्र कृतं त्रयोदश गुणं भव्रेत अर्थात कुरुक्षेत्र भूमि में किया हुआ स्नान दान हवन भजन पूजन तेरह दिन तक तेरह गुणा बढ़ता है।
सूर्यग्रहण का स्वरुप स्कन्दपुराण में इस प्रकार किया गया है–––

राहुरादित्य बिम्बस्यि धास्तातिष्ठति भामिनि ।
अमृतार्थी विमानस्यो यावत्सस्त्रवतेऽमृतम् ।।

अर्थात अमृतापान की इच्छावाला राहु, सूर्य मण्डल के नीचे आता है। सूर्य को अंधकाराछन्न कर देता है, और तब तक ठहरता है (ग्रहण होता है) जब तक सूर्यमण्डल से अमृतस्त्रवण नहीं होता ।
सूर्यग्रहण का वर्णन ऋगवेद में भी आया हैः–

यं सूर्य स्वर्भानुः तमसा विध्यदासुरः

शतपथ ब्राहमण में भी "स्वर्भानुः सूर्य तमसा विण्यध" ऐसा आलेख मिलता है।
निपेधः सूर्यग्रहण में तीन पहर पहले और चन्द्र ग्रहण में ढाई पहर पहले भोजनादि नहीं करना

चाहिए । यथाशक्ति स्नान दान हवनादि करें । शुद्ध स्नान कर यज्ञोपवीत भी बदलना चाहिए ।

मेला सूर्यग्रहण में राजकीय व्यवस्था एवं योगदानः-

मेला सूर्यग्रहण हरियाणा सरकार द्वारा प्रान्तीय मेला घोषित किया गया है। राज्य सरकार की ओर हसे जिला प्रशासन समुचित ढंग से इस महानपर्व पर व्यापक प्रबन्ध करता है ताकि आने वाले यात्रिगण सुविधापूर्वक स्नान कर सकें । मेलाप्रशासन द्वारा यात्रियों की सुख सुविधा हेतु व्यापक एवं समीचीन प्रबन्ध किए जाते हैं । पवित्र सरोवरों में स्वच्छ जल भर दिया जाता है । पवित्र सरोवरों के चारों ओर चार फूट की गहराई तक सीढ़िया बनी हुई है । जिसके बाद सुरक्षा अवरोध लगाये जाते हैं। क्यूंकि इन से आगे पानी की गहराई लगभग 15 हैं । गहरे पानी में नौकायें एवं मोटर नौकायें भी रखी जाती हैं । तैराक भी तैनात किये जाते हैं ताकि किसी प्रकार की दुर्घटना की सूरत में डूबते हुओं को बचाया जा सके । यात्रियों के ठहराव, यातायात खान पान की भी उचित व्यवस्था की जाती है । रेल विभाग की ओर से विशेष गाड़ियों एवं नियमित गाड़ियों में भी अतिरिक्त सवारी डिब्बे लगाए जातें हैं । हरियाणा परिवहन की लगभग 1200 अतिरिक्त बसें यातायात के लिए उपलब्ध रहती हैं ।

पूरे मेला क्षेत्र में पीने का स्वच्छ जल लगभग 2200 नलकूपों द्वारा मेला क्षेत्र में उपलब्ध कराया जाता है। खाने के पैकट उचित दामों पर लगभग तीन रुपये में उपलब्ध कराये जाते हैं । दैनिक प्रयोग की सभी वस्तुएं जैसे आटा दालें चीनी लकड़ी इत्यादि सस्ती दरों पर उपलब्ध कराई जाती है। सरकारी उपभोक्ता स्टोर भी बनाए जाते हैं । पचास किलोमीटर के क्षेत्र को 16 सैक्टरों में बांटा जाता है। प्रत्येक सैक्टर में प्रबन्ध के लिए एक एक उप पुलिस अधीक्षक की नियुक्ति की जाती है। जो कि प्रत्येक सैक्टर का प्रबन्ध देखते हैं । उनकी सहायता हेतु विभिन्न विभागों में अधिकारी एवं कर्मचारी भी तैनात किए जाते हैं ताकि प्रत्येक सैकर में कानून व्यवस्था सुनिश्चित एवं सन्तोषजनक हो सके । प्रत्येक सैक्टर में एक एक पुलिस पोस्ट एवं एक एक आकस्मिक चिकित्सा केन्द्र भी स्थापित किया जाता है। अग्निशमन हेतु भी एक केन्द्र बनाया जाता है जिसमें पर्याप्त व्यवस्था की जाती है और ये सारे विभाग ट्रैफिक कंट्रोल रुम से जुड़े रहते हैं ।

असामाजिक एवं गुंडा तत्वों पर नजर रखने के लिए एवं ट्रैफिक कंन्ट्रोल हेतु 12 क्लोज र्स्कट टी० वी० सैट भी लगाये जाते हैं । मेला क्षेत्र में वाहन नहीं जाते उन्हें बाहर ही रोके जाने की व्यवस्था रहती है। बिजली एवं रोशनी का पर्याप्त प्रबन्ध होता है। बिजली चले जाने पर जैनरेटरों की भी व्यवस्था की जाती है ।

मेलाप्रशासन को ट्रैफिक कंट्रोल के लिए, पुलिस के अतिरिक्त लगभग पचीस स्वयं सेवी संस्थायें भी सहयोग देती हैं जिनमें भारतीय सनातन धर्म महावीर दल कुरुक्षेत्र (बजरंगभवन), पंजाब महावीर दल चण्डीगढ़, आलइंडिया सेवासमिति रोहतक इत्यादि प्रमुख हैं ।

धर्मक्षेत्र कुरुक्षेत्र

यात्रियों को हर प्रकार की सूचना देने एवं विशिष्ट व्यक्तियों द्वारा विशेष प्रसारण हेतु नाभा हाऊस में एक प्रसारण केन्द्र भी खोला जाता है। यहां से गुमशुदा के बारे में सूचना दी जाती है। यात्रियों के लिए कुछ विशेष हिदायतें इस प्रकार से हैं:—

1— ताजा और साफ सुथरी वस्तुएं ही खायें ।
2— किसी प्रकार की चोट लगने अथवा बीमार होने पर अपने निकट के प्राथमिक चिकित्सा केन्द्र पर जाएं ।
3— अपने रहने का स्थान साफ सुथरा रखें।
4— शौच तथा लघुशंका हेतु निर्धारित स्थानों पर ही जाएं।
5— केवल नल का पानी ही पियें ।
6— गन्दगी व कूड़ा कर्कट न फैलाएं ।
7— सरोवर के पवित्र जल को गंदा न करें ।
8— किसी भी अनजान व्यक्ति से प्रसाद या कोई अन्य वस्तु न लेवें ।
9— लावारिस पड़ी वस्तुओं जैसे टैचीकेस, टांजिस्टर पेन या खिलौना न छुए उसकी सूचना तुरन्त पुलिस अधिकारी को दें।
10. झूठी अफवाहें न फैलाएं ।
11. दूषित और बासी भोजन न खाएं ।
12. सूर्यग्रहण के समय सूर्य को बिना काले चश्मे के न देखें ।
13. स्नान करते हुए समय का पूरा ध्यान रखें क्यूंकि आप के बाद और यात्रियों को भी स्नान करना है।
14. माचिस की जलती तिली या बीड़ी सिगरेट के जलते हुए टुकड़े लापरवाही से न फेंके किसी भी स्थान पर आग लगने की सूचना तुरन्त अग्नि शमन केन्द्र को दें ।
15. किसी भी निकटतम सम्बंधी के गुम होने पर उस की सूचना तुरन्त सूचना प्रसारण केन्द्र को दें ।
16. अपने बच्चों की जेब में पूरा पता लिखकर रखें।
17. ट्रैफिक नियमों का पालन करें। भीड़ के नियन्त्रण में तैनात कर्मचारियों एवं स्वयंसेवकों को पूर्ण सहयोग दें ।
18— निर्भय रहें। जिला प्रशासन आप की यात्रा को सफल बनाने में पूरा सहयोग देगा ।

कुरुक्षेत्र में यात्रियों के ठहरने हेतु कई धर्मशालाएं हैं जिनमें लगभग 50,000 व्यक्ति ठहराये जा सकते हैं :—

1. ताराचंद धर्मशाला थानेसर —12 कमरे,
2. जाट धर्मशाला —200कमरे,
3. अग्रवाल धर्मशाला —18 कमरे,
4. काली कमली क्षेत्र —70 कमरे,

5. सैनी समाज धर्मशाला —44 कमरे,
6. प्रजापति धर्मशाला —50 कमरे,
7. श्रीकृष्ण धाम —40कमरे,
8. श्रीजयराम आश्रम —32कमरे,
9. विरला मन्दिर —10 कमरे,
10. लक्ष्मीनारायाण मन्दिर —20 कमरे,
11. भारतसेवाश्रमसंघ —15 कमरे,
12. बावा गुदड़ डेरा —32 कमरे,
13. गीताभवन —50 कमरे,
14. तीर्थ सुधार ब्राहमण पंचायत —15 कमरे,
15. श्री सनातन धर्म मन्दिर —6 कमरे,
16. पाल गड़रिया धर्मशाला —11 कमरे,
17. बंगाली धर्मशाला —8 कमरे,
18. श्रीहनुमान मन्दिर थानेसर —5 कमरे,
19. यात्रीनिवास —32 कमरे,

इसके अतिरिक्त सरकार द्वारा निर्मित विश्रामगृह इस प्रकार हैं:—

(1ï पी० डब्लयू० डी० 2कमरे,
(2ï पंचायत भवन 4 कमरे,
(3ï पिपली मोटल 8 कमरे,
(4ï विश्वविधालय विश्रामगृह 4 कमरे,
(5ï सैनिक विश्रामगृह 2 कमरे,

सूर्यग्रहण पर भगवान श्रीकृष्ण आगमन:—

द्वापर युग में भगवान कृष्ण सपरिवार कुरुक्षेत्र में स्नान हेतु सूर्यग्रहण के अवसर पर पधारे थे इसका प्रमाण हमें महाभारत में इस प्रकार मिलता है——

अथैकदा द्वारवत्वां वसतो रामकृष्णयोः।
सूर्यपरागः सुमहानासीत् कल्पक्षये यथा।।
तं ज्ञात्वा मनुजा राजन् पुरस्तादेव सर्वतः।
समन्तपंचक क्षेत्रं भयुः श्रेयो विधित्क्षमा।।
विखत्रियां यही कुर्वन रामः शास्त्र भूतां वरः
नृपाणां कधिरोषेण मत्र चक्रे महाह्रान।।

शुकदेव जी कहते हैं, हे परीक्षित भगवान श्रीकृष्ण एवं बलराम तब द्वारिकापुरी में निवास कर रहे थे, तब एक बार सूर्य ग्रहण आया जैसा कि कल्पक्षय अथवा प्रलयकाल में आता है। मनुष्यों को ज्योतिष शास्त्रियों द्वारा इस ग्रहण का पता पहले से ही चल जाता है। इसलिए सब लोग अपने–अपने कल्याण हेतु, पुण्य उपार्जन के उद्देश्य से समन्तपंचक तीर्थ कुरुक्षेत्र में पहुंचे। (समन्तपंचक क्षेत्र वह है जहां शास्त्रधारियों में श्रेष्ठ परशुराम जी ने सारी पृथ्वी को क्षत्रियहीन करके राजाओं के रुधिरधारा से पांच कुण्ड बनाए थे।)

भगवान श्रीकृष्ण एवं बलराम जी अपनी पत्नियों के साथ इस प्रकार शोभायमान हो रहे थे मानों स्वर्ग के देवता ही यात्रा कर रहे हों। महाभाग्यशाली यदुवंशियों ने कुरुक्षेत्र में पहुंच कर एकाग्रचित होकर संयम पूर्वक स्नान किया, ग्रहण के उपलक्ष्य में निश्चित काल तक उपवास किया; ब्राहमणों को गोदान दिया। ऐसी गोओं का दान जिन्हें वस्त्रों की सुन्दर सुन्दर पुष्पमालायें एवं सोने की जंजीरें पहना दी गई थीं। इस प्रकार कुरुक्षेत्र में यदुवंशियों ने विधिपूर्वक स्नान किया एवं पुण्य लाभ प्राप्त किया।

सूर्यग्रहण पर श्रीराम चन्द्र जी का आगमनः–

महामुनि श्री बाल्मीकि कृत आनन्दरामायण के अन्तर्गत नवम सर्ग में प्रभुराम की सूर्यग्रहण के पुनीत पावन अवसर पर तीर्थ यात्रा का सुन्दर विवेचन किया गया है।

श्री राम दास जी कहते हैं– कि एक बार श्रीरामचन्द्र जी सीता तथा समस्त श्रोताओं एवं उनकी पत्नियों के साथ पुष्पक विमान पर सवार होकर सूर्यग्रहण के अवसर पर कुरुक्षेत्र आये। वहां समस्त देवता, किन्नर गन्धर्व, पन्नग, तथा कितने ही आश्रमों के ऋषि मुनि एवं हजारों राजा आए हुए थे। जब सूर्यग्रहण लगा तो उस समय सीता के साथ राम जी ने स्नान किया तथा हाथी घोड़े, ऊंट एवं रथ इत्यादि का दान दिया। इसके अनन्तर वहां आए हुए राजाओं ने अनेक प्रकार के उपहार ले लेकर प्रभुराम के दर्शन किये और उनकी रानियां भी सीता जी को देखने के लिए उनके साथ आईं। जब रानियां सीताजी के पास पहुंची तो उन्होंने बड़े आदर के साथ उन्हें उन की सखियों एवं मुनि पत्नियों के साथ एक सुन्दर आसन पर बिठाया। सीता जी द्वारा विधिवत पूजन कर लेने के बाद मुनिपत्नियों में से अगस्त्य पत्नी लोपमुद्रा सीता को प्रसन्न करती हुई कहने लगी– हे कमलनयनों वाली सीते। हे गजगमिनी। तुम धन्य हो। हमारे कानों को आनन्द देने वाले राम जी के किसी पौरुष का तो वर्णन करो।

लोपमुद्रा के ऐसा कहने पर सीता ने अपने विवाह से लेकर कुरुक्षेत्र की यात्रा तक का समस्त वृतान्त उन्हें कह सुनाया। लोपमुद्रा ने कहा– हे सीते। महाराज रामचन्द्र जी ने अब तक जो कुछ भी किया वह ठीक किया केवल एक बात में चूक गये और उन्होनें इतना क्लेश उठाया। मैं नहीं समझ पाती कि लंका पर चढ़ाई करते समय श्रीराम जी ने समुद्र में सेतु बनाने का कष्ट क्यूं किया। उन्होनें अगस्त्य जी से क्यों नहीं कह दिया कि वे एक अज्जंलि भर कर क्षण भर

में सारे समुद्र को पी जाते। समुद्र सूख जाता और कपियों को लंका जाने में कठिनाई न होती। सेतु बांधने का इतना कष्ट उन्होंने क्यूंकर किया।

इस प्रकार लोपमुद्रा की बात सुनकर सगर्व वाणी में सीता जी बोली– हे पतिव्रते श्रीराम जी ने जो सेतु बांधा वह बहुत ही अच्छा किया। मैं तुम्हें उस का कारण बतलाती हूं, आप सावधान होकर सुनें। यहां आई हुई राजरानियां भी यह बात शान्त मन से सुनें। यदि राम अपने बाण से समुद्र को न सुखाते तो बहुत से जीवों प्राणियों की हत्या होने की आशंका थी। दूसरे यदि राम आकाशमार्ग से समुद्र को लांघ जाते तो रावण और बानर यह कैसे जानते कि राम मनुष्य हैं। तीसरे यदि बानर हनुमान जी की पीठ पर बैठ कर चले जाते तब राम का क्या पराक्रम दीख पड़ता। यदि हाथों से तैरकर उस पार चले जाते तब उन्हें यह ख्याल होता कि ब्राहण के मूत्र को कैसे लाघूं। यदि आप के पति अगस्त्य से उसे पीने की प्रार्थना करते तो सोचते कि एक बार अगस्त्य इस समुद्र को पी चुके हैं एवं मूत्रमार्ग से निकल चुके हैं इसी से यह खारा है। पुन| इस खारे समुद्र को अगस्त्य जी कैसे पियेंगे। मान लिया जाए कि राम के कहने से अगस्त्य जी समुद्र को पी जाते तो संसार में उनका बड़ा अपयश होता कि राम ने अपना स्वार्थ हल करने हेतु एक ब्राहमण को मूत्र पिलाया। इन सभी बातों पर अच्छी वरह सोच विचार कर ही रामचन्द्र जी ने अपनी कीर्तिवृद्धि हेतु समुद्र पर सेतु बंधवाया था। जिस काम को न तब तक किसी ने किया था और न आगे कोई कर सकेगा उसे उन्होंने कर दिखाया। अब सब कोई परस्पर यहीं कहते हैं कि जिस राम ने समुद्र में शिला को तैरा दिया था, वे ही दशरथनन्दन श्री राम हैं।

इस प्रकार लोपमुद्रा सीता जी की बात सुनकर अत्यन्त लज्जित हुई और थोड़ी देर के लिए सभी नारी सभा में मौन बैठी रहीं। फिर हंस कर सीता जी ने लोपमुद्रा से कहा मैंने जो धृष्टता की है उसे आप क्षमा करें आप के स्नेह और प्रसंग आ जाने पर मैंने इस प्रकार राम का पौरुष वर्णन किया। मेरे पतिदेव राम में जो पराक्रम हैं, वह सब आप के स्वामी अगस्त्य जी के आर्शीवाद से है। इस प्रकार विनती करके सीता ने उन मुनि पत्नियों को विदा किया। तदन्तर राजरानियों द्वारा पूजित होकर सीता राम के पास चली गई। श्री राम जी भी देश देशान्तर से आए हुए राजाओं से कितने ही हाथी घोड़ो का उपहार लेकर सम्मानित हुए एवं प्रसन्नतापूर्वक सीता के साथ पुष्पक पर सवार होकर अयोध्या को चल पड़े।

सूर्यग्रहण के समय कुरुक्षेत्र में जो लोग स्नान करने आये थे वे भी श्री राम जी के दर्शन से प्रसन्न होकर अपने अपने घरों का वापस गये।

कुरुक्षेत्र की नदियां

वापन पुरान के अनुसार कुरुक्षेत्र में नौं नदियों का उल्लेख है जो कि इस प्रकार हैं:–

सरस्वती नदी पुण्या तथा वैतरणी नदी
आपगा च महापुण्या गंगा मंदाकिनी नदी।
मधुश्रव अम्लु नदी, कौशिकी पापनाशिनी।
हबद्वती महापुण्या तथा हिरण्यवती नदी।
वर्षा काल वहा: सर्वा वर्जयित्वा सरस्वतीम् ।
वामन सरो 13/8

अर्थात **सरस्वती** महान पुण्यवाली नदी है, दूसरी **वैतरणी** नदी है। महान पुण्यशाली **आपगा** नदी है। पुण्य **मन्दाकिनी** गंगा नदी है, **मधुस्त्रवा अभ्लु** (वासुनदी) नदी और पापों का नाश करने वाली **कौशिकी** नदी है। महापुण्यमयी **हपद्वती** तथा **हिरण्यवती** नदी हैं। केवन सरस्वती को छोड़कर बाकी सब नदियां वर्षाकाल में बहती हैं। इन सबका जल वर्षा के समय में भी परम पवित्र माना जाता है। तीर्थ प्रभाव से ये श्रेष्ठ नदियां परम पुण्यमयी हैं।

सरस्वती नदीः–

ऋगवेद के अनुसार सबसे प्रमुख नदी है। ऋगवेद में इस नदी का 40 बार उल्लेख हुआ है। अनेक सूत्रो में सरस्वती की दिंव्य स्तुति मिलती है कोई भी पूजादि करने से पहले इस नदी का आह्वान किया जाता है।

गंग्डे० च यमुने चैव गोदावरि सरस्वती।
नर्मदे सिन्धु कावेरी जले ऽस्मिन सन्नींधकुरु।।

ऋगवेद में सरस्वती को मात्रगण एवं नदियों मे श्रेष्ठ कहा गया है। वामनपुराण में सरस्वती को विष्णु की जिह्वा कहा गया है––

"एवं स्तुता तदा देवी विष्णोजिर्हवा सरस्वती"।
वामन 32/23

मनुस्मृति में लिखा है कि सरस्वती और हपद्वती दोनों देवनदियां हैं। इन दोनों का मध्यवर्ती प्रदेश ब्रहमावर्त कहलाता है तथा इस देश का जो प्रचलित आधार है वही सदाचार है। महाभारत के अनुसार–सभी सरिताओं में सरस्वती अति पवित्र और सब लोगों को शुभ देने वाली है इस नदी में स्नान करने से सभी पाप विनष्ट हो जाते हैं।

ब्रहमवैवर्त–पुराण में लिखा है–– यह नदी अति पुण्यतया है, यदि कोई इस नदी में स्नान करे तो उसके सभी पाप विनष्ट हो जाते हैं। तथा वे बेकुण्ठ में विष्णु लोक में वास करते हैं चावुर्मास्य, पूर्णिमा, अक्षया, अमावस्या आदि शुभ तिथियों पर जो सरस्वती के जल में अवगाहन करते हैं वे सभी पापों से विमुक्त हो मुक्तिलाभ करते हैं। अग्नि में जिस प्रकार सभी वस्तु दग्ध हो जाती हैं उसी प्रकार इस सरस्वती नदी में सभी पाप तत्क्षण भस्मीभूत हो जाते हैं।

शतपथब्राहमण गन्थ में इसे वाक अन्न तथा सोम कहा गया है। महाभारत वन पर्व के अनुसार मलिनार ने सरस्वती के तट पर बारह वर्ष यज्ञ किया और सरस्वती ने इसे पति रुप में वरण किया। भगवान कृष्ण ने भी यहां 12 वर्ष यज्ञ किए। स्वयंभू प्रजापति ब्रहमा ने इसी पावन तट पर शिला यज्ञ की रचना की । ऋषि मुनियों ने भी इसी के पावनतट पर संगीतमयी वाणी से वेद ऋचायों का गायन किया अत, इसे ब्रह्मनदी सरस्वती भी कहा जाता है।

भारतीय विद्वानों के अनुसार सरस्वती विधा की अधिष्ठात्री देवी है। अतः भगवती देवी गंगा के समान पूजनीय है। संस्कृत साहित्य के अनुसार भी यह शब्द सर अर्थात सरोवर तथा वती–वाली शब्द से बना है जिस का अर्थ झीलों अथवा पोरवरों की नदी। यह लक्षण आज भी यहां मिलता है क्यूंकि यह नदी वर्प के प्रारम्भ में आंशिक रुप से सूख जाती है। और स्पष्टत| छोटे छोटे पोरवरों में परिवर्तित हो जाती है। इस का सीधा सम्बन्ध वैदिककाल से आज तक कुरुक्षेत्र एवं हरियाणा प्रदेश से ही जुड़ा हुआ है। जिस प्रकार देवभूमि उन्तरखण्ड में पर्वतराज हिमालय की गंगा मैय्या के किनारों पर ही समस्त भारत में आज के तपस्वी सिद्ध महापुरुप, संत महात्माओं के पावन आश्रय विधमान हैं ठीक इसी प्रकार वैदिक काल से सरस्वती के पावन तट पर इस देश के व्यास, वसिष्ठ, परशुराम, गौतम, दधीचि तथा अन्य महर्पियों के आश्रम विद्यमान हैं। महर्पि व्यास ने महाभारत अनुशासनपर्व में सरस्वती महिमा के अन्तर्गत कहा हैः–

सरस्वती महापुण्या हरिनी तीर्थ नामिनी।
समुद्रगा महावेगा यमुना यत्र पाण्डव, ।।

सरस्वती अवतरण कथाः–

इस देवी का उत्पति विवरण ब्रहमवैवर्त पुराण में इस तरह कहा गया है––

परमात्मा के मुख से एक देवी का अविर्भाव हुआ। यह देवी शुक्लवर्णा, वीणधारिणी और करोड़ों चन्द्र की तरह शोभायुक्ता हैं। यह देवी श्रुति व शास्त्रों में श्रेष्ठा और पण्डितों की जननी है। रागाधिष्ठात्री देवी कवियों की इष्ट और शुद्ध तत्व स्वरुपा होने के कारण सरस्वती नाम से सुप्रसिद्ध हुई। सृष्टिकाल में प्रधान शक्ति ईश्वर की इच्छानुसार पांच भागों में विभक्त हुई। ये पांच शक्तियां थी –– राधा, पध्मा, सावित्री दुर्गा और सरस्वती। इन पांच धाराओं में विभक्त शक्तियों में जो देवी वागधिष्ठात्री, और शास्त्रप्रदायिनी एवं कृष्णकण्ठोभ्दव है

उन का नाम सरस्वती है। श्री कृष्ण ने पहले इन्हीं देवी की पूजा की और उसी समय से इन देवी की पूजा प्रचलित हुई। इनकी उपासना करने से मूर्ख भी पंडित होता है। जब ये देवी कृष्ण के मुख से अविर्भूत हुई तब इन्होनें श्री कृष्ण की उपासना की। इस प्रकार श्री कृष्ण ने कहा– हे साध्वि। तुम सदुंवशस्वरुप चतुर्भुज नारायण की कामना करों, उनको भजो और बैकुण्ठ में वास करो। माघ मास की शुक्लापंचमी के दिन विधारम्भ के समय सभी तुम्हारी पूजा करें। तुम्हारे प्रसन्न न होने से कोई भी विद्या लाभ प्राप्त नहीं करेगा। श्री कृष्ण की यह बात सुनकर सरस्वती ने चतुर्भुज नारायण का आश्रय लिया। उसी समय से माघ सुदी पंचमी तथा विद्यारम्भ में इनकी पूजा होती है।

इनकी पूजा आदि का विषय स्मृति में भी विस्तृत रुप से लिखा हुआ है। वेद में जैसे श्रीसूक्त द्वारा लक्ष्मी की पूजादि का निर्देश है वैसे ही सरस्वती का सूक्त भी देखा जाता है। लक्ष्मी पूजन करने के बाद भी सरस्वती पूजन का विधान है। एवं सरस्वती पूजा के दिन भी लक्ष्मी पूजन किया जाता है। इसके वाद देवताओं की पूजा करनी चहिए।

सरस्वती देवी के आठ अंग हैं– लक्ष्मी, मेघ, धरा, पुष्टि, गोरी, तुष्टि, प्रभा, धृति। अतएव इन सब अंगों की भी पूजा की जानी चाहिए। सरस्वती पूजा में बन्धुजीव, दोण पुष्प, दोनों पुष्प चढ़ाने चहिए।। वासक या अडाहुल का पुष्प भी उतम है।

तंत्रसार भी इस देवी की पूजा और मंत्रादि का विवरण है " वदवद बागवादिनि व्हि वल्लाभा" सरस्वती का दक्षाक्षर मंत्र है। इस मंत्र द्वारा उनकी उपासना से सभी विद्या सिद्ध होती है। मेधा प्रज्ञा, प्रभा, विद्या, धृति, स्मृति, बुद्धि और त्रिधेश्वर्य में सब इनके पीठ देवता हैं।

स्कन्दपुराण में सरस्वती अवतरण की गाथा आई है । तदनुसार देवताओं ने बाडव से कहा कि वे पृथ्वी पर स्थित सारे जल को पी लेवे । इस पर बाडव ने विष्णु से कहा कि जल के समीप जाने हेतु वह कन्या के सिवाय किसी को भी साथ स्वीकार नहीं करेगा । विष्णु ने गंगा यमुना सरस्वती तथा सिन्धु आदि नदियों से प्रार्थना की किन्तु कोई भी अग्नि के तेज के भयवंश साथ जाने को तैयार न हुई । किन्तु जब विष्णु ने सरस्वती से प्रार्थना की तो सरस्वती ने अपने पिता ब्रहमा के कहने पर बाडव के साथ जाना स्वीकार कर लिया । इस प्रकार नदी रुप को धारण कर सरस्वती हिमालय में प्लक्षवृक्ष से प्रकट हुई । वामनपुराण में आया है कि प्लक्षवृक्ष के मूल में इस को स्थित देखकर मार्कण्डेय ऋषि ने कुरुक्षेत्र में लाने के लिए सरस्वती की स्तुति की । तत्पश्चात् यह नदी कुरुक्षेत्र में प्रविष्ट हुई।
महाभारत में श्री बलराम जी द्वारा कुरुक्षेत्र यात्रा में वर्णित सरस्वती का चित्रण इस प्रकार है–

सरस्वती सर्वनदीषु पुण्या सरस्वती लोक मूशावहाशुभा
सरस्वती प्रप्यजनाः सुदुष्कृंत सदा न शोचन्ति परत्र ने हन ।
महाभारत 54/39

विभिन्न पुराणों में एवं महाभारत में सरस्वती की स्तुति भिन्न–भिन्न प्रकार से की गई है । महाभारत में उल्लेख है कि सरस्वती के तट पर वास करने के समान आनन्द अन्यत्र कहां । सरस्वती का सेवन कर स्वर्ग में गए मानव सदा सरस्वती का स्मरण करेंगे । नारदीयपुराण के अनुसार सरस्वती के तट पर जो कहीं भी निवास करें उनका ज्ञान ब्रहममय हो जाता है ।

यत्रयो वै वसे द्वीर सरस्वत्यारु तटे स्थितः ।
तस्य ज्ञान ब्रहममंय भविष्यति न संशय ।। 64/33

कूर्मपुराण के अनुसार गंगा, सरस्वती तथा नर्मदा में किया गया स्नान एवं दान समान रुप से पुण्यशाली होता हैः– भविष्यपुराण के अनुसार कलियुग में दो हजार वर्ष बीतने पर म्लेच्छ वृद्धि को प्राप्त होंगे किन्तु सरस्वती के प्रभाव से ब्रहमावर्त म्लेच्छों से रहित रहेगा ।

ब्रहमावर्ते कथं म्लेच्छा न प्राप्ताः 116/1

स्कन्दपुराण के अनुसार अर्जुन प्राची सरस्वती का सेवन करके ही पापमुक्त हुआ था । महाभारत के युद्ध में कौरवों पर विजय प्राप्त करके अर्जुन एवं कृष्ण ने गृह प्रस्थान किया । किन्तु युधिष्ठर ने उनको घर के भीतर न आने दिया । कारण पूछने पर युधिष्ठर ने कहा कि वह बन्धु बांधवों के वध के कारण पापी है और उसे पापमुक्त होने के लिए प्राची सरस्वती का सेवन करना होगा जहां कि सभी पाप कर्म करने वाले व्यक्ति मुक्त हो जाते हैंः–

तत्रगच्छ कुरुश्रेष्ठ यत्र प्राची सरस्वती
तत्र स्नानत्वा विमुच्यते यत्र प्राची सरस्वती । 7/36

पेहोवा तीर्थ पर अनादिकाल से सरस्वती तट पर पितृश्राद्ध कर्म कुरुक्षेत्र में सरस्वती का जीता जागता प्रमाण है । प्रतिहार राज्य के भोज के शिलालेख से भी यहीं पता चलता है कि जो नदी पेहोवा से होकर जाती है वह प्राची सरस्वती है । सरस्वती जैसा पवित्र तीर्थ पृथ्वी पर न तो है न होगा । शिव ने सरस्वती को गंगा से भी श्रेष्ठ कहा है । प्राची सरस्वती का क्षेत्र सभी कामनाओं को पूर्ण करने वाला है । जिनके चिता भस्म, अस्थिचर्म, अक्षजल केश इत्यादि वायु के द्वारा उडाए गए सरस्वती के जल में गिर जाते हैं वे व्यक्ति काल के वश में नहीं आते । यहां पर यज्ञ का सर्वाधिक महत्व है ।

सुप्राचीन वैदिक युग में आर्यो ने जब धीरे–धीरे उत्तर पश्चिम भारत से आर्यवर्त भूमि में आकर भिन्न–भिन्न स्थान में उपनिवेश बसाया तब उनहोंने प्रधानतया एक, एक निर्मला सलिला स्वरप्रवाहा पुण्यप्रदा नदी के किनारे अपना अपना वास भवन बनाना स्थिर किया । ऋगवेद मन्त्र में सरस्वती को अन्नवती, उद्कवती एव द्युतिमति रुप में वर्णन किया गया । वह आर्य जाति की जीवन रक्षा का एक मात्र उपाय स्वरुप थी आर्य ऋषिगण हृदय की भक्ति पुष्पांजलि लेकर उनका स्तुतिगान कर रहे हैं । ऋगवेद के प्रथम मंडल से दशम मंडल

तक अनेक मन्त्रों में सरस्वती का उल्लेख आया है जिससे पता चलता है कि आर्य समाज ने बहुत दिन तक इसके किनारे वास किया ।

दृषद्धतीः–

वामनपुराणनुसार दृपद्वती तथा हिरण्यवती महान पुण्यमयी नदियां हैं ।
दृषद्धती महापुण्या तथा हिरण्यवती नदी ।
वर्षाकाल वहाः सर्वावर्जयित्वा सरस्वतीम् । 34/8

सरस्वती को छोड़कर अन्य नदियां केवल वर्षाकालीन नदियां हैं तथा इनका जल वर्षा के समय में भी परमपुण्यमयी कहा गया है । तीर्थ के प्रभाव से श्रेष्ठ नदियां परमपुण्यमयी हैं । यह नदी भी वैदिक आचार्यो एवं ऋषियों को अत्यन्त प्रिय थी । गंगा यमुना एवं सरस्वती के संगम के समान ऋपित्र दृपद्वती, आपगा एवं सरस्वती के संगम पर स्नान ध्यान किया करते थे । यह नदी प्राचीन काल में कुरुक्षेत्र की दक्षिणी सीमा का निर्माण करती है । महाभारत में भी इस नदी को कुरुक्षेत्र की दक्षिण में बहने वाली नदी कहा गया है । मनुस्मृति एवं वामनपुराण में भी इस नदी का उल्लेख हुआ है । इस के अनुसार दृपद्वती का नाम रत्नावली था । किन्तु कालान्तर में इसका नाम दृष्द्वती हो गया इसका उदगम स्त्रोत हिमालय के पाश्र्व से बताया गया है ऐसा भी लिखा है कि श्रीकृष्ण ने इन्द्रप्रस्थ को जाते हुए मार्ग में इस नदी को पार किया था ।

रत्नावली स्वर्णमयी गंगा च अमृतवाहिनी
कलौ दृपद्धती नाम महापातक नाशिनी ।
वायु० 59/27

इस नदी को अति पवित्र माना गया है । इसमें स्नान एवं तर्पण कर मनुष्य अग्निष्टोम तथा अविरात्र यज्ञों के फल को प्राप्त करता है । यह नदी पितरों को प्रिय हे तथा श्राद्ध करने पर करोड़ों गुणा फल देने वाली हैं ।

दृष्द्वती नरः स्नात्वा तर्पयित्वा च देवताः ।
अग्निष्टोमति रात्राभ्यां फलं विदन्ति भारत ।।
वन() 8/73

ऋगवेद के एक मन्त्र अग्नि स्तुति 3/23/4 में उल्लेख आता है कि गौरुप धारिणी पृथ्वी के श्रेष्ठ स्थान में, दिनों के बीच में सुन्दर दिन हम आप का स्वागत करते हैं । वे उत्तम स्थान कौन से हैं–दृष्द्वती, मानुप तीर्थ, आपगा नदी और सरस्वती नदी । लगभग सभी पुराणों में इस नदी का वर्णन किसी न किसी रुप में मिलता है और सभी में इस का कुरुक्षेत्र एवं भारत में पाया जाना उल्लेखित है । वायुपुराण के अनुसार यह नदी हिमालय से निकलती है ।

ब्रह्म–पुराण एवं पदमपुराण के अनुसार यह नदी भारत वर्ष में है और हिमालय के चरण से निकलती है । मतस्य पुराण में यह नदी पितृप्रिय है और श्राद्ध से कई गुणा फल देने वाली हैं । वामनपुराण के अनुसार यह नदी कुरुजागंल की सीमा पर है ब्रहमावर्त की सीमा एवं भारत में बहती है । यह नदी कुरुक्षेत्र में है एवं वर्षाकाल में बहती हैं । इस पर किया गया श्राद्ध अक्षय होता है । लाट्यायन श्रोत सूत्र के अनुसार यह नदी यमुना के समीप है ।

अपगा नदीः–

महाभारत एवं पुराणों में इस नदी का उल्लेख हुआ है सरस्वती एवं दृपदवती की भांति यह नदी भी कुरुक्षेत्र की अत्यत्न प्राचीन एवं प्रसिद्ध नदी है । परन्तु आज यह लुप्त प्राय हो गई है । आपगा के नाम से यह पुराना तीर्थ कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के दक्षिण में है । संभवतः यहां पर इस नदी का जलप्रवाह रहा होगा । महाभारत एवं विभिन्न पुराणों मे इस नदी का वर्णन इस प्रकार हुआ हैः–

पदमपुराण के अनुसार यह मानुपतीर्थ से एक कोस की दूरी पर है । वर्षाकालीन नदी है । अस्थिपुर के पास महेश्वर देव के समीप है । ब्रह्मपुराण में इस नदी को हिमालय से निकली हुई माना गया है । वामनपुराण इसे कुरुक्षेत्र की वर्षाकालीन प्रवाहित नदी मानता है । यह मानसतीर्थ के समीप है । नारदपुराण में भी इसे महानदी एवं मानुपतीर्थ से एक कोस पर कुरुक्षेत्र में माना है । वायुपुराण के अनुसार इसे अत्यन्त पवित्र नदी माना है । ऋगवेद एवं वनपर्व महाभारत में भी इसे मानुपतीर्थ के पूर्व में कोस मात्र की दूरी पर माना गया है–

दृषद्वत्या मानुष आपयायां सरस्वत्यां
मानुपस्य तू पूर्वेण क्रोषमात्रे महीपते ।
आपगा नाम विख्याता नदी सिद्ध निवेषिता ।।
(ऋगवेद)

इस नदी में स्नान करने से तथा महेश्वर की पूजा करने से मनुष्य परम गति को प्राप्त करके अपने कुल का उद्धार करता है इस पर नदी पर श्राद्ध करने का अत्यन्त महत्व है । जो यहां पर श्राद्ध करते हैं उनकी सभी कामनाएं पूर्ण हो जाती हैं । पितर एवं पितामह चाहते हैं कि उनके कुल में ऐसा पुत्र व पोत्र हो जो आपगा नदी के तट पर जाकर तिलों से तर्पण करें जिससे कि वे आने वाली सौ पीढ़ियों तक तृप्त हो जाएं ।

शंसन्ति सर्वपितरः स्मरन्ति च पितामहाः ।
अस्मांक च कुले पुत्र पौत्रो वापि भविष्यति ।।
यो आपगा नदी गत्वा तिलै सतपर्यिष्यते ।
तेन तृप्ता भविष्यामों यावत्कत्वशतं गतम् ।।
वामन 15/4–5

आपगा नदी पर भाद्–पद मास में कृष्णपक्ष की चौदस तिथि को मध्यकाल में पिण्ड दान करने वाले मुक्ति को प्राप्त करते हैं:–

नमस्ये मासि सम्प्राप्ते कृष्णपक्षे विशेषतः
चतुर्दश्यां च मध्याहने पिण्ड दो मुक्ति माप्नुयाद
वामन० । 5/6

माहभारत के अनुसार यह नदी अति पुण्यमयी है जो व्यक्ति इस नदी पर सामक के चावलों में घी मिलाकर ब्राहमणों को दान करता है उसके सभी पाप नष्ट हो जाते हैं एवं एक ब्राहमण को भोजन कराने से करोड़ों को भोजन कराने का फल मिलता है ।

श्यामकं मोचने तत्र यः प्रयच्छति मानवः
एकस्मिन योजिते विप्रेल कोटि भवति योजिता ।
वनपर्व 18/15/57

मधुस्त्रवाः–

वामन पुराणों में कुरुक्षेत्र की पवित्र नदियों के अन्तर्गत मधुस्त्रवा का उल्लेख सरस्त्रती नदी के साथ ही मिलता है । इस नदी का अलग से वर्णन नहीं मिलता ।

"मधुस्त्रवा अम्लु नदी कौशिकी पाप नाशिनी"

इस प्रकार मधुस्त्रवा एवं कौशिकी नदी पापों का नाश करने वाली हैं । कनिहंम के अनुसार पेहोवा के समीप सरस्वती प्रदेश में मधुस्त्रवा नामक ताल ही इस नदी का द्योतक है ।

गंगामदंकिनीः–

वामन पुराण में कुरुक्षेत्र की पवित्र नदियों में गंगा मंदाकिनी का उल्लेख मिलता है । प्रो() भार्गव की मान्यता है कि यह नदी निगदू के पास से होकर बहती है । प्राचीन काल में इस का कौशिकी नदी के साथ दुसैन नामक स्थान पर संगम होता था । दुसैन में आज भी गंगा तीर्थ विद्यमान है किन्तु नदी का अस्तित्व नहीं मिलता ।

कौशिकीः–

ऋगवेद में इस नदी का नाम कौशिकी–कुशिक ऋषि अथवा उसके पुत्र विश्वामित्र से सम्बंधित प्रतीत होता है । इस का उल्लेख हमें रामायण में भी मिलता है । रामायण के अनुसार सत्यवती कौशिकी विश्वामित्र की बहन थी तथा जमदाग्नि ऋषि की माता अपने पति की मृत्यु के बाद स्वर्ग चली गई । तत्पश्चात वह कौशिकी नदी हो गई जिसके तट पर विश्वामित्र

तप किया करते थे । महाभारत में भी इन तथ्यों का समर्थन मिलता है । विश्वामित्र तथा भरत दोनों का सम्बन्ध कौशिकी नदी से बताया गया है । विश्वामित्र ने इस नदी के तट पर तपस्या द्वारा कई सिद्धियां प्राप्त की । जो भी व्यक्ति इस नदी के तट पर एक मास भर रहता है उसको अश्वमेघ यज्ञ का फल मिलता है । सभी पापों को दूर करने वाला भरत का आश्रम भी इसी के तट पर है ।

भरतस्याश्रम गत्वा सर्वपापप्रमोचनम् ।
कौशिकी तत्र सेवेत महापातकनाशनीय ।।
वनपर्व 0 182/123

वामन पुराण में भी इस नदी को कुरुक्षेत्र से होकर बहने वाली नदी कहा गया है–
हिरण्वतीः–

महाभारत उद्योगपर्व अन्तर्गत इस नदी का उल्लेख इस प्रकार मिलता है–

"आसाद्य सरितं पुण्यां कुरुक्षेत्रे हिरण्वतीम्" ।

यह नदी कुरुक्षेत्र में पवित्र जल वाली एवं पुण्य नदी के रुप में विख्यात थी । वामनपुराण में इस नदी को विष्णु के रुद्र रुप से सम्बन्धित बतलाया गया है ।

"रुद्रारण्यं च हिरण्वत्याम"
वामन0 63/32

वामन पुराण की कथानुसार इस नदी को यमुना व शिबि देश के मध्य में बहते बतलाया गया है । कथा के अनुसार विश्वकर्मा ऋषि के शाप से बन्दर बन गये । एक बार उस ने कन्दर नामक राक्षस को उसकी पुत्री देववती के साथ आते देखा तो उसे बलपूर्वक ले भागा । यमुना तट पर श्रीकंठ के आश्रम के पास छोड़ दिया और खुद यमुना में छलांग लगा दी । पुनः वह कर्पि शिवि देश में आया ।यहां से वह देववती के साथ जाने के लिए शीघ्रता करने लगा । लौटते समय उसने अन्जन को उस की पुत्री के साथ देखा तो उसे देववती समझ बैठा । वह नदयन्ती बानर के भय से हिरण्यवती में गिर पड़ी । वामन पुराण में ऐसा उल्लेख आता हे कि जिससे प्रतीत होता है कि हिरणयवती और यमुना साथ साथ बहती थी ।

सरस्वती पश्रयरुपा कालिन्दीन हिरण्यवती ।
वामन0 13/2011

इस प्रकार पुण्यतोया सरस्वती एवं अन्य नदियां प्राचीन काल से ही देवों, ऋषि एवं मुनियां द्वारा सेवित रही हैं । इनके तट पर पूजा अर्चना का विशेष महत्व रहा है । प्राचीन काल में न केवल इन के तट पर वेदों की रचनाएं हुई वरन् वर्तमान समय में भी धार्मिक पुरुष एवं सदाचारी

लोग इस पुण्य स्थान पर इसे धर्मक्षेत्र समझते हुए, धार्मिक ग्रन्थों की रचना करते रहे हैं। निर्मल साधु अखाड़े के प्रसिद्ध संत गुलाबसिंह ने सम्वत् 1837 में आध्यात्म रामायण, मुखपन्थ, भूरस्मृत चन्द्र प्रवोध आदि ग्रन्थ लिखे। इसी प्रकार भाई सन्तोष सिंह जी ने सिख इतिहास, गुरुप्रताप सूरज एवं सूरजप्रकाश इत्यादि धार्मिक गन्थों की रचना कैथल नगर में भाई उदय सिंह जी के वास्ते लिखे थे। कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय जो मूल रुप में संस्कृत विश्वविद्यालय के रुप में खोला गया था में भी धार्मिक, सांस्कृतिक शोध सतत् रुप में प्रवाहित हो रहा है। महर्षि की स्थापना वेद व्यास चेयर की स्थापना इसका आदर्शतम स्वरुप है।

****

कुरुक्षेत्र के वनः–

अनादि काल से कुरुक्षेत्र देवभूमि, ऋषिभूमि एवं सिद्ध भूमि से सुविख्यात रहा है । सांसारिक मोह माया के बन्धन को तोड़कर हमारे ऋषि महात्मा भक्त वृंद वनों में ही तपस्या हेतु जाते थे । इसलिए वामन पुराण में कुरुभूमि को कुरुजांगल भी कहा गया है––

"देवता ऋषयः सिद्धा सेवन्ते कुरुजांगल्"

ब्रहम ज्ञान हेतु सांसारिक मोहमाया का त्याग अत्यावश्यक है । मनुष्य का मन अति चंचल है अतः इस जीवन को प्राप्त करके मोक्ष की आकांक्षा रखने वाले मनुष्य को अवश्य ही ईश्वर उपासना जप, तप इन्द्रिह निग्रह इत्यादि कर्मो का सहारा लेना पड़ता है जो कि पुण्य तीर्थ स्थानों एवं तपोभूमि में ही जाकर प्राप्त होते हैं । इसीलिए कुरुक्षेत्र जैसी महान तपोभूमि पर ऋषियों द्वारा विभिन्न तपोस्थल अर्थात वनों का उल्लेख पुराणों में मिलता है ।

ब्रहमवेदि कुरुक्षेत्र में सात वनों का उल्लेख वामनपुराण में मिलता है । आधुनिक सन्दर्भ में देखा जाए तो भी वनों की आवश्यकता कृषि उन्नति एवं वर्षा हेतु अत्यन्त आवश्यक है । सो कुरुक्षेत्र भूमि के शस्यश्यामला होने का कारण इसके समीपवर्ती सप्तवन का होना भी है । वामन पुराण स्नान तीर्थ अन्तर्गत कुरुक्षेत्र में सप्त वन एवं सप्त नदियों का उल्लेख मिलता है–

वनानि सप्त नो ब्रहि सप्त नधश्रय काः स्मृताः ।
तीर्थानि च समग्राणि तीर्थ स्नानफलं तथा ।।
श्रणुसप्त वनानीह कुरुक्षेत्रस्य मध्यतः ।
येषां नामानि पुव्यानि सर्व पापहराणि च ।।
वामन 34/13

कुरुक्षेत्र के मध्य में सात वन है जिनके नाम परम पुण्यमय हैं और समस्त पापों को हरने वाले हैं एक वन का नाम काम्यक वन है । जो परम पुण्यमय है । दूसरा महान अदिति वन है । एक पुण्यमय व्यास वन है तथा एक फलकी वन है । एक सूर्यवन वाला स्थान है तथा महान मधुवन है । पुण्य शीतवन नाम का वन हे जो समस्त पापों का नाश करने वाला है ।

काम्यक वनः–

वर्तमान गांव कमोदा ही काम्यक वन है । इसी गांव के पश्चिम मे काम्यक तीर्थ है । सरोवर के एक ओर प्राचीन पक्का घाट बना है तथा भगवान शिव का मंदिर भी है । कुरुक्षेत्र से पेहोवा

जाने वाली सड़क पर दक्षिण दिशा में यह गांव आता है । वामन पुराण में इस तीर्थ का उल्लेख इस प्रकार हुआ है ।

"तीर्थे च सर्व तीर्थानां यस्मिनस्नातो द्विजोतमा"
काभ्यकं च वनं सर्वपातकनाशनम् ।
वामन0 41/30

इस तीर्थ में स्नान करने वाला पुरुष सब तीर्थों में स्नान करने वाला हो जाता है । काम्यक वन परम पुण्यमय है एवं सब पापों का नाश करने वाला है । इस तीर्थ में प्रवेश करते ही मनुष्य सभी पापों से मुक्त हो जाया करता है एवं दर्शन मात्र से व्यक्ति मुक्ति को प्राप्त करता है । काम्यक वन से सम्बन्धित पाण्डवों की अनेक कथाऐं हैं । यहां पर पाण्डवों के आखेट के चले जाने पर जयद्रथ द्रोपदी का हरण करता है । पाण्डवों के साथ यहीं पर उसका भयंकर युद्ध होता है जिसमें जयद्रथ पराजित होता है और बंदी बना लिया जाता है इस वन में पाए जाने वाले जंगली पशुओं का परिचय भी महाभारत मे विशेष रुप से मिलता है । अर्जुन के दिव्यास्त्रों की प्राप्ति के लिए प्रस्थान करने पर यह वन अपने आश्रमों, ब्राहमणों एवं सरिताओं से परिपूर्ण था ।

फलकीवन (फल्गू तीर्थ):–

फलकीवन कुरुक्षेत्र के सात श्रेष्ठ वनों में से एक है । श्राद्ध पक्ष में सोमावती अमावस पर यहां बहुत बड़ा मेला लगता है जिसमें दूर दूर से यात्री स्नानादि करके पितृगणों को तृप्त करते हैं वामन पुराण में इस तीर्थ का उल्लेख इस प्रकार मिलता है–

सोमक्षये च संप्राप्ते सोमस्य च दिन तथा
यः श्राद्धं मत्यस्तस्य फलं पुण्यं ।
वामन0 36/49

सोमस्य प्राप्त होने पर सोम के ही दिन जो मनुष्य श्राद्ध करता है उसको बहुत ही पुण्य फल प्राप्त होता है:–

गंगायां च यथा श्राद्धं पितृन्प्रीणति नित्यशः
तथा श्राद्धं च कर्तव्य फलकी वन–माश्रितैः ।
वामन० 36/50

अर्थात गया तीर्थ में किया हुआ श्राद्ध जिस प्रकार से नित्य ही पितृगण को प्रसन्नता देता है उसी प्रकार का श्राद्ध फलकीवन तीर्थ में रहकर करने से प्रसन्नता को देने वाला है ।

मनसा स्मरते यमस्तु फलकीवन मुन्तमम् ।
तस्यैव पितर स्तुति प्रयास्यन्ति न संशयः ।
वामन० 36/51

मन से जो अत्युत्म फलकी वन का स्मरण किया करता हे उसके पितर तृप्ति को प्राप्त हो जाते हैं, इसमें कुछ भी संशय नहीं है । पौराणिक कथा के अनुसार प्राचीन काल में महर्षि फलगू ने फलकीवन में अर्थात वर्तमान फरल गांव में तपस्या करके जया सुर नामक दैत्य पर विजय प्राप्त की थी । कहते हैं कि गया जी में गयासुर नामक दैत्य रहता था । उसकी तीन लड़कियां थी सोमा, भोमा और गोमा । गयासुर की यह प्रतिज्ञा थी कि जो मुझे युद्ध में परास्त करेगा उस के साथ तीनों कन्याओं का विवाह कर दूंगा । फलकीवन में फलक ऋषि अत्यन्त तपस्वी थे । जब उन्होंने इस प्रतिज्ञा को सुना तो मन ही मन गयासुर से युद्ध की ठान ली । गयासुर को युद्ध में पराजित किया एवं उस की तीनों कन्याओं से विवाह किया । सोमा के नाम से ही सोमावती अमावस को ही इस तीर्थ पर मेला लगता हे । सोमा से फलक ऋषि का अत्यन्त स्नेह था तथा पितरों की तृप्ति हेतु उन्होंने उसे वरदान दिया कि श्राद्धों की सोमावती अमावस के दिन जो पिडंदान का महत्व गया जी में होगा वही फलगू तीर्थ अथवा फलकी वन में मिलेगा । वरन् फलगू में पिण्डदान का महत्व गया से भी अधिक प्राप्त होगा । उस दिन गया जी में पिण्डदान नहीं होता । इस प्रकार गृहस्थ आश्रम में रहकर फलक ऋषि पितृ ऋण, ऋषिऋण और देवऋण तीनों से मुक्त हो गये । इस प्रकार तभी से श्रद्धालु लोग लाखों की संख्या में पितृ श्राद्धतर्पण हेतु श्राद्ध पक्ष सोमवती अमावस के पुण्य अवसर पर यहां आते हैं और अपने पितरों की मुक्ति हेतु पिंड दान करते हैं ।

हरियाणा सरकार के सहयोग से कुरुक्षेत्र विकास मंडल द्वारा फलगू तीर्थ का जीर्णोद्वार हो चुका हे । सुन्दर घाट बनाए गये है । फलगू ऋषि की भव्य प्रतिभा एवं मंदिर का पुर्ननिर्माण हुआ है । सोमावती अमावस श्राद्धपक्ष में बहुत बड़ा मेला लगता है । जिसे हरियाणा सरकार द्वारा प्रान्तीय मेला घोपित किया जाता है । आने वाले यात्रियों के लिए व्यापक मेला प्रबन्ध किए जाते हैं । फरल गांव से दो किलोमीटर दूरी पर श्रेष्ठ तीर्थ पाणिश्वर है महाभारत के अनुशासन पर्व में दसवे अध्याय में कहा गया है कि इस तीर्थ में स्नान करने से मनुष्य को एक हजार गौदान के समान फल प्राप्त होता है । मनुष्य पाणिश्वर तीर्थ में स्नान करके पितरों का तर्पण करता है वह राजसूय यज्ञ में फल को भोग कर मुक्ति के द्वार पर पहुंच जाता है । दृपद्वती, फलकीवन तथा फलगूतीर्थ के इस श्रेष्ठ माहात्म्य को जो व्यक्ति पढ़ता है, सुनता है वह दुलर्भ से दुर्लभ वस्तु को भी प्राप्त कर लेता है । शास्त्रों में ऐसा वर्णन है कि इस के माहात्म्य को पढ़ने एवं सुनने से रोगी रोग से, पितृ पीड़ा से बन्धया बांझपन से छूटकर पुत्र पैदा कर लेती है ।

इस प्रकार इस वन का अत्यन्त महत्व हे । यह वन देवों द्वारा आश्रित था तथा वे यहां पर सहस्त्र वर्षो तक तप किया करते थे । वामन पुराण में कहा भी है–

तत्तो गच्छेते राजेन्द्र फलकी वनमुत्तमम्
यत्रः देवा सदा राजन्पालक वनमाश्रिताः
वामन() 15/45

आदिति वन एवं वामनवतार कथाः-

"ततो गच्छेभ्दि विपेन्द्रा नारम्नाऽदिति वनं महत"

वामनपुराण में अदितिवन को अत्यन्त महान एव पुण्यमय बतलाया गया है । जहां पर देवमाता अदिति ने पुत्र प्राप्ति के लिए महान घोर तपस्या की थी वहां पर अदिति तीर्थ स्नान करके अदिति देवी की अर्चना करके जो कि देवगण की माता है समस्त दोषों से रहित शूरवीर पुत्र के जन्म को प्राप्त किया । वह पुत्र सौ सूर्यो के समान तेज से युक्त हुआ है तथा विमान पर अधिरोहण ।

वामनपुराण के अनुसार राजाबलि ने जन देवताओं पर विजय प्राप्त कर ली तो इन्द्र देवता अपनी माता के पास पहूंचे और उसे यह समाचार सुनाया कि सब देवता बलि दानव द्वारा परास्त कर लिये गये हैं । माता अदिति ने कहा-यदि हे पुत्र ऐसा है तो उस दानव को आप लोग युद्ध में नहीं मार सकते । बलि विरोचन का पुत्र वह समस्त मरुदगण के साथ केवल सहस्त्र शिर वाले के द्वारा ही हनन किया जा सकता है सो तुम अपने पिता से जाकर पूछो कि उस महाबलि दैत्यराज बलि की हार कैसे होगी । तदनन्तर सभी देवता इकट्ठे होकर महर्षि कश्यप के पास गये और उनसे कहा-वन में अत्याधिक दैत्यराज बलि युद्ध में इन्द्र के द्वारा अजेय हो रहा है अतः सभी लोग दुःखी हैं । आप इस कष्ट का निवारण कीजिए। कश्यप मुनि ने कहा- आप सभी लोक ब्रह्मलोक में जाने का उपाय करें । वहां ब्रह्मा जी ही आप को बतलाएंगे कि दैत्य राज बलि किस प्रकार जीता जाएगा। तत्पश्चात कश्यप जी आदित्यदि के साथ समस्त देवगण ब्रह्मा जी के पास गये। कश्यप जी के साथ आये हुए सभी सुरों को देखकर महान तेज वाले ब्रह्मा जी ने कहा - आप सभी लोग जिस कार्य हेतु आए हैं मैं उसके लिए विवश हूँ। सुरों के शत्रुओं के विषय में केवल मेरी गति नहीं है। हमें आदि देव एवं सनातन भगवान विष्णु की आराधना करनी होगी वे क्षीर सागर में निवास करते हैं। वे स्वयं पुरुषोतम प्रभु देवों को, हम को, एवं सम्पूर्ण विश्व को जानने वाले हैं। तो सभी ने इस प्रकार क्षीर सागर भगवान विष्णु के पास गमन किया। भगवान विष्णु उनके इस कृत्य पर अत्यन्त प्रसन्न हुए। उन्होंने कहा- हे वरद स्थित देवगण मैं महर्षि कशयप के लिए वर देता हूँ। हे सुरश्रेष्ठों में आपका स्वागत करता हूँ उस वर को महार्षि कश्यप एवं उनकी पत्नी अदिति ने स्वीका किया। एक 'परम धीमान परमेश्वर के प्राणों में सिर झुकाकर उन्होंने प्रार्थना की आप हमारे ऊपर प्रगाट करें कि आप ही स्वयं पुत्र रुप में हमारे घर जन्म ग्रहण करें । भगवान ने परम सुरम्य वाणी में "तथास्तु" अर्थात् ऐसा ही होगा। सभी देवताओं ने प्रभु के चरणों में मस्तक झुकाकर प्रणाम किया। फिर सभी देवगण भगवान ब्रह्मा के आदेशानुसार समस्त सागरों तथा वनों के सहित सम्पूर्ण पर्वतों का भ्रमण करते हुए पृथ्वी पर अनेक पुण्यमयी नदियों में स्नान करते हुए महात्मा

कश्यप ने अमृत स्थान की प्राप्ति की। सहस्त्रों वर्षों तक व्रत किए। भगवद् स्तुति की, अदिति ने भी भगवान की स्तुति की। इस प्रकार प्रभु से वरदान पाकर सभी देवगण कश्यप आश्रम में वापिस गये। कश्यप के आश्रम में पहुंचकर वे महान कुरुक्षेत्र वन में गये जहां अदिति देवी को भलीभांति सुनियोजित तपस्या के लिए प्रेरित किया। देवी अदिति ने यहां दस हजार वर्ष तक महान घोर तप किया। उसी के नाम से यह वन दिव्य एवं सम्पूर्ण कामनाओं को प्रदान करने वाला अदिति वन परम शुभ हो गया। इस वन मे देवी अदिति ने पूर्ण मौन वती एवं केवल वायु का ही भोजन करके तपस्या की। भगवान ने प्रसन्न होकर अदिति को दर्शन दिए एवं उन्हें वरदान दिया कि वे अपने सभी मनोरथों को प्राप्त करेगी क्यूंकि तू बहुत बड़ी धर्म का ज्ञाता है। इसके अतिरिक्त उन्होंने यह भी वरदान दिया कि मेरे इस वन में जो कोई तीन रात्रि भी स्थित होकर साधना करेगा उसके सभी इच्छित कार्य पूर्ण होगें। दूर में भी स्थित कोई मनुष्य यदि अदिति की तपश्चर्या कर उस वन का स्मरण करेगा, वह भी परम पद को प्राप्त होगा। अदिति वन की ऐसी महिमा है, जो उस वन में निवास करता है उसके लिए क्या कहा जाए। यहां पर जो कोई पांच तीन दो अथवा एक भी ब्राह्मण को श्रद्धा युक्त होकर भोजन कराता है वह परम गति को प्राप्त करता है।

दूरस्थोऽपि वनं मस्तुहयदिते स्मरते नरः
सोऽपि याति परं स्थानं कि पुर्ननिवसन्नरः
वामन 28/51

इस प्रकार से अदिति ने समस्त कामनाओं की समृद्धि देनि वाले वरदान को प्राप्त किया। और फिर महान यश वाले देवेश हरि क्रम से वामन की आकृति वाले भगवान गोविंद सभुत्पन्न हुए। जगतनियन्ता वामनेश्वर भगवान के अवतीर्ण होने पर सब देवगण के दु|ख छूट गये। ब्रह्मा जी नें उन्हें एक मृगछाला, वृहस्पति ने यज्ञोपवीत, ब्रह्मा के पुत्र मरीचि ने आपाढ़ दण्ड, वसिष्ठ ने कमण्डलु, अंगिरा मुनि ने कुशाएं व चीर दिया। पुलह ने आसन, पुलस्त्य ने पीत वस्त्र, वेदों एवं समस्त शास्त्रों ने उन्हें उपस्थान दिया। जटाजूट धारण करने वाले दण्डधारी वामनदेव राजा बलि के यक्ष स्थल में गये। शुकराचार्य जी ने उन्हें यज्ञों के स्वामी ऐसा कहकर सम्बोधित किया क्यूंकि हरि के माया के तो सभी वशीभूत होते हैं। राजबलि ने कहा– मैं परम धन्य हूँ, मैनें कोई बहुत बड़ा पुण्य किया है जिससे आप मेरे यज्ञ में पधारे हैं। हे ब्रहमण इस समय संसार में और कौन अधिक भाग्यशाली हो सकता है। यज्ञ की समाप्ति पर राजाबलि ने प्रसन्नता से कहा कि हे भगवन मेरे यहां जो भी स्वर्ण रत्न मणियों का संग्रह है सो आप सभी गज, गोधन, वस्त्र, अलंकार व भूमि इत्यादि जो भी आप को अभीष्ट हो देने के लिए तैयार हूँ। भगवान वामन देव ने गम्भीरता से कहा – कि मुझे हे राजन् इस समय अग्नि ताप हेतु तीन पग भूमि दो। स्वर्ण इत्यादि की मुझे आवश्यकता नहीं। मैं तो केवल तीन पग भूमि से ही कृत्कृत्य हो जाऊंगा। महाबाहु बलि ने सहर्ष वामन भगवान को तीन पग भूमि का दान कर दिया। उसी क्षण भगवान वामन ने सुविस्तृत सर्व देवगण स्वरुप बना लिया और तीन लोकों को पूर्णतया जीतकर सभी असुरों को मार कर त्रिभुवन को

इन्द्रदेव के लिए दे दिया। सतुल नाम वाला पाताल लोक भगवान विष्णु ने राजा बलि को दे दिया और राजा बलि को कहा– हे दैत्यराज जो तुमने संकल्प ग्रहण किया था। उससे एक कल्प के प्रमाण पर्यन्त आप की आयु होगी। वामन बलि का यह प्रसंग सभी को अभीष्ठ फल देने वाला है।

ब्राह्मण को वेदों के ज्ञान का लाभ होता है। क्षत्रिय भूमि को प्राप्त करता है। वैश्व धन की समृद्धि का लाभ लेता है एवं शुद्र सभी प्रकार का सुख प्राप्त करता है। जो भी वामन देव के इस महात्म्य का श्रवण करता है वह सभी प्रकार के पापों से मुक्त हो जाता है। इस प्रकार अदिति वन में निवास करने का महापुण्य है । जो इस वन में तीन रात निवास करता है उस की सभी इच्छाएं पूर्ण हो जाती हैं –

यशचेह तद्वने स्थितवा त्रिरात्रं वै करिष्यति ।
सर्वे कामाः समृध्यन्ते मनसा चनिहेच्छति।
वामन 7/4

यह वन अमीन ग्राम में स्थित है। जोकि कुरुक्षेत्र से लगभग आठ किलामीटर दक्षिण में है। इस स्थान पर चक्रव्यूह किले की बुनियाद है जहाँ अभिमन्यु वीर गति को प्राप्त हुए थे। महाभारत के युद्ध में कौरवों ने अपनी सेना का एक व्यूह रचा था जिसमें अभिमन्यु प्रवेश कर तो गया था परन्तु बाहर जाने का मार्ग एवं विधि न जानने के कारण मारा गया। यहां के खण्डरों से बड़ी भारी इंटे निकली हैं। जिन पर पर्जे का सा आकार होता है। लोगों में यह विश्वास है कि जिस स्त्री को प्रसव पीड़ा अथवा बालक पैदा न होता हो तो एक ईंट को उसके सिहारने रखने से या उसको घोलकर पिलाने से तत्काल बालक बिना किसी पीड़ा के जन्म

ले लेता है। महाभारत में भी उल्लेख मिलता है कि यदि चक्रव्यूह यंत्र लिखकर इसको इसको पानी में धोकर गर्भवती स्त्री को पिलाया जाए तो बालक आसानी से उत्पन्न हो जाता है।

व्यास वन :–

व्यास्य च वनं पुण्यं फलकीवनेव च ।
वामन 34/4

वामनपुराण में व्यास एवं फलकी वन महापुण्यशाली माने गये हैं। उपरोक्त श्लोक से भी प्रतीत होता है कि दोनों वन समीप ही स्थित हैं । व्यास वन संभवतः फलीकीवन के पश्चिम में स्थित था। दूसरे इस वन का नाम भी महर्षि वेदव्यास के नाम से पड़ा। अतः महाभारत पुराण की रचना भी यहीं हुई थी इसमें कोई मतभेद नहीं। इस वन में व्यास जी से सम्बन्धित व्यास स्थली तीर्थ भी विद्यमान हैं। वामनपुराण के अनुसार इस स्थल पर व्यास ने पुत्र शोक से सन्तपत होकर देह त्याग करने का निश्चय किया था।

ततोव्यासस्थली नाम यत्र व्यासेन धीमता
पुत्र शोकाभितप्तेन देह त्यागर्थ निश्चय ।
महाभारत वनपर्व 81/81

व्यास आश्रम के सम्बन्ध में भी महामहोपाध्याय पण्डित गिरिधर शर्मा चतुर्वेदी ने अपनी पुस्तक पुराण परिशीलन के अन्तर्गत भी इस बात का पुष्टि की है कि व्यासाश्रम सरस्वती नदी के समीप था एवं सरस्वती नदी कुरुक्षेत्र में ही मिलती है जोकि पश्चिम दिशा में है अतः कुरुक्षेत्र से पश्चिम दिशा में ही उनका आश्रम था। महाभारत में हस्तिनापुर में और युद्धस्थल में भी कई बार उनका आवागमन वर्णित है यह भी तभी संभव होता है जबकि कुरुक्षेत्र के समीप ही उनका आश्रम माना जाय।

मधुबनः–

इस वन तीर्थ का भी वामनपुराण में उल्लेख हुआ है।
"लोलदिवाकरं दृष्टवा ततो मधुवनं यथौ" । 57/31

यहां पर प्रहलाद ने स्वयंभु देव के दर्शन किए थे एवं उनकी पूजा की थी । वामन पुराण के इस वर्णन से यह प्रतीत होता है कि यह वन सरस्वती नदी के समीप ही था। क्यूंकि मधुबन नामक तीर्थ मोहना नामक स्थान पर कैथल से बीस किलोमीटर पूर्व में स्थित है।

सूर्यवनः–

वामनपुराण में वर्णित कुरुक्षेत्र के सात वनों में सूर्यवन की भी गणना हुई है। सूर्यतीर्थ सजूमा क्षेत्र से संम्बधित है जो कि कैथल से 11 किलोमीटर दक्षिण पूर्व में स्थित है। इस वन की कोई कथा वामनपुराण में उद्घृत नहीं है।

शीतवनः–

इस वन का उल्लेख भी वामनपुराण में मिलता है। "पुण्यशीत वनं नाम सर्व कल्भषनाशनम्" । शीतवन नामक अत्यन्त पुण्य वन हैं जो समस्त पापों का नाश करने वाला है। वर्तमान सीवन गांव से ही इस वन की संगति बैठती है। सीवन कैथल से 11 किलोमीटर उतर में है। इस वन में दण्डक, स्वानुलीवामन तथा दशाश्वमेधिक आदि दुर्लभ तीर्थ विधमान हैं।

ततः शीतवनं गच्छेन्नियते नियताशनः
तीर्थं तत्र महाराज महदन्यत्र दुर्लगम् ।।
वामन 14/44

कुछ विद्वानों ने इस वन को सीता से संबंधित भी माना है। उपरोक्त वनों के अतिरिक्त महाभारत में द्वैतवन का वर्णन भी आया है जिसका संबंध भी कुरुक्षेत्र से ही है। क्यूंकि इन वन में होकर सरस्वती नदी बहती है। पाण्डवों ने भी अज्ञातवास के समय यही निवास किया था। वनपर्व के अन्तर्गत इस वन का अत्यन्त मनोरम एवं रोचक वर्णन हुआ है। युधिष्ठर ने वन में प्रवेश करने पर विशाल हाथियों के झुण्ड, सर्प, मयूर, चातक, चकोर एवं कोयल आदि पक्षियों को देखा। इस वन में सिद्ध ऋषि मुनि रहा करते थे । युधिष्ठर ने भाइयों द्वारा गंधर्वों को हरा कर यहीं दुर्योधन को मुक्ति दिलाई थी ।

इस प्रकार कुरुक्षेत्र के सप्त वन अपने आप में पूरे तीर्थ हैं क्यूंकि जहां भी महापुरुष स्थान बनाते हैं वहां कुछ गतिविधियां चलाते हैं, उनके प्रताप से वह स्थान पुण्यभूमि अथवा आदर्श तीर्थ बन जाता है। भारतीय संस्कृति की महान विरासत को संभाले हुए वे तीर्थ आज भी उतने ही पवित्र पावन स्थल हैं जितने वर्षों पूर्व महाभारत काल में या उससे भी पूर्व ।

****

कुरुक्षेत्र के दर्शनीय मन्दिर

मन्दिर श्री ध्रुव नारायणः-

यह मंदिर सन्निहित सरोवर के पश्चिमी तट पर बना हुआ है । मंदिर के मध्य में चतुर्भुज नारायण एवं भक्त ध्रुव की मनोहारी प्रितमायें सुसज्जित हैं । पूर्व भाग में तीर्थ की ओर मुख किए हुए हनुमान जी की विशालकाय मूर्ति है । सिंहवाहिनी अष्टभुजी मां दुर्गा जी की संगेमरमर की प्रतिमा है। सन्निहित तीर्थ घाट पर ही भगवान श्रीसूर्यनारायण का मंदिर है जिस में भगवान सूर्यदेव की आकर्षक प्रतिमा है। सन्निहित सरोवरको सूर्यकुण्ड भी कहा जाता है। संभवतः इसीलिए सूर्यदेव का मंदिर यहां पर शोभाययमान है। भगवान शंकर की विशाल प्रतिमा सन्निहित सरोवर के उतरी भाग में स्थापित की गई है। इसे बनाने का श्रेय स्थानीय शिक्षण महाविधालय के प्राध्यापक श्री कुशवाहा जी को है। यह मूर्ति वास्तव में अत्यन्त अनुपम एवं पर्यटकों के आकर्पण का केन्द्र बनी हुई है। ब्राह्मण पंचायत द्वारा निर्मित सन्तोपी मां का भव्य मंदिर भी इसी के निकट बना है जिसमें मां सन्तोपी, मां गायत्री की प्रतिमाएं प्रतिष्ठित हैं ।

मन्दिर श्री लक्ष्मीनारायणः-

सन्निहित सरोवर के पश्चिमी छोर पर भगवान लक्ष्मीनारायण का अद्वितीय मन्दिर शोभायमान है। इस मन्दिर की बनावट दक्षिण की चौल शैली से मिलती जुलती है। यह अत्यन्त सुन्दर एवं कलात्मक है। इस मन्दिर का निर्माण एक सिद्ध महात्मा बाबा शिवगिरि जी ने करवाया था। मन्दिर काफी उंचा है एवं काफी दूरी से स्पष्ट दिखाई देता है। इस का शिखर इतना पतला है कि स्थानीय श्रदालू इसे सींख वाला मन्दिर भी कहते हैं । मन्दिर में यात्रियों के आवास एवं भोजन की व्यवस्था भी है । साधु सन्तों भिक्षुओं को सदाव्रत बांटा जाता है । मन्दिर के वर्तमान प्रबन्धक श्री स्वामी हरनंदगिरि जी महाराज हैं जिन के संरक्षण में मन्दिर की गतिविधि सुचारु रुप से चल रही है।

श्रीकृष्णधाम एवं श्री सन्तराम अरोड़ा धर्मशालाः-

परम श्रद्वेय त्यागमूर्ति महामण्डलेश्वर स्वामी गणेशानंद जी महाराज की पावन छत्रछाया में आज से लगभग 15 वर्ष पूर्व श्री कृष्ण धाम का निर्माण प्रारम्भ हुआ। यहां के निवारियों की आशानुरुप, स्वामी जी महाराज ने सन्निहित सरोवर के उतर पूर्वी किनारे पर एक विशाल कम्लैक्स का निर्माण करवाया है जो कि वर्तमान एवं भावी पीढ़ी के लिए एक अमूल्य निधि बन गया है। श्री कृष्णधाम ब्यास के अन्तर्गत, स्वामी जी महाराज की प्रेरणा से उनके अनन्य सेवक सेठ श्री पूरणचंद जी अरोड़ा द्वारा एक विशाल श्री सन्तराम अरोड़ा धर्मशाला का निर्माण हुआ जिसमें यात्रियों के निवास हेतु 40 कमरे हैं एवं इनमें सभी आधुनिक सुविधायें उपलब्ध हैं । तीर्थ के अत्यन्त निकट होने से इस धर्मशाला का महत्व और भी बढ़

गया है।

धर्मशाला के साथ साथ स्वामी जी महाराज की प्ररेणा से अन्य कई प्रकार की सेवाएं भी जनताजनार्दन की सेवा हेतु चल रही है। श्री कृष्ण निःशुल्क नेत्र चिकित्सालय एवं जनरल हस्पताल, प्रसूतिग्रह भी चलाये जा रहे हैं जिसमें कुरुक्षेत्र की शहर एवं ग्राम की जनता स्वास्थ्य लाभ प्राप्त कर रही है।

श्री भारतीय सनातन धर्म महाबीर दल का मुख्यालय भी श्री कृष्णधाम में स्थित है जिसे स्वामी जी महाराज का संरक्षण प्राप्त है। उनकी प्रेरणा से इस दल की गतिविधयां पंजाब, हरिययाणा, हिमाचल राजस्थान इत्यादि में यात्रियों की सेवा हेतु देश धर्म एवं मानव सेवा के लक्ष्य से निरन्तर निष्काम भाव से अग्रसर हो रही हैं । यह दल न केवल प्रान्तीय एवं देश के विभिन्न पर्वों पर सेवाशिविर लगाते हैं और अपने अपने स्थानों पर भी लोक सेवा के कार्य जैसे फ्री हस्पताल, सतसंग, मन्दिर निर्माण एवं अन्य सेवा कार्यों में लगे हुए है। श्री कृष्णधाम में स्वामी जी महाराज की प्रेरणा से एक विशाल संतसंग भवन "बजरंग भवन" का भी निर्माण हुआ है। इस भवन में भगवान शंकर, भगवान कृष्ण एवं श्री हनुमान जी की अद्वितीय प्रतिमाएं विराजमान हैं ।

बाबाकाली कमली क्षेत्रः—

सन्निहित सरोवर के दक्षिणी तट पर बावा काली कमी का विशाल क्षेत्र है । यहां यात्रियों की सुविधा हेतु विशाल धर्मशाला है जिसमें लगभग 70 कमरे हैं । इस क्षेत्र में दो मन्दिर है एक में भगवान कृष्ण, अर्जुन तथा दूसरे में भगवान शंकर की प्रतिमाएं सुशोभित हैं ।

श्रीगीताधामः—

भारत के महान सन्त तपोनिधि स्वामी श्री गीतानन्द जी महाराज के सरंक्षण में निर्मित श्रीगीताधाम कुरुक्षेत्र के दर्शनीय स्थलों में एक हैं । स्वामी जी महाराज कर्मठ महापुरुष हैं जो कि सेवा कार्यो में ज्यादा विश्वास रखतें हैं न कि सुन्दर भवन के निर्माण में: अस्तु गीताधाम द्वारा अनाथ बच्चों के लिए विधालय बनाया गया है जहां उन्हें निःशुल्क शिक्षा, एवं आवास की व्यवस्था दी जाती है। न केवल आवास भोजन एवं वस्त्रों की पूरी व्यवस्था है और बालक एक अच्छा नागरिक बनाने की पूरी कोशिश की जाती है। दूसरे वृद्धों को सहारा देने हेतु वृद्ध आश्रम की स्थापना भी की गई है जो कि सारे हरियाणा में पहला प्रयास है। वृद्ध पुरुष को न केवल स्वछन्द आवास दिया जाता है वरन् उन्हें धार्मिक कृत्यों हेतु भी प्रोत्साहन दिया जाता है। एक विशाल गोपालन केन्द्र भी खोला गया है जिसमें अच्छी हृष्ट पुष्ट गाएं रखी जाती हैं । विधालय के छात्र गीता पाठ सतसंग एवं धार्मिक अनुष्ठानों में विशेष प्रवीण हैं ।

श्री वेदधामः–

श्री जयराम विधापीठ कुरुक्षेत्र द्वारा ब्रहमसरोवर के उतरी तट पर निर्मित श्री वेदधाम, जिसमें आधुनिक साज सज्जा से सुशोभित श्री राधाकृष्ण, रामदरबार मां दुर्गा, हनुमान जी एवं भगवान शंकर की भव्य प्रतिमाएं विधमान है। इन मन्दिरों एवं चार वेदों की प्रतिष्ठा स्थापना मार्गशीर्ष शुक्ला दशमी रविवार 3–12–1984 को तत्कालीन हरियाणा के मुख्य मंत्री चौ० भजन लाल जी द्वारा सम्पन्न हुई थी। श्री वेदधाम के संचालक पूज्यवाद श्री देवेन्द्र स्वरुप जी ब्रहमचारी है जिनके सरंक्षण में जयराम विधापीठ में संस्कृत पाठशाला सुचारु रुप से चल रही है। हर पर्व पर भगवान की शोभायात्रा, संकीर्तन भजन एवं पूजा आराधना होती है। यात्रियों की सुविधा हेतु धर्मशाला का निर्माण भी हो चुका है। मन्दिर के प्रांगण में प्लास्स्टर आफ पेरिस द्वारा निर्मित दशावतार, भीष्म, शैल्या, कर्ण अर्जुन युद्ध इत्यादि अत्यन्त भव्य एवं मनोरम बने हैं। वेद भगवान की यज्ञशाला अनुपम दृश्य प्रस्तुत करती है। ब्रहमवेदि कुरुक्षेत्र को साकार रुप देने मे विधापीठ का यह प्रयास वस्तुतः प्रशंसनीय है।

गौड़िय मठः–

ब्रह्मसरोवर के उतरी तट पर स्थित यह मठ मन्दिर श्री वैतस्य महाप्रभु के सम्प्रदाय से सम्बन्धित हैं । जिन्होंने सर्वप्रथम नाम संकीर्तन का प्रचार किया था, उन्हें गौरांग्र प्रभु भी कहा जाता है । इस मठ में बंगाली साधु निवास करते हैं जो "हरे कृष्ण" नाम संकीर्तन का प्रचार प्रसार करते हैं । मठ में श्री राधाकृष्ण की भव्य मूर्तियां हैं । श्री कृष्ण जन्माष्टमी के अवसर पर चल–झांकियां देखने योग्य होती हैं ।

गीताभवनः–

गीताभवन की स्थापना रीवानरेश द्वारा सन् 1921 में हुई थी। इस का सर्वप्रथम नाम "कुरुक्षेत्र पुस्तकालय" रखा गया था । इस भवन की इमारत बहुत ही सुन्दर ढंग से "राजमहल" की भांति बनी हैं । मन्दिर में भगवान मुरलीमनोहर, भगवान शंकर, मां दुर्गा की भव्य मूर्तियां हैं । मन्दिर का प्रबन्ध श्री कुरुक्षेत्र जीर्णोद्वारा समिति द्वारा किया जाता है। मन्दिर में यात्रियों के ठहराने हेतु लगभग 50 कमरे हैं ।

हवेली बावा श्रवण नाथः–

श्रीगीता भवन के समीप कुरुक्षेत्र सरोवर के उतरी तट पर बावा श्रवणनाथ की हवेली एक किले के रुप में बनी हुई है । बावा श्रवणनाथ की संत्रवीं शताब्दी के सिद्ध महात्मा थे। उन्हीं द्वारा इस हवेली का निर्माण करवाया गया । उनकी प्रतिभा से प्रभावित होकर महाराजा रणजीत सिंह ने उन्हें लुधियाना में एक चकश्रवण की जागीर प्रदान की । बावा श्रवणनाथ द्वारा भण्डारे में आने वाले साधुओं का मुंह मांगी वस्तु प्रदान की जाती थी। एक बार अवधूत बावा लक्ष्मणगिरिजी भैंसे पर सवार होकर भण्डारे में आये और रवपर में मनोदूध डाला परन्तु रवपर नहीं भर सका। इस पर शिष्यों ने जाकर बावा श्रवणनाथ जी को एतदर्थ सूचना दी। बावा लक्ष्मणगिरि जी के रवपर में दूध डालने लगे। अब न तो रवपर ही भरता है न दूध की

धार ही समाप्त होती है। कुछ देर तक यह चमत्कार चलता रहा । तब दोनों सिद्ध महापुरुषों की दृष्टि मिली तो एक दूसरे को पहचान कर दोनों आलिंगन बद्ध हो गये।

हवेली का प्रबन्ध महानिर्वाणी अखाड़े के द्वारा सुचारु रुप से चलाया जा रहा है। वर्तमान प्रबंधक दिगम्बर बावा शरणपुरी जी महाराज हैं जिनके परिश्रम एवं धार्मिक चेतना से इस हवेली का पुनर्निर्माण सा हुआ है । हवेली में पांचपाण्डव, कौरव, चक्रधारी, श्रीकृष्ण, विशालकाय हनुमान जी, शैय्या पर लेटे भीष्म पितामह, भगवान श्री लक्ष्मीनारायण, मां दुर्गा एवं बावा श्रवणनाथ जी की मनोहारी सुन्दर प्रतिमाएं हैं। श्री कृष्ण जन्माष्टमी पर विशेष उत्सव मनाया जाता है जिसमें भगवान की विशेष शोभायात्रा श्री नाभिकमल तीर्थ से प्रारम्भ होकर हवेली श्रवणनाथ में समाप्त होती है। सभी नगर निवासी धूमधाम से इस पर्व पर एकत्रित होकर संगीत लयताल एवं नृत्य से भगवान के गुणों का गान करते हैं।

बिरला मन्दिरः–

कुरुक्षेत्र ब्रह्म सरोवर के समीप ही कुरुक्षेत्र पेहोवा मार्ग पर लाल पत्थर से निर्मित चारदीवारी इस बात का प्रतीक है कि यह मन्दिर बिरला जी द्वारा बनवाया गया है। क्यूंकि भारत में विशेंपकर तीर्थ स्थानों पर अनेक मन्दिर ऐसी ही निर्माण शैली के हैं । कुरुक्षेत्र बिरला मन्दिर भगवद् गीता मन्दिर बिरला जी द्वरा 1955 में बनवाया गया था। मन्दिर में भगवान चक्रधारी श्री कृष्ण की विशाल, आकर्षक, संगमरमर की मूर्ति है । इसके अतिरिक्त मन्दिर में अर्जुन को उपदेश देती हुई श्री कृष्ण की सुन्दर प्रतिमाएं हैं। सन्त महात्माओं के चित्र एवं उनकी वाणी अंकित हैं । दीवारों पर गीता के अठारह अध्याय अंकित हैं । मन्दिर के बारह उतरी छोर पर श्वेत संगमरमर से बना चार घोड़ों का अनुपम रथ है जिसमें भगवान कृष्ण एवं अर्जुन विराजमान हैं। दक्षिणी भाग में यात्रियों के निवास हेतु सुविधाजनक धर्मशाला है। मन्दिर में संस्कृत विद्यालय, छात्रावास एवं व्यायाम शाला की भी व्यवस्था है। जन्माष्टमी का त्यौहार मुख्य रुप से इसी मंदिर में मनाया जाता है भगवान के भजनोपदेश, रासलीला का आयोजन किया जाता है।

श्रीहनुमान मन्दिर सब्जीमण्डी

सर्वकामनापूर्ण थानेसर शहर के मध्य में स्थित संकटमोचन आंजनेय नंदन का मंदिर शोभायमान है। श्री हनुमान मंदिर सभा (रजि०) थानेसर द्वारा एक छोटे से मंदिर का जीर्णोद्वार किया गया है। पहले यहां पीपल के वृक्ष के नीचे एक छोटा सा मंदिर था हनुमान जी ने कृपा की तो आज ये तीन मंजिल विशाल कंप्लेक्स बन कर उभरा है। मन्दिर का निर्माण कार्य चल रहा है। नगर के लोग पूरे तन, मन, धन से सेवा कर रहे हैं । मन्दिर में श्री हनुमान जी, दुर्गा मां, शिव परिवार की विशाल मूर्तियां स्थापित की जा रही हैं । दीवारों पर चारों ओर सुन्ददर शीशे एवं चांदनी से सुन्दर चित्र बनवाए गये हैं जिन की छटा देखते ही बनती है। मन्दिर सभा द्वारा जन कल्याण हेतु, सार्वजनिक वाचनालय, फ्री हौम्योपैथिक डिस्पेन्सरी

कुरुक्षेत्र के निकटवर्ती मुख्य तीर्थ

रत्नयक्ष तीर्थः-

यह तीर्थ कुरुक्षेत्र से पिपली जाने वाली सड़क पर कुरुक्षेत्र रेलवे स्टेशन से लगभग एक मील की दूरी पर है। यहां पर एक पवित्र सरोवर तथा स्वामी कार्तिकेय का एवं रत्नयक्ष का मन्दिर है।

अभिमन्यु खेड़ा (अमीन तीर्थ) :-

इस तीर्थ का वामन पुराण में अदिति वन के अन्तर्गत विवरण आता है। यह तीर्थ अमीन में स्थित है। यह कुरुक्षेत्र से लगभग 8 किलोमीटर दूर दक्षिणपूर्व में एक टीले पर बसा हुआ है। कहा गया है कि महाभारत के अनुसार गुरु द्रोणाचार्य ने युद्ध के समय कौरव सेना की ओर से यहां पर चक्रव्यूह की रचना की थी तथा जिसमें वीर अभिमन्यु वीरगति को प्राप्त हुये थे। इसी स्थल पर अभिमन्यु ने चक्रव्यूह का भेद न किया था अतः परम्परानुसार यह स्थान अभिमन्यु खेड़ा के नाम से जाना जाता है। यह क्षेत्र एक विशाल टीले पर बसा हुआ है जिस की लम्बाई दो हजार फुट चौड़ाई 800 फुट एवं ऊचांई 30 फुट तक है। इसी स्थान पर अदिति ने भगवान को पुत्र रुप में पाने हेतु दस हजार वर्ष तक तप किया था। अमीन के साथ अन्य तीर्थ हैं अदिति कुण्ड, कर्णवध, जयधर, वामन कुण्ड तथा सोमतीर्थ । यहां परसान करने से माता शूरवीर पुत्र को जन्म देती है।

पवनह्रद (पपनावा) :-

यह तीर्थ कुरुक्षेत्र से कैथल जाते हुए रेलमार्ग पर स्थित है। यह तीर्थ महाभारत एवं पुराणों में वर्णित होने के कारण अत्यन्त प्राचीन है। यह तीर्थ पवन देवता से सम्बन्धित था। अतः पवनह्रद कहलाता था। महाभारत में इसे मरुत से सम्बन्धित बतलाया गया है। परमपुराण में इस का सम्बन्ध दधीचि से स्थापित किया गया है। इसके अतिरिक्त वामन पुराण में इस तीर्थ का सम्बन्ध शिव एवं पवन दोनों से स्थापित किया गया है। पौराणिक आख्यान के

अनुसार इस ह्रद में पवन पुत्र–शोक संतप्त होकर छुप गया था तथा ब्रह्मा आदि देवताओं ने उसे किसी प्रकार प्रसन्न कर के पुनः प्रकट किया।

पुत्रशोकाभिभूतं पवनो यस्मिललीनो वभूवह
ततः स ब्रहमके देवै प्रसाय प्रकटी कृतः ।
वामन 16/2

इस तीर्थ में स्नान करके और शिव का दर्शन करके व्यक्ति सभी पापों से मुक्त होकर शैव पद का अधिकारी होता है।

पवनस्य ह्रदे स्नात्वा ह्ष्टवा देव महेश्वरं
विमुक्ता कलुषैः सर्वै शैवं पदमाप्नुयात ।
(वामन० सरो० 16:1)

यह तीर्थ आजकल अमर शहीद जगमन्दिर के नाम से पपनावा जगमंदिर के नाम से प्रसिद्ध हो गया है।

कुलोतारण (कौल) :–

इस तीर्थ का संबंध संभवतः हम महाभारत में वर्णित कुलंपुन तथा वामनपुराण के कुलोन्तारण के साथ स्थापित कर सकते हैं। इस तीर्थ की स्थापना स्वयं भगवान विष्णु ने प्राचीन काल में वर्णो एवं आश्रमों का उद्धार करने हेतु की थी।

कुलोतारण नामानं विष्णुना कल्पितं पुरा ।
वर्णनामाश्रमाणां च तारणाय सुनिर्गलम् । ।
वामन 15/74

वामनपुराण एवं महाभारत वन पर्व के अनुसार यहां स्नान करने से पुरुष अपने कुल को पवित्र करता है। ब्रहमचारी, सन्यासी, वानप्रस्थी, गृहस्थी इत्यादि यहां स्नान करने पर इक्कीस पीढ़ियों का उद्धार करते हैं।

कुलपने नरः स्नात्वा पुनाति स्वकुलं नरः
महा० वनपू० 8/88

यह तीर्थ कौल ग्राम में कुरुक्षेत्र से लगभग 22 कि 0 मी 0 दूरी पर स्थित है।

व्यास स्थली:–

यह तीर्थ मुनि ब्यास के नाम पर ही अतिप्रसिद्ध है। पौराणिक कथा के अनुसार महर्षि ब्यास ने पुत्रशोक से अभिभूत होकर देह त्याग करने का निश्चय किया था किन्तु देवताओं ने मुनि ब्यास का धैर्य बंधाया और उन्हें आत्महत्या करने से रोका।

ततोब्यास स्थली नाम यत्र व्यासेन धीमता
पुत्रशेकामि तप्सेन देहेत्यागार्थ निश्चयः ।।   15/58

यह तीर्थ करनाल से 25 कि० मी० पश्चिम में बनस्थली गांव से जाना जाता है। यहां पर स्नान करने से व्यक्ति पुत्र शोक को प्राप्त नहीं होता।

मिश्रक तीर्थ:–

इस तीर्थ पर मुनि ब्यास ने अनेक तीर्थो को देवताओं के लिए एकत्रित किया था। इसीलिए इसे मिश्रक तीर्थ कहते हैं । यहा पर स्नान करने से सभी तीर्थो का स्नान फल मिलता है। वामनपुराण के अनुसार व्यास जी ने यही पर सभी तीर्थों का दधीचि के लिए र्मिश्रत किया था। यह तीर्थ फरल गांव के समीप है।

मृगधूम तीर्थ:–

वर्तमान निगधु गांव में यह तीर्थ नीलोखेड़ी से 20 किलामीटर पश्चिम में स्थित है। महाभारत में इस तीर्थ का उल्लेख मिलता है। यहां पर स्नान करने से व्यक्ति अश्वमेघ यज्ञ के फल को प्राप्त करता है ।

वामनक तीर्थ:–

वर्तमान नाम बौड़श्याम है। यह विष्णु तीर्थ है। यहां पर स्नान करने एवं पूजोपारानत व्यक्ति सभी पापों से रहित होकर विष्णु लोक प्राप्त करता है। यहीं पर भगवान ने वामन का रुप धारण करके दैव्यराज बलि के राज्य को छीनकर इन्द्र को दिया था । यह तीर्थ नीलोखेड़ी से 21 किलोमीटर दूरी पर है।

अमर तीर्थ:–

अमर ह्रद में स्नान करने से अमरों के प्रभाव से मनुष्य स्वर्गलोक को प्राप्त करता है।

अमरणणां ह्रदे स्नात्वा अमरेषु नराधिपः ।
अमराणां प्रभावेन स्वर्गलोके महीयते।
वामन   8.29

वामन पुराण के अनुसार यहां शिव का स्थान है। यहां देवों और गन्धर्वो ने हनुमान को प्रकट किया था। इस तीर्थ में स्नान करने से व्यक्ति अमरत्व को प्राप्त करता है यह तीर्थ भी पपनावा में स्थित है।

सोमतीर्थः-

इस तीर्थ पर स्नान करके व्यक्ति सोमलोक को प्राप्त करता है। इस स्नान पर सोम ने तप को तप कर द्विजराज्य को प्राप्त किया था।

"यत्र सोमस्तपस्तप्त्वा द्विजराज्यम वाप्नुयात्"
वामन० 16/15

इस तीर्थ में स्नान करके देवों और पितरों की पूजा करके कार्तिक मास के चंद्र के समान निर्मल होकर व्यक्ति स्वर्ग को प्राप्त करता है। यह स्थान गुंथला गांव में पेहोवा से 6 कि० मी० दक्षिण में स्थित है।

सप्तसारस्वतः-

इस स्थान पर सात सरस्वतियाँ एकीभूत होकर एक साथ बहती हैं। अतः इस तीर्थ को वामन पुराण में त्रैलोम्य से भी दुर्लभ कहा गया है।

सप्तसारस्वत तीर्थ त्रैलोम्यस्यपि दुर्लभम्
यत्र सप्त सरस्वत्य एकीभूता वहन्ति च।
वामन 16/17

यह तीर्थ मागन नामक स्थान पर पेहोवा से 5 कि० मी० पश्चिम में है।

रेणुका तीर्थः-

यह तीर्थ पेहोवा से 10 कि० मी० दक्षिणपूर्व में है। इस तीर्थ में पहुंचकर माता की भक्ति से जो पुण्य मिलता है वह यहां पर होता है।

"मातृभक्तया च यत्पुण्यं तत्फलं प्राप्नुयान्तरः"
वामन 20/5

विमोचन तीर्थः–

विमोचन मुपस्पृश्य जितमन्यु जितेन्द्रय
प्रति गृहकृत दौषेः सर्वैः स प्रभुच्यते ।।
महा() वन 1/140

महाभारत के अनुसार जितेन्द्रय व्यक्ति इस विमोचन तीर्थ पर पहुंच कर विपरीत ग्रहों के प्रभाव से विमुक्त होकर शान्ति प्राप्त करता है। यह तीर्थ पूण्डरी से लगभग 4 किलोमीटर दूर उतर में है।

ओजस तीर्थः–

वामन पुराण में इस तीर्थ को कुमारभिषेक तथा ओजस दोनों नामों से वर्णित किया गया है।

"कुमारास्थभिषेकं च ओजसं नाम विश्रुतम् ।

महाभारत के अनुसार इस स्थान पर ब्रह्मा , देवों तथा ऋषियों ने कार्तिकेय को सेनापति पद पर अभिषिक्त किया था । इस तीर्थ में स्नान करके यश को प्राप्त होता है। श्राद्ध करने से जो पुण्य गया जी में मिलता है वही पुण्य शुक्ल पक्ष की चैत्र मास की षष्ठी में इस स्थान पर श्राद्ध करने से प्राप्त होता है। सूर्यग्रहण के अवसर पर जो फल सन्निहित सरोवर में श्राद्ध से प्राप्त होता वही इस स्थान पर श्राद्ध करने से प्राप्त होता है। यह तीर्थ थानेसर से लगभग 12 किलोमीटर दक्षिण पश्चिम में स्थित है ।

स्वर्गद्वारः–

यह तीर्थ भी ओजस तीर्थ के निकट स्थित है । इस तीर्थ के दर्शन मात्र से व्यक्ति स्वर्गलोक को प्राप्तम करके ब्रहमलोक में जाता है ।

कुरु तीर्थः–

वामनपुराण में इस तीर्थ की उत्पति से सम्बन्धित कथा दी गई है। कथानुसार महाराज कुरु ने यहां पर क्षेत्र कृष्ण हेतु कठोर तपस्या की । कुरु के तप से प्रसन्न होकर इन्द्र ने इसका कारण पूछा एवं उन्हें इच्छापूर्ति का वरदान दिया । कुरु ने कहा कि जो श्रद्धालू लोक इस तीर्थ में निवास करते हैं वे सब ब्रहमलोक को प्राप्त करें । यहीं नहीं जिन मनुष्यों ने अन्यत्र भी कहीं अगर पाप किए हों तो वे भी इस तीर्थ में जाकर स्नान कर मुक्त हो जाएं ।

अन्यत्र कृतपापा ये पंचपातक दूषिताः
अस्मिन तीर्थे नराः स्नात्वा मुक्ता यान्तुपरागतिम् ।।
वामन सरो० 20/20

कुरुक्षेत्रै पुण्येतम कुरु तीर्थ द्विजातमा ।
त दृष्टवा पापमुक्तस्तु परं परमवाप्नुयात् ।
वा० सरो० 20/21

कुरुक्षेत्र में कुरुतीर्थ पुण्यतम है। इस तीर्थ के दर्शन करके व्यक्ति पापों से मुक्त होकर परम पद को प्राप्त करता है। महाभारत के अनुसार भी यह तीर्थ पुण्यतय है। इस तीर्थ में स्नान करके व्यक्ति सभी पापों से मुक्त होकर कुरुलोक को जाता है

अनरक तीर्थ नरकातारीः-

अनरक तीर्थ भी कुरुक्षेत्र के प्राचीन तीर्थो में से एक है। महाभारत एवं पुराणों में इस तीर्थ का बहुत महत्व बताया गया है । पौराणिवः रुप में आठवी सदी में यह तीर्थ अत्याधिक प्रसिद्ध था। वामन पुराण में भी इस तीर्थ का माहात्म्य स्पष्ट रुप से वर्णित हुआ है। इस तीर्थ के पूर्व में ब्रहमा, दक्षिण में महेश्वर, पश्चिम में रुद्रपत्नी तथा उतर में पद्मनाभ विष्णु स्थित है तथा इन सबसे मध्य में तीनों लोकों में दुर्लभ यह अनरक तीर्थ है--

यत्र पूर्व स्थितों ब्रह्मा दक्षिणे तु महेश्वरः ।
रुद्र पत्नी पश्चिमतः पद्मनाभोतेर स्थितः ।
मध्ये अनरकं तीर्थ त्रेलोकस्यापि दुर्लभम् ।
वामन 20/25

ब्रहमा, विष्णु महेश एवं रुद्रपत्नी से समावृत होने के कारण इस तीर्थ का जो महत्व है वह भी महाभारत एवं पुराणों में स्पष्टतया वर्णित है। रुद्र पत्नी के पास जाकर व्यक्ति दुर्गति को प्राप्त नहीं करता । "अभिगम्य च तां देवी न दुर्गतिमवाप्यु मात" । इसी पाकार दक्षिण में महादेव के दर्शन करके व्यक्ति पाप मुक्त हो जाता है ।

"अभिगम्य महादेव मुच्यते सर्वकिन्वषैः"

पध्मनारायण के दर्शन करके व्यक्ति विष्णु लोक को प्राप्त करता है। वैशाख षष्ठी में मंगल के दिन यहां स्नान करके व्यक्ति सभी पापों से मुक्त हो जाता है।

वैशाखे च यदा षष्ठी मंगलस्य च दिनं भवेत ।
तदा स्नानं तत्र कृत्वा मुक्तो भवति पातकेः ।।
वामन 20/26

उपरोक्त वर्णन से स्पष्ट प्रतीत होता है कि सभी सम्प्रदाय वाले व्यक्तियों के लिए ग्राहय बनाने के लिए ही इस तीर्थ का संबंध, ब्रहमा, विष्णु, महेश एवं रुद्र पत्नी के साथ स्थापित किया गया है। यह तीर्थ कुरुक्षेत्र से ज्योतिसर जाते हुए रास्ते में एक किलोमीटर की दूरी पर

स्थित है । यहां पर काफी गहरा एक कुण्ड है जिसे बाणगंगा कहा जाता है। कहा जाता है कि महाभारत युद्ध के दसवें दिन जब भीष्म पितामह बाण शैय्या पर पड़े हुए थे तो उसी समय उनके द्वारा जल मांगने पर अर्जुन ने पृथ्वी में तीर छोड़कर गंगा विकसित की एवं उन्हें जल पिलाया । इसीलिए इसे भीष्मकुण्ड भी कहा जाता है।

नाभिकमल तीर्थः-

थानेसर नगर के पश्चिम में एक अति प्राचीन तीर्थ है। वास्वत में यह हरियाणा में ही नहीं समस्त उतरभारत में भगवान विष्णु एवं ब्रह्मा जी का एक मात्र संयुक्त मूर्ति स्थल है। जनश्रुति के अनुसार इसी स्थान पर भगवान विष्णु जी की नाभिस्थल से उत्पन्न कमल से ही ब्रह्मा जी की उत्पति हुई थी । मन्दिर के साथ छोटा सा सरोवर भी है। वर्तमान वैरागी बाबा श्री महंत रामदास जी के संरक्षण में इस मन्दिर का कायाकल्प हुआ है। श्री सन्तराम अरोड़ा ट्रस्ट के तत्वाधान में यहां "मानवधाम" की स्थापना की गई है जिसके संरक्षण सेठ श्री पूरण चंद जी अरोड़ा दिल्ली निवासी हैं ।

कर्ण खेड़ाः-

कुरुक्षेत्र सरोवर के दक्षिण पश्चिम में लगभग एक किलोमीटर की दूरी पर मिर्जापुर ग्राम के पास स्थित एक टीला है जो दानवीर कर्ण के नाम पर ही कर्णखेड़ा के नाम से प्रचलित है। जनश्रुति के अनुसार राजा कर्ण ने ब्राहमणों को इसी स्थान पर स्वर्ण दान दिया था।

कुबेरतीर्थः-

यह स्थान सरस्वती नदी के तट पर भद्रकाली मन्दिर से थोड़ी दूरी पर स्थित है । सरस्वती के पावन तट पर यक्षपति कुबेर ने यज्ञों का आयोजन इसी स्थान पर किया था । जन श्रुति के आधार पर इस तीर्थ की मिट्टी अथवा जल भंडार में रखने से किसी प्रकार की त्रुटि नहीं रहती ।

बाणगंगा (गंगा हृदकूप):-

कुरुक्षेत्र ब्रहम सरोवर के दक्षिण की ओर दयालपुर गांव के समीप यह तीर्थ विद्यमान है। यहां एक छोटा सा सरोवर है जिसके चारों और पक्के घाट बने हुए हैं । जनश्रुति के आधार पर जब महाभारत युद्ध में प्रतिज्ञावश अर्जुन जयद्रथ को मारने जा रहा था तो दोपहर के समय कुछ देर के लिए घोड़ो ने वहां विश्राम किया । प्यासे घोड़ों को पानी पिलाने हेतु अर्जुन ने धरती पर बाण चलाकर गंगा निकाली थी । भगवान कृष्ण ने घोड़ों को स्नान करवाया

तथा उन्हें पानी पिलवाया । तभी से यहां मिट्टी के घोड़े बनाकर तीर्थ पर चढ़ाए जाते हैं । महाभारत के अनुसार इस कूप में स्नान करके व्यक्ति स्वर्गलोक को प्राप्त करता है ।

गंगा ह्रदश्च तत्रैव कूपश्च भरतसन्तम्
तिस्त्रः कोटयस्तु तीर्थानां तस्मिनकूपे महीयते ।
तत्र स्नात्वा नरो राजस्वर्गलोंकं प्रपघते ।
वन० 8/1153

आपगाः-

एक अति प्राचीन तीर्थ जो कि आपगा नदी के तट पर विद्यमान था । इन्हीं नदियों के तट पर वैदिक सभ्यता का प्रादुर्भाव हुआ और ऋचायों का सृजन ऋपियों ने किया ।

हषद्वत्या मानुष आपयायां सरस्वतयरि वदग्ने दिदीहि ।
ऋग० 3:23:4

यहां महेश्वर की पूजा करने से मनुष्य परम गति को प्राप्त करता है तथा अपने कुल का उद्वार करता है।

आपगायां परः स्नात्वा अर्चयित्वा महेभ्रवरम्
गाणपत्यमवाप्नोति कुलं चोरद्वरते स्वकम् ।
महा वन० 3:81

परम्परा के अनुसारर यह स्थान कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के दक्षिण पश्चिम में आधा किलोमीटर की दूरी पर कर्ण टीले के पास विद्यमान है। किन्तु यह तीर्थ अत्यन्त जीर्णावस्था में है तथा अपना प्राचीन स्वरुप खों चुका है ।

मारकण्डा तीर्थः-

कुरुक्षेत्र से पिपली जाने वाली सड़क पर सरस्वती नदी के तट पर यह तीर्थ स्थान है। इस स्थान पर ऋपि मार्कण्डेय का आश्रम था । वर्षों तक उन्होंने वहीं पर तपस्या करके परम पद की प्राप्ति की ।

कपिस्थल (कैथल):-

कपिस्थल का अर्थ है बन्दरों का स्थान । कपि शब्द रामचरित मानस में श्री हनुमान जी के लिए भी प्रयुक्त हुआ है। अस्तु कपिस्थल भगवान राम के परम भक्त श्री हनुमान जी की पावन भूमि है। महाभारत में वर्णित कथा के अनुसार युधिष्ठर ने युद्ध को रोकने तथा शान्ति

स्थापित करने की इच्छा से समझौता करते हुए दुर्योधन से जो पांच गांव मांगे थे, उनमें कपिस्थल भी एक था। कतिपय विद्वान इसे कपिष्ठल महात्मा का स्थान भी बतलाते हैं।

वामनुपराण के अनुसार इस तीर्थ में स्वयं महादेव वृद्ध केदार नाम से स्थित हैं और यह तीर्थ सभी पापों को नष्ट करने वाला है।

कपिस्थलेति विख्यातं सर्वपातकनाशनम्
यस्मिन स्थितः स्वयं देवा वृद्धाकेदारसंज्ञित ।।
वामन । 15/14

कपिस्थल में स्नान करके व्यक्ति सारे पापों से शुद्ध होकर अन्तर्धान को प्राप्त करता है।

कपिष्ठलस्य केदारं समासाधसुदर्तम्म्
अन्तर्धानमवाप्नोति तपसा दग्धकिल्विपः
वन 8/16

इस प्रकार यह तीर्थ सभी पापों को नष्ट करने वाला है। यहां स्नान करके एवं दिण्डि युक्त भगवान शिव की पूजा करके व्यक्ति सभी पापों से शुद्ध होकर अन्तर्धान को प्राप्त करता है।

तत्रस्नात्वा Sर्चयित्वा च रुद्र दिण्डिसपन्वितम्
अन्तर्धानम वाप्नोति शिवलोके स मोदते ।
वामन सरो० 15/15

जो व्यक्ति यहां भगवान शिव को लक्ष्य करके श्राद्ध करता है वह मानव चैत्र मास की शुक्लपक्ष की चतुर्दशी को परम पद को प्राप्त करता है।

यस्तत्र कुरुते श्राद्धं शिवमुछिश्य मानवाः
चेत्र शुक्ल चतुर्दशयां प्राप्नोति परमं पदम।
वामन 15/17

कपिस्थल के निकट वर्ती तीर्थ इस प्रकार हैं केदार तीर्थ, चण्डी स्थान, कुल्लोतारण, सर्वदेवतीर्थ, विन्दु तीर्थ, टिंडी तीर्थ, नवग्रहकुण्ड, सरक तीर्थ , धन जन्म, मानस, आपगा, सप्तऋषि कुण्ड, वास्तुकि यक्ष आदि ।

पुण्डरीक तीर्थ:-

यह अत्यन्त प्राचीन तीर्थ है एवं आधुनिक नाम पुण्डरी से जाना जाता है। महाभारत में वर्णित आख्यान अनुसार शुक्ल पक्ष की दशमी को विशेषकर चैत्र मास में यहां स्नान, जप, श्राद्ध करना मुक्ति मार्ग को देने वाला है। यहां पर एक पक्का तालाब, घाट तथा धर्मशाला बनी हुई है। साधु सन्तों के आश्रम हैं।

दशभ्यां शुक्लपक्षस्य चेत्रस्य तु विशेपतः
स्नानं जपं तथा श्राद्धं मुक्ति मार्ग प्रदायकम् ।
वामन 15/40

यह तीर्थ नागह्रद भी कहलाता है। इसमें स्नान करने से व्यक्ति पुण्डरीक फल को प्राप्त होता है---

तत्रस्वात्वा नरो राजन्पुण्डरीक फलं लभते ।
महा० वन० 81/69

त्रिविष्टपः

यह तीर्थ भी अत्यन्त प्राचीन है तथा वैतरणी नदी के तट पर स्थित है। इस तीर्थ का वर्तमान नाम टयोंठा नामक गांव में हैं जो कि कैथल से 24 किलोमीटर पूर्व में स्थित है। वामन पुराण में इस तीर्थ को देवों के द्वारा सेवित कहा गया है। इस तीर्थ में स्नान करने से एवं शिव उपासना करने से व्यक्ति सब पापों से मुक्त होकर परम गति को प्राप्त करता है:-

तत्र स्नात्वार्चयित्वा च शूलपाणि वृपध्वजम्
सर्वपाप पवि शुद्धात्मा गच्छेत परमां गतिम् ।।
वामन 15/42

सरक तीर्थ:

महाभारत एवं वामनपुराण इन दोनों ग्रन्थों में इस तीर्थ का विस्तृत वर्णन हुआ है। वामनपुराणानुसार इस तीर्थ में शिव का वास है। कृष्णपक्ष की चतुर्दशी को महेश्वर को यहां स्थित देखकर व्यक्ति की सभी कामनाएं पूर्ण हो जाती हैं एवं वह शिव लोक को प्राप्त करता है।

कृष्णपक्षे चतुर्दश्यां दृष्टवां देवं महेश्वरम्
लभते सर्वकामांश्य शिवलोकं स गच्छति ।।
वामन० 15/20

यहां पर तीन करोड़ तीर्थ विद्यमान है। सरों के मध्य में स्थित कूप में करोड़ रुद्र उपस्थित हैं । इस सर में स्नान करके व्यक्ति करोड़ों रुद्रों का स्मरण करता है एवं रुद्रों की कृपा से सभी दोषों से मुक्त हो जाता है।

तस्मिन सरे च यः स्नात्वा रुद्रकोटि स्मरेन्नरः
रुद्राणां च प्रसोदन सर्वदोष विवर्जितः
वामन 15/23

ऐतदेय ब्राह्मण में इस तीर्थ का नाम परिसरक आता है कथा के अनुसार इस वार ऋषियों ने सरस्वती के तट पर एक सत्र किया उसमें कवष भी ऋषि पंक्ति में बैठ गया जो कि एक दासी पुत्र था । उसको ऋषियों ने निकाल कर ऐसे मरुस्थल पर छोड़ा जहां पर वह प्यासा मर जाए । किन्तु कवष ने ऋगवेद मन्त्रों द्वारा जल की स्तुति की । ऐसा करते ही सरस्वती उस स्थल पर आई और उस स्थल को चारों ओर से आप्लावित कर दिया । अतः यह स्थल परिसरक कहलाने लगा और बाद में सरक हुआ ।

कृतजपाः–
वामनपुराण के अनुसार तीन लोकों में प्रसिद्ध इस तीर्थ में स्नान करने से तथा महादेव की पूजा करने से मानव अश्वमेघ यज्ञ के फल को प्राप्त करता है। यह तीर्थ नीलोखेड़ी के पश्चिम में है।

कृतजप्य ततो गच्छेत त्रिषुपलोकेषु विश्रुतम्
अर्चयित्वा महादेवमश्वमेघं फलं लभेत् ।
वामन 15/63

कपिलहृद (कलायत) :

यह तीर्थ स्नान करवाना कैथल मार्ग पर स्थित है। अत्ययन्त प्राचीन एवं पवित्र तीर्थ है। भगवान कपिल मुनि के नाम पर ही इस का नाम कलायत हुआ है। वामनपुराण में इसे कपिलहृद कहा गया है:——

कपिलाहृदमासाध तीर्थ त्रैलोक्यं विश्रुतम
तत्र स्नात्वाऽर्चयित्वा च देवतानि पितृसमा
कपिलानां सहस्रस्य फल विदन्ति मानवः

तत्र स्थितं महादेवं कपिलं वपुरास्थितम्।,
दृष्टवा मुक्तिमवाप्नोति ऋषिभि पूजितं शिवम्।।

अर्थात् त्रैलोक्य विश्रुत कपिल ह्रद नामक तीर्थ में जाकर स्नान करने से मनुष्य को सहस्र कपिला गायों के दान का पुण्य फल प्राप्त होता है। वहां पर स्थित कपिल मुनि एवं ऋषियों से पूजित महादेव शिव का दर्शन करने से मुक्ति मिलती है । कलायत में एक सुन्दर सरोवर है। दो प्राचीन मन्दिर हैं । मन्दिर का भवन अपने युग की कला का उत्कृष्ट नमूना है। कहते हैं कि महाराज शालिवाहन ने इन मंदिरों को बनवाया था उनका चर्म रोग इस तीर्थ को जल स्पर्श से दूर हो गया था । मन्दिर की मूर्तियां खुजराहों की सभ्यता से मिलती जुलती हैं । एवं ईसा से 200 वर्ष पूर्व की बनी प्रतीत होती हैं ।

रामह्रद (रामराय) :-

यह तीर्थ अत्यन्त प्रसिद्ध है एवं महाभारत तथा वामनपुराण में इस का उल्लेख मिलता है । यह वर्तमान नगर रामराय से सम्बन्धित है जो कि जिला जींद में आता है। यह वही स्थल है जहां पर परशुराम जी ने ऋषियों का हनन करके उनके रक्त से पांच ह्रदों को भर दिया था । इन्हीं ह्रदों में उन्होंने अपने पितरों को तर्पण किया था। इस तीर्थ का आख्यान सभी ग्रन्थों में एक सा मिलता है । कथा के अनुसार तर्पण से तृप्त होकर पितरों ने परशुराम को कहा कि हम तुम पर प्रसन्न हैं अतः वर मागों । तब परशुराम ने यह वरदान मांगा कि यदि आप मुझ पर प्रसन्न हैं तो क्रोधवश मैंने जो क्षत्रियों को मारा है उनके रुधिर से निर्मित ह्रद संसार में तीर्थों के रुप में प्रसिद्ध हो जाएं । पितरों ने तथास्तु कहकर परशुराम जी को आर्शीवाद दिया कि तुम्हारे तप की वृद्धि हो । क्षत्रियों के इस हत्या जनित पाप से तुम्हारी मुक्ति हो तथा यह ह्रद भी तीर्थ रुप में परिणत हो । जो व्यक्ति इन ह्रदों में स्नान करके पितृ तर्पण करेगा उसकी सभी कामनाएं पूर्ण होंगी । और वह स्वर्गलोक जाएगा । इन ह्रदों में स्नान करके एवं परशुराम जी की पूजा करके ब्रह्मचारी पवित्र व्रत वाला तथा श्रद्धावान अधिक सुवर्ण को प्राप्त करता है।

स्नात्वा ह्रदेषु रामस्य ब्रह्मचारी शुभव्रतः
रामगम्यर्च्य राजेन्द्र त्रभेद बहु सुवर्णकम्
वन० 18/33

वराहतीर्थ:-

महाभारत के सभापर्व एवं अन्य पुराणों में भगवान विष्णु वराह का अवतार लेकर यहां प्रकट हुए थे तथा पृथ्वी का उद्धार किया था । यह तीर्थ जींद से लगभग 12 किलोमीटर पूर्व दक्षिण

में हैं । इसके तट पर वराह मन्दिर है जिसमें भगवान वराह का विग्रह विद्यमान है । दन्तकथा के अनुसार यह मूर्ति इसी सर से निकली थीं। क्यूंकि भगवान वराह अपनी लीला सम्पन्न करके इसी में अन्तर्ध्यान हुए थे । तीर्थ के उतर में वराहकलां नाम का गांव भी है। यहां से 2-3 कि० मी० दूरी पर वराह खुर्द नामक गांव भी है जहां मान सरोवर तीर्थ है ।

जयन्त तीर्थः-

सृष्टि के प्रारम्भ होने के पश्चात् देवताओं और असुरों द्वारा समुद्र मंथन हुआ । समुद्र में से भगवान धनवन्तरि अमृत का घट लेकर प्रकट हुए थे , अमृत घट को इन्द्रपुत्र जयन्त सूर्य चन्द्र एवं वृहस्पति आदि के रक्षण में लेकर उतर दिशा में गये । उधर अमृत घट के लिए देवों और दैत्यों में संग्राम हुआ । इधर जयन्त ने वराह बन मे मध्य स्थित ब्रहमोतर वेदि में आश्रम ग्रहण किया असुर वन प्रान्त में प्रवेश नहीं कर पाये । अमृत घट न पाकर असुरों का मनोबल टूट गया, भगवान ने मोहिनी रुप धारण करके असुरों को सुरावान द्वारा भ्रमचित कर दिया था। तथा इस वराह वन में देवों को अमृत पान करवाया । जयन्त ने इस कार्य की सफलता हेतु, इस स्थान को सिद्धिप्रद एवं यशप्रद मानकर यहां एक नगरी बसाई जिसका नाम जयन्तपुरी पड़ा । कालान्तर में यही जयन्ती शब्द अपभ्रंश होकर जींद बना । जींद नगर में पूर्वोतर में भगवान परशुराम के पिता महर्षि जमदग्नि का आश्रम है जो अब जामनी गांव में है । जींद नगर के पूर्व में पिण्डारा गांव है जहां पितरों के निर्मित पाण्डवों ने पिण्डदान दिये । दक्षिण में सोम तीर्थ है। इस तीर्थ के विषय में लिखा है ---
कुरुक्षेत्र की सीमा के अन्तर्गत एक प्राचीन तीर्थ जिसमें स्नान करने से सोमलोक की प्राप्ति होती है । सोमतीर्थ के तट पर सोमनाथ महादेव व मनसा देवी के प्राचीन मन्दिर हैं । इसी तीर्थ के अन्तर्गत पर जयन्ती देवी का मन्दिर है। जयन्ती का अपभ्रंश ही जींद है। ब्रहमावैवर्तपुराण के अनुसार भगवान कृष्ण ने युद्ध से पूर्व जयन्ती तथा मनसा देवी की पूजा की। सो तीर्थ में स्नान करके मनुष्य को राजसूय यज्ञ का फल प्राप्त होता है। जींद के समीपवर्ती तीर्थों में एक अत्युतम महत्वपूर्ण तीर्थ है रुपवती तीर्थ। यह तीर्थ आसन ग्राम में है। यह ऋषि च्यवन की तपोभूमि थी। अश्वनिकुमारों की कृपा से ऋषिवर ने यही पुन| यौवन प्राप्त किया था अश्वनिकुमार का अपभ्रश ही आसन है। जींद के अन्य समीपवर्ती तीर्थ इस प्रकार हैं--

भूतेश्वर, वनखण्डी महादेव, ज्वालामाला, शकरतीर्थ असिधारा इत्यादि।

कमोधाः-

आधुनिक कमोधा का सम्बन्ध प्राचीन काम्यक वन से है। यह वन प्राचीन काल में सरस्वती के तट से लेकर मरु प्रदेश तक फैला हुआ था। पाण्डवों ने भी इसी वन में निवास किया था--

भयो सरस्वती तीरे काम्यकं नाम काननम् ।
महा० 3.37.37.

काम्यक वन में कामेश्वर नामक तीर्थ विद्यमान था। यहां पर कामेश्वर महादेव का ईटों का मन्दिर एवं मठ है यहीं पर ईटों का एक छोटा सा कमरा है जो ज़न साधारण में द्रोपदी के भण्डार के नाम से जाना जाता है। परम्परा के अनुसार यहां द्रोपदी ने पाण्डवों के लिए खाना बनाया था। यह स्थान थानेसर से 14 किलोमीटर दक्षिण पश्चिम में है।

महाभारत में वर्णित कुरुक्षेत्र

महाभारत वन पर्व के अन्तर्गत तीर्थ स्नान प्रकरण में कुरुक्षेत्र तीर्थ का विशद विवेचन हुआ है। पुलस्त्य ऋषि पितामह भीष्म को बतलाते हैं कि अवसाब तीर्थ से चलकर मनुष्य को कुरुक्षेत्र तीर्थ की यात्रा करनी चहिए जिस के दर्शन मात्र से ही प्राणी के सब पापों का नाश हो जाता है। जो कोई मनुष्य यह भी कहता है कि मैं कुरुक्षेत्र जाऊंगा अथवा वहां रहूंगा तो इतना कहने मात्र से ही उसके पाप दूर हो जाते हैं। कुरुक्षेत्र का ऐसा पुण्य प्रमाण है कि वहां की धूलि भी उड़कर यदि पापी मनुष्य पर पड़ जाय तो उस पापी को परम गति प्राप्त हो जाती है।

कुरुक्षेत्र के उतर में दृपद्वती और दक्षिण में सरस्वती पुण्यतोया नदियां बहती हैं। इनके मध्य में रहने वाले मनुष्य स्वर्गलोक के वासी हैं अर्थात देवतुल्य पूज्य हैं। पुण्यमयी पुण्यसलिला सरस्वती के तट पर मनुष्य को एक मास तक वास करना चाहिए वहां पर ब्रह्मादिक देवता, ऋषि, सिद्ध, चारण, गन्धर्व, अप्सरा, यक्ष किन्नर आते हैं। वहां बसने से मनुष्य को ब्रह्मलोक प्राप्त होता है।

जो मनुष्य कुरुक्षेत्र को मन से स्मरण करता है उस के भी सब पाप दूर हो जाते हैं। और वह दिव्यलोक प्राप्त करता है। किन्तु जो मनुष्य श्रद्धा से कुरुक्षेत्र में जाता है, उसे राजसूय यज्ञ और अश्वमेघ यज्ञों के करने का फल मिलता है।

पृथुदक तीर्थ का महत्व बतलाते हुए भी वनपर्व में सुन्दर उल्लेख मिलते हैं।

ब्रह्मयानितीर्थ में स्नान करने से मनुष्य को ब्रहमलोक मिलता है और उस की सात पीढ़ियां पवित्र हो जाती हैं। पृथुदक नाम कार्तिकेय जी का तीर्थ है जो तीनों लोकों में विख्यात है। जो मनुष्य देवता और पितरों के पूजन में भकित रखते हैं वे उस तीर्थ में स्नान करने से स्त्री अथवा पुरुष सभी ज्ञान अथवा अज्ञान से किए पापों से छूट जाते हैं। और अश्वमेघ यज्ञ करने का फल प्राप्त करते हैं एवं स्वर्गलोक प्राप्त करते हैं।

इस प्रकार सब तीर्थों से बढ़कर कुरुक्षेत्र का माहात्म्य है उस से अधिक सरस्वती का है और सरस्वती से भी बढ़कर सरस्वती के तीर्थों का है और उन तीर्थों से भी अधिक माहात्म्य पृथुदक तीर्थ का है। इस प्रकार यह तीर्थ सर्वोतम है। यहां जप करने वाला मनुष्य शरीर त्यागने से पुन: मृत्यु को प्राप्त नहीं होता। पृथुदक का यह माहात्म्य महात्मा व्यास जी ने एवं सनत्कुमार जी ने वर्णन किया है। इस इस तीर्थ की यात्रा अवश्य करनी चाहिए। यह तीर्थ संदेह रहित, पवित्र एवं स्नान करनेसे पापी मनुष्य को भी स्वर्गलोक मिलता है।

मधुश्रवा तीर्थ में स्नान करने से मनुष्य को सहस्त्र गोदान करने का फल मिलता है। विश्वामित्र तीर्थ में स्नान करने से मनुष्य ब्राम्हाणत्व को प्राप्त हो जाता है।

ब्रहमयोनि तीर्थ में स्नान करने से शुद्ध होकर पवित्र मन से मनुष्य ब्रहमलोक को प्राप्त होता है।

उरणाय तीर्थ में सरस्वती और अरुणा नदियों का संगम हुआ है स्नान करने से एवं तीन रात्रि तक बसने से मनुष्य ब्रह्महत्या से छूट जाता है और उस की सात पीढ़ी पवित्र हो जाती है।

कुरुतीर्थ अर्थात कुरुक्षेत्र के तीर्थों में स्नान करने से ब्रह्मचर्य एवं जितेन्द्रय होकर वास करने वाला मनुष्य सब पापों से छूट जाता है एवं वहां महादेव जी की पूजा करने से मनुष्य गाणपत्य पद प्राप्त करता है एवं अपने कुल का उद्धार करता है।

स्थाणवीश्वर तीर्थ की यात्रा जो कि तीनों लोकों में विख्यात है। यहां स्नान करने से एवं रात्रि में स्थाणु वट के नीचे वास करने से मनुष्य को रुद्र लोक प्राप्त होता है।

सन्निहित तीर्थ के विषय में विशेष उल्लेख वन पर्व में आया है। जहां ब्रहमादिक देवता बड़े-बड़े तपस्वी ऋषि प्रत्येक मास में आते हैं। इस तीर्थ में सूर्यग्रहण में स्नान करन से सौ अश्वमेघ यज्ञ का फल मिलता है। पृथ्वी पर जो तीर्थ, नदी, कुण्ड, तड़ाग, झरने, बावली और देवताओं के स्थान हैं वे सब प्रति मास अमावस्या को इस सन्निहित तीर्थ में परिवेश करते हैं। इसीलिए इस तीर्थ को सन्निहित कहते हैं। इस तीर्थ में स्नान करने से मनुष्य को स्वर्गलोक मिलता है और जो अमावस्या को सूर्यग्रहण में यहां स्नान करता है और श्राद्ध करता है उसे सहस्र अश्वमेघ यज्ञ का फल मिलता है।

इस पृथ्वी पर नैमिब तीर्थ, आकाश में पुष्कर, तीनों लोकों में कुरुक्षेत्र महान तीर्थ है। इन में विशेषतया कुरुक्षेत्र का ऐसा माहात्म्य है कि पापी मनुष्य पर वहां की धूलि भी पड़े तो वह परमगति को प्राप्त करता है। इस कुरुक्षेत्र में हषद्वती नदी के उतर में एवं सरस्वती नदी के दक्षिण में जो मनुष्य रहते हैं उन का रहना स्वर्ग तुल्य है। यह कुरुक्षेत्र ब्रहमा जी की वेदी है, पुण्यात्मा मनुष्य एवं तपस्वी ऋषि यहां निवास करते हैं और यहां के रहने वालों को किसी भी अवस्था में शोक करना उचित नहीं है।

महाभारत में कुरुक्षेत्र की सर्वाडगीण उन्नति का दिग्दर्शनः-

महाभारत आदि पर्व में आठवें अध्याय के अन्तर्गत तत्कालीन कुरुक्षेत्र की उन्नति का दिग्दर्शन करवाया गया है जिससे प्रतीत होता है कि कुरुक्षेत्र महाभारत काल में भी अत्यन्त रमणीय प्रदेश था और नगर निवासी अत्यन्त सुमृद्ध थे। तत्कालीन वर्णन इस प्रकार हुआ है

-वैशम्पायन जी कहते हैं-- हे जनमेजय उन तीनों कुमारों धृतराष्ट्र, पाण्डु और विदुर

के जन्म से कुरुवंश कुरुजांगल देश एवं कुरुक्षेत्र की अत्यधिक उन्नति एवं समृद्धि हुई है।

तेषु त्रिपु कुमारेषु जातेषु कुरुजांगलम्
कुरुवोऽथ कुरुक्षेत्र त्रयमेत दवर्धत।
महा० आदि पर्व 8.1

शस्यश्यामला कुरुक्षेत्र की भूमि का वर्णन बतलाते हुए आगे कहते हैं कि यहां पर कृपि की उपज में अत्यधिक वृद्धि हुई। सभी अन्न रस से परिपूर्ण होते थे। बादल ठीक समय पर वर्पा करते थे। वृक्षों में प्रभूत फल एवं पौधे फूलों से परिपूर्ण थे।

उध्र्व सस्याभवद् भूमि सस्यानि रसवन्ति च
यथर्तु वर्षो पर्जन्यो बहुपुष्पफला दुमा।
आदि पर्व 8.21

तत्कालीन सामाजिक दशा का वर्णन करते हुए वैशम्यापन जी जनमेजय से कहते हैं–

कोई भी मनुष्य दस्यु अथवा डाकू नहीं था। पाप में रुचि रखने वालों का सर्वधा अभाव था। राष्ट्र के विभिन्न प्रान्तों में सतयुग की दशा थी। सभी लोग अभिमान एवं क्रोध से रहित थे, लोभी नहीं थे। परस्पर सौहार्द की भावना थी। एक दूसरे को प्रसन्न देखकर ही प्रसन्न होते थे। लोगों के आचार व्यवहार में धर्म को ही प्राथमिकता दी जाती थी।

मान क्रोध विहीना श्रथ नरा लोभ विवर्जिताः
अन्योऽन्यमभ्यनन्दत धर्मोतर भवर्तत
नाभवन दस्युवः कोच्चिना धर्मरुपयोजनाः
प्रदेशेप्वापि राष्ट्राणां कृत युगभवर्तत।
आदि 13/14

रमणीय जनपद कुरुक्षेत्र में न तो कोई कृपण था और न ही विधवा स्त्री देखी जाती थी। अर्थात अकाल मृत्यु नहीं थी और सभी लोग धन धान्य से सम्पन्न थे।

नामवत्कृपर्ण| कश्चन्नाय वन्विधवा स्त्रियः
तास्मिन्जपदे रम्ये कुरुमिर्बहुली कृते। 3/51

हे जनमेजय कुरुकुल के प्रधान पुरुषों तथा नगर निवासियों के घरों में सदा सब और यही बात सुनाई देती थी कि दान दो और अतिथियों को भोजन कराओ।

इस प्रकार महाभारत में कुरुक्षेत्र की आर्थिक सामाजिक एवं धार्मिक दशा का विशाद विवेचन हुआ है जो महाभारत ग्रन्थ की विशालता का प्रमाण है। इस में आई हुई 2,20,000 पंक्तियाँ एवं 30,00,000 शब्द हैं इस प्रकार यह संसार का सब से बड़ा लिखित ग्रन्थ कहा जा सकता है।

महाभारत में युद्ध के मूक साक्षी–अक्षयवट :-

महाभारत युद्ध ऐतिहासिक प्रमाणों के आधार पर लगभग 5000 वर्ष पूर्व कुरुक्षेत्र में हुआ। पुरातत्व विभाग द्वारा इस बात की खोज की जा रही है कि यह किस स्थान विशेप पर हुआ किन्तु जब तक वे तथ्य हमारे सुन्मुख न आ जाएं कुछ कहना कठिन है, लेकिन क्या ज्योतिसर तीर्थ पर खड़ा विशाल अक्षयवट इस महान युद्ध का मूक साक्षी नहीं ? इस पर विचार करें तो पता चलता है कि अक्षयवट की शाखाओं की जांच भी प्रयोगशालाओं में की जा चुकी है जो कि इस बात को सिद्ध करती है कि यह मूकदृष्टा कौरव पाण्डव युद्ध कालीन है अथवा उससे भी पूर्व का है।

स्वयं भगवान योगेश्वर श्री कृष्ण ने भगवद्गीता का अमर ज्ञान भी अर्जुन को यहीं सुनाया था और यह भी सत्य है कि महाभारत का युद्ध भी अन्यत्र कहीं नहीं अपितु कुरुक्षेत्र के 48 कोस के क्षेत्र में हुआ। श्रीमदभगवत गीता का प्रथम श्लोक इस तथ्य को प्रमाणित करने में पर्याप्त है जहां कि नेत्रहीन धृतराष्ट्र दिव्य नेत्रों वाले संजय से पूछते हैं --

धर्मक्षेत्र कुरुक्षेत्र समवेता युयुत्सव: ।
मामका: पाण्डवाश्रचैव किम कुर्वत संजय।

हे संजय धर्मभूमि कुरुक्षेत्र में एकत्रित युद्ध की इच्छा वाले मेरे और पाण्डु के पुत्रों ने क्या किया। संजय बोले उस समस राजा दुर्योधन ने व्यूह रचना युक्त पाण्डवों की सेना को देखकर और द्रोणाचार्य के पास जाकर कहा कि आप पाण्डवों की विशाल व्यूहाकार खड़ी हुई भारी सेना को देखिए। इस प्रकार दोनों ओर के शूरवीरों का विस्तृत वर्णन गीता के प्रथम 20 शलोकों में मिलता है। 21वें श्लोक में अर्जुन कहते हैं हे अच्युत मेरे रथ को दोनों सेनाओं के बीच में खड़ा कीजिए। यह बीच वाला स्थान कुरुक्षेत्र के 48 कोस के क्षेत्र में ज्योतिसर सर्वमान्य हो सकता है।

संजय बोले हे धृतराष्ट्र अर्जुन द्वारा इस प्रकार कहे हुए वचन से दोनो सेनाओं बीच में भीश्म व द्रोणचार्य के सामने तथा राजाओं के सामने उतम रथ को खड़ा कर दिया। यहां अर्जुन उन दोनों सेनाओं में स्थित अपने ताऊ, चाचा, दादा, पड़दादा, गुरुजन मामा, भाई, पौत्रों को एवं मित्रों को देखते हैं उन का शरीर रोमान्चित हो जाता है। हाथ से गांडीव गिर रहा है, त्वचा जल सी रही है। बुद्धि भ्रमित हो जाती है। स्वजन समुदाय को मार कर वह कल्याण नहीं चाहते।

इस प्रकार अर्जुन की हृदय दुर्बलता को समझते हुए भगवान कृष्ण ने जो गीता का उपदेश दिया, उनके मोह को नष्ट करके ज्योति प्रकाश फैलाया। कर्मयोग का महान एवं दिव्य संदेश जो आज भी शाश्वत है सार्वभौम एवं सार्वकालिक है, समस्त मानव जाति के लिए आदर्श बन गया है। इसी गीतासंदेश एवं महाभारत कालीन संस्कृति एवं युद्ध के मूक साक्षी हैं ज्योतिरार तीर्थ के अक्षयवट।

ऐसा कहा जाता है कि एक बार विश्व प्रसिद्ध अमेरिकन वैज्ञानिक डा० टी० वालर बाल बैंक ने 1952 में इस तीर्थ की यात्रा की। वे इस अक्षय वट से बहुत प्रभावित हुए। इस अक्षय वट की शाखा के कुछ भाग अपने साथ ले गये। दो वर्षों तक निरन्तर परीक्षण करने के बाद वे इस परिणाम पर पहुंचे कि उक्त शाखाएं 6000 वर्षों से भी अधिक पुरानी है। इस प्रकार ज्योतिसर स्थित अक्षय वट निश्चय ही श्रीमद्भगवदगीता के दिव्य सन्देश के मूक दृष्टा है। सैकड़ों श्रद्धालु नित्य प्रति ज्यातिसर तीर्थ पर इस अक्षय वट के दर्शन एवं भगवान कृष्ण के दिव्य संदेश स्थान के दर्शन हेतु यहां पर आते हैं एवं एक अद्भूत शान्ति का अनुभव करते हैं। सूर्यग्रहण के अवसर पर तो लाखों यात्री यहां आकर पुण्य लाभ प्राप्त करते हैं। अक्षय वट में जलदेकर अपने को कृतकृत्य मानते हैं। हाल ही में कुरुक्षेत्र विकास मण्डल द्वारा इस तीथ का जीर्णोद्धार किया गया है। पवित्र तीर्थ में जल एवं घाटों का निर्माण करवाया गया है। बरसात में जो जल इधर उधर फैल जाता है अब वहां एक झील का निर्माण हो गया है जिस में नौका वाहन की भी व्यवस्था की गई है ताकि पर्यटक उस का पूरा आनन्द ले सकें।

आधुनिक काल में जगदगुरु आदि शंकराचार्य, महाराजा रणजीत सिंह, महाराजा पटियाला, यहा तीर्थ दर्शन हेतु आए एंव उन्होंने मां सरस्वती की पावन प्रतिमा की स्थापना करवाई। महाराज गुलाब सिंह जम्मू एवं काश्मीर ने भी यहां भगवान शिव की मूर्ति स्थापित की। महाराजा दरभंगा ने चबूतरे का निमाण करवाया 1967 में कामकोटि पीठ के शंकराचार्य ने यहां एक कृष्ण अर्जुन रथ तथा शंकराचार्य के मन्दिर का निमाण करवाया।

प्रत्येक वर्ष शीत ऋतु में यहां शुक्ल पक्ष की एकादशी को मार्गशीर्ष मास में प्रारम्भ होकर 18 दिनों तक गीताजयन्ती समारोह का आयोजन होता है। इस तीर्थ के सुधार में कुरुक्षेत्र विकास मण्डल ने विशेष रुचि ली है। सरोवर में यात्रियों को स्नानर्थ नरवाना नहर से निरन्तर शुद्ध एवं ताजा जल उपलब्ध होता है।

****

कुरुक्षेत्र और श्री नंदा जी

देश धर्म एवं मानव के उत्थान हेतु महापुरप जन्म लेते हैं। हमारे धार्मिक ग्रन्थों में उल्लेख आता है कि वही योगी है वही महात्मा है जो कि सुख दुःखादि एवं राग द्वेप से मुक्त हो गया है। क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार आदि को त्यागने वाला ही जितेन्द्रिय कहलाता है। इस पुण्य भूमि भारतवर्प ने अनेक ऐसे महापुरुपों को जन्म दिया है जिन का जीवन अपने लिए न होकर, समाज उत्थान के लिए होता है। वे अपने कृत्यों से समाज को एक दिशा देते हैं, उसका मार्गदर्शन करते हैं। आज के कलिकाल में ऐसे महापुरुपों का मिलना लगभग दुर्लभ सा है किन्तु कुरुक्षेत्र का सौभाग्य है कि हमें परम श्रद्धेय नंदा जी जैसा योगी पुरुप, सोम्य व्यक्तित्व का पूर्ण मार्ग दर्शन प्राप्त हुआ एवं कुरुक्षेत्र का सर्वांगीण विकास इनके हाथों संभव हो सका।

नंदा जी का जन्म अखण्ड भारत के स्थालकोट नामक स्थान पर 4 जुलाई 1898 ई० में हुआ एवं मध्यवर्गीय परिवार से सम्बन्धित इनके पिता श्री बुलाकीराम जी शिक्षक थे। माता श्रीमति ईश्वरी देवी संस्कार सम्पन्न महिला थी। इस प्रकार भारतीय संस्कृति की छाप इन्हें विरासत में प्राप्त हुई। बाल्यकाल से ही माता जी से धर्म ग्रन्थों, अवतारों एवं पौराणिक आख्यानों को सुनकर उनकी वृति पूर्णतया धार्मिक बनी। अत| इनमें अनुशासन प्रियता, कुशाग्रबुद्धि जैसे गुणों का समावेश होता चला गया। श्री नंदा जी ने अर्थशास्त्र में एम. ए किया और एल बी. की शिक्षा प्राप्त की। आप बम्बई में अर्थशास्त्र के प्रोफेसर रहे। भारतीय अर्थव्यवस्था का आपका ज्ञान गहन है। अंग्रेजों के शासन काल में मजदूरों की दयनीय स्थिति को देखकर एवं महात्मा गांधी जी के निर्देशन में आप ने मजदूर आन्दोलन का सफल नेतृत्व संभाला। आप टैक्सटाईल लैबर एसोशियन के सचिव के रुप में 1922 से 1946 तक मजदूरों की मांगों को लेकर अंग्रजों से लड़ते रहे। मजदूरों का संगठित किया, जेल की यातनाएं सही। किन्तु अपने कर्तव्य पर डटे रहे।

स्वर्गीय श्री जवाहरलाल नेहरु नंदा जी से काफी प्रभावित थे। स्वतन्त्रता से पूर्व वह भारत के भविष्य की योजनाओं पर नंदा जी से बातचीत करते रहते थे। अत: भारत के प्रथम योजना आयोग के उपाध्यक्ष पद पर श्री नहरु जी द्वारा श्री नंदा जी को उपयुक्त स्थान दिया गया। प्रथम योजना आयोग की बनाई गई योजनाएं आज भारत को गौरान्वित कर रही है। सन् 1951–52 से आप केन्द्रीय मंत्रीमडल में योजना मंत्री बनाये गये। इसके अतिरिक्त भी आप अन्य मंत्रालयों का कार्य देखते रहे। सन् 1963 में गोविन्द वल्लभ पंत जी के निधन के बाद उन जैसे विचारों के गृह मंत्री की आवश्यकता को आप ने पूरा किया। आज साम्प्रदायिकता एवं आंतकवाद की आग से देश जल रहा है, ऐसे समय में सन् 1965 का बंगाल का नक्सली विद्रोह स्मरण हो आता है। श्री नंदा जी के दृढ़ निश्चय प्रशासनिक गुणों और निर्भीकताओं ने इस विद्रोह को समाप्त किया एवं बंगाल में शान्ति स्थापित हुई।

इससे पूर्व 1964 में श्री नेहरु जी के आकस्मिक निधन पर सारा देश स्तब्ध रह गया, ऐसे आपतकाल में श्री नंदा जी ने कार्यकारी प्रधानमंत्री का पद संभाला और अपनी पार्टी में लोकतांत्रिक प्रणाली के अनुरुप चुनाव करवाकर प्रधानमंत्री का पद लालबहादुर शास्त्री को सौंप दिया। लोकतांत्रिक के प्रति आस्था एवं उच्च चरित्र का एक उदाहरण बनता है। श्री शास्त्री जी के निधन पर अपने पुन: देश का नेतृत्व संभाला।

अपने गृहमंत्री के रुप में स्वच्छ प्रशासन के लिए भ्रष्टाचार के विरूद्ध लम्बी लड़ाई लड़ी। संयुक्त सदाचार समिति का गठन किया। किन्तु इस देश का दुर्भाग्य कि श्री नंदा जी जैसे स्वच्छ छवि वाले नेता को भी अपने पद से त्यागपत्र देना पड़ा। तत्पश्चात् 1970-71 में आप को रेलवे मंत्रालय का कार्यभार सौंपा गया। यहां पर भी आप ने रेल मंत्रालय एवं सामान चोरी के खिलाफ कई कदम उठाए, चार सूत्री कार्यक्रम बनाया। 1975 में आप केन्द्रीय नागरिक परिषद के उपाध्यक्ष बनाये गये। यहां पर अपने खाद्य पदार्थों एवं दवाओं में मिलावट विरोधी अभियान चलाया। इस प्रकार नंदा जी के समस्त राजनैतिक जीवन पर विचार करें तो उनका सारा जीवन मजदूरों के लिए लड़ाई लड़ने भ्रष्टाचार विरोधी, खाद्य पदार्थों में मिलावट हटाने एवं नशाबंदी में बीता है।

धर्मनिष्ठ श्री नंदा जी:-

श्री नंदा जी का दैनिक जीवन प्रात| काल प्रभु भजनों से ध्यान एवं जप साधना से प्रारम्भ होकर सांय इन्हीं में समाप्त होता है। सतुंलित एवं शुद्ध शाकाहारी भोजन ही उनका आहार है। हिन्दु धर्म के प्रति उनकी गहरी आस्था है। उन द्वारा स्थापित मानव धर्म मिशन से भी स्पष्ट है कि श्री नंदा जी मनुष्य मात्र का केवल एक धर्म मानते है वह है मानवता, जिसमें सदाचार, संयम, निरामिश, नशाबदी एवं कर्तव्य निष्ठता हो। सिख गुरुओं के प्रति आप की अगाध श्रद्धा है। 1974 में उनके द्वारा गुरु तेग बहादुर पर विरचित पुस्तक इसका प्रमाण है। धार्मिक गोष्ठी हो या कोई संत समागम, देश के किसी भी कोने में हो नंदा जी के त्याग, तपस्या एवं स्वच्छ जीवन की प्रंशसा करते हुए लोग उन्हें राजर्षि की उपाधि से विभूषित करते हैं।

श्री नंदा जी एवं कुरुक्षेत्र:-

धर्मनिष्ठ श्री नंदा जी का तीर्थों के प्रति विशेष लगाव रहा है। 1967 में जब श्री नंदा जी कुरुक्षेत्र पधारे तो स्नान के लिए ब्रह्म सरोवर गये तो वहां स्नान के लिए मात्र केवल कीचड़ था। नंदा जी तीर्थ की ऐसी दशा देखकर व्यथित हुए उन्होनें संकल्प लिया कि कुरुक्षेत्र के पवित्र तीर्थों का एवं सरोवरों का जीर्णोद्वार करेंगे। आपके अपने प्रयासों से कुरुक्षेत्र की पावन भूमि पर विराजमान तीर्थों के लिए " कुरुक्षेत्र विकास मण्डल" (के.डी.बी.) की स्थापना हरियाणा सरकार से करवाई। जिसके सतत प्रयास से आज ब्रहमसरोवर, ज्योतिसर, सन्निहित, नरकातारी, पेहोवा, फलगू कौल तीर्थों की काया पलट गई है। कुरुक्षेत्र से नंदा जी का विशेष लगाव है। कहां क्या होना है, किस तीर्थ की क्या स्थिति है यह सब उनके

मस्तिष्क में रहती है। गौ ब्राह्मण का भी नंदा जी पूज्य मानते हैं। कुरुक्षेत्र में गोपालन केन्द्र, ब्राह्मण धर्मशाला इत्यादि इसी श्रंखला की एक कड़ी है। किन्तु अन्य सभी वर्णों में भी बराबर रुचि है। जिसके परिणामस्वरुप कुरुक्षेत्र में जाट, अरोड़ सैनी, राजपूत, रविदास, बाल्मीकि सभी प्रकार के वर्गों के लिए धार्मिक स्थान बने हुए हैं। श्री नंदा जी की प्रेरणा से कुरुक्षेत्र विकास मंडल धार्मिक जागृति लाने में सहायक हो रहा है।

साहित्य प्रेम नंदा जीः-

श्री नंदा जी को उच्चकोटि का साहित्य साहित्य बहुत प्रिय है। उन्हें रात दिन अध्ययनशील देखा जा सकता है। उनके पास अमूल्य पुस्तकों का भडांर था जो उन्होनें मानवधर्म मिशन के पुस्तकालय में प्रदान कर दिया है। धार्मिक एवं दार्शनिक पुस्तकों से आपको विशेष लगाव है। अर्थशास्त्र का उन्हें विशद ज्ञान है। श्री नंदा जी हिन्दी, अंग्रेजी, पंजाबी, गुजराती एवं पश्तों भाषाएं अच्छी प्रकार जानते हैं।

भारतीय संस्कृति के प्रतीक नंदा जीः-

श्री नंदा जी के प्रयत्नों से कुरुक्षेत्र में कई सांस्कृतिक एवं धार्मिक सम्मेलन हो चुके हैं जिनमें जगतगुरु शंकराचार्य, माँ आननदमयी, सत्यसांई बाबा प्रभृति उच्चकोटि के सन्त यहां पधार चुके हैं। मानवधर्म मिशन भारतीय संस्कृति का केन्द्र है। कई दुर्लभ ग्रन्थ इसके पुस्तकालय में विद्यमान हैं। कुरुक्षेत्रं के ब्रहमसरोवर के दक्षिणी तट पर सप्त ऋषि आश्रम स्थापित करने की योजना है। आदर्श गोपालन केन्द्र आपकी देखरेख में कुरुक्षेत्र मोहननगर में चल रहा है। आयुर्वेद का श्री कृष्ण आदर्श आयुर्वेद महाविद्यालय आप की प्रेरणा से ही सफलतापूर्वक चल रहा है। आज इस का नयाभ वन निर्माणाधीन है एवं हरियाणा सरकार इसे पूरा संरक्षण प्रदान कर रही है। शुद्ध औषोधियों के लिए आप द्वारा प्रस्तावित आयुर्वेदिक फार्मेसी सफलतापूर्वक चल रही है।

कुरुक्षेत्र विकास मंडल एवं नंदा जीः-

श्री नंदा जी को कुरुक्षेत्र विकास मंडल का अध्यक्ष बनाकर स्वयं विकास मंडल धन्य हो गया क्यूंकि कुरुक्षेत्र के तीर्थो के विकास हेतु नंदा जी ही दिव्य शक्ति के रुप में प्रकट हुए हैं। अध्यक्ष बनते ही आप ने सारे कुरुक्षेत्र के तीर्थों की काया पलट देने का दृढ़ संकल्प लिया। परिणामस्वरुप आज कुरुक्षेत्र का ब्रहमासरोवर एशिया में सबसे बड़ा सरोवर है। सैकड़ो, मजदूरों, इंजीनियरों एवं आर्चिटैक्टों के सहयोग से पुरे एक वर्ष तक निरन्तर दिन रात कार्य चलता रहा है। चौदह फुट गहरी मिट्टी खोदी गई ताकि इस तीर्थ में पुन| काई अथवा मिट्टी न जमने पाए। सरोवर के चारों और स्नानघर, परिक्रमा एवं रैन बसेरे बनवाये गये हैं। इस पर लगभग चार करोड़ से भी अधिक राशि खर्च हो चुकी है। सतलुज नदी का पवित्र जल इस तीर्थ में मोतियों की भांति स्वच्छ एवं निर्मल रुप में प्रवाहित हो रहा है।

ज्योतिसर तीर्थ पर लगभग 30 लाख रुपये खर्च करके सुन्दर झील का निर्माण हुआ है। सारा तीर्थ नया बन चुका है। सन्निहित, फलगू, कौल के तीर्थ भी नवनिर्मित हैं। अन्य तीर्थों के नवर्निर्माण की योजनायें भी चल रही हैं। नंदा जी को प्रभु दीर्घायु दे ताकि वे इसी प्रकार के अन्य धार्मिक कार्य पुरे करते रहें।

सिख गुरुओं की कुरुक्षेत्र यात्रा

भारत वर्ष के अन्य तीर्थों में कुरुक्षेत्र ही ऐसा स्थान है जहां सिक्ख गुरुओं ने तीर्थ परम्परानुसार यात्रांए की। इसमें पहली पातशाही तीसरी चौथी, छठी पातशाही, आठवीं और दसवीं पातशाही के गुरुद्वारे हैं जिन्हें आधुनिकतम भव्य एवं सुन्दर बनाने में बाबा जीवनसिंह का पूरा हाथ है। पांच गुरुद्वारों की इमारतें संगरमर की बनकर तैयार हो गई हैं। सब से सुन्दर, गुरुद्वारा छेंवी पातशाही की भव्य इमारत है। जहां पर स्थानीय गुरुद्वारा प्रंबधक कमेटी थानेसर का मुख्य कार्यालय है। सभी गुरु पर्व धार्मिक दिन संक्रांति, अमावस पूर्णमासी इत्यादि धूम–धाम एवं उत्साह से मनाये जाते हैं। गुरु हरगोविन्द साहिब की शोभायात्रा उनक जन्म दिन पर वार्षिकोत्सव के रुप में मनाई जाती है। सारे नगर में विशाल शोभायात्रा निकाली जाती है। दीवान सजाये जाते है। अखण्ड पाठों की लड़ी लगती है। गुरु का प्रसाद लंगर इत्यादि बांटे जाते हैं। इस उत्सव में भाग लेने हेतु हजारों श्रद्धालु हरियाणा, पंजाब, लखनऊ, रामपूर, बरेली, देहली, बम्बई व इन्दौर से आते हैं।

स्थानीय प्रबन्धक कमेटी की उपलब्धियाँ :–

गुरुद्वारा छेवीं पातशाही में आवास एवं भोजनालय का विशेष प्रबन्ध है। यहां पर प्रात| सांय अनेक रागियों द्वारा शब्द कीर्तन की रसमयी वाणी प्रवाहित होती रहती है। गुरुद्वारे की स्थायी आय हेतु कुछ पक्की दुकानों का र्निमाण किया गया है। एक फ्री डिस्पेन्सरी भी खोली गई है जिसमें प्रतिदिन सैकड़ों मरीज लाभ प्राप्त करते हैं। उक्त संस्था द्वारा स्थानीय गुरुनानक माडल स्कूल भी चलाया जा रहा है। भविष्य में धार्मिक पुस्तकालय, अजायबघर एवं कन्या उच्च विद्यालय खोले जाने की भी योजनाएं हैं।

गुरुद्वारा पहली पातशाहीः–

प्रथम गुरु श्री गुरुनानक देव जी (1469–1538) के कुरुक्षेत्र पधारने के प्रमाण में एक गुरुद्वारा सिद्ध वटी के नाम से प्रस्थापित है। सिक्ख गुरुओं ने धर्म के प्रति श्रद्धा व विश्वास प्रकट किया है। पावन वर्पों पर तीर्थ स्थानों की यात्रा की है। विशेपकर सूर्य ग्रहण के पुनीत अवसर पर कुरुक्षेत्र तीर्थ स्नान करके ग्रहण काल में जप ध्यान व दान पूजन आदि कृत्यों द्वारा असंख्य श्रद्धालुओं को भक्ति ज्ञान व उपदेश दिये हैं। यह गुरुद्वारा कुरुक्षेत्र तीर्थ के दक्षिणी किनारे पर एक ऊंचे टीले पर स्थित है।

गुरु द्वारा छेवीं पातशाही :–

कुरुक्षेत्र सिक्खों के लिए महत्वपूर्ण धर्मस्थली है। श्री गुरु हरगोंबिन्द जी की कुरुक्षेत्र में की गई यात्रा के स्मृति रुप में पेहोवा रोड़ पर सन्निहित तीर्थ के समीप गुरुद्वारा छेवीं पातशाही

का निमाण किया गया है। यह कुरुक्षेत्र में सर्वोतम गुरुद्वारों में से है। प्रारम्भ में यह एक छोटा सा गुरुघर था किन्तु धीरे धीरे बढ़ते बढ़ते आज एक विशाल गुरु संस्थान के रुप में उभर कर सामने आया है। सारा गुरुघर संगमरमर द्वारा निर्मित किया गया है। सुन्दर सरोवर का निमाण हो चुका है प्रत्येक गुरुपर्व पर यहां मेला लगता है जिसमें देश देशान्तर से लाखों श्रद्धालु भाग लेते हैं। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी द्वारा इस गुरुद्वारे की समुचित व्यवस्था की जाती है।

गुरुद्वारा पांचवी व सातवीं पातशाही :-

यह दोनों गुरुद्वारे एक ही स्थान पर कुरुक्षेत्र सरोवर से थानेसर नगर की और आते हुए मार्ग पर बांई ओर बाल्मीकि बस्ती के निकट स्थित है। गुरुद्वारे के सुन्दर भवन बनाए गये हैं।

नौवीं पातशाहीः-

थानेसर नगर एवं कुरुक्षेत्र भूमि के अति प्राचीन एवं पावन तीर्थ पर श्री स्थाणीश्वर महादेव मन्दिर के समीप नौवें गुरु तेगबहादुर जी का गुरुद्वारा एवं सुन्दर भवन बना हुआ है।

दसवीं पातशाहीः-

कुरुक्षेत्र सरोवर के उतर पश्चिमी तट पर दसवें गुरु श्री गोविंद सिंह जी महाराज ने अपना पड़ाव किया था। और तीर्थ में स्नान ध्यानादि धार्मिक कृत्य किए थे। इसके परिणामस्वरुप उनकी स्मृति में एक गुरुद्वारे का निमाण हुआ है। कहते हैं कि गुरुजी एक विद्वान पंडित श्री मनीराम जी के यहां मिलने उनके घर मोहल्ला सौदागरान (रामगली) में गये थे और पंडित जी को एक फरमान ताम्र पत्र पर लिखकर दिया था जो आज भी देखा जा सकता है। पंडित जी के घर पर एक गुरुद्वारे का निमाण हुआ है। इस परिवार की वृद्ध महिला रामदेवी है उनके वंशज प० हरिचंद, ताराचंद, पं० रविधर, पं० नीलधर व प्रेमचंद आदि सपरिवार हैं जिनके पास यह ताम्र पत्र सुरक्षित है।

इस प्रकार विभिन्न गुरुओं ने जैसे नानकदेव, (1469–1538ÏEतृतीय गुरु अमरदास जी (1552–1574ÏEचौथे गुरु रामदास जी, (1574–1581Ï पांचवे गुरु हरगोविन्द (1606–1644Ï छटे गुरु हरराय जी ने (1644–61Ï सातवें गुरु हरकिशन जी ने 1661–64 नवें गुरु तेगबहादुर जी ने 1664–75 दसवें गुरु गोविन्दसिंह जी (1675–1708Ï की गई यात्राओं की याद में विभिन्न गुरुद्वारे बनाये गये हैं। सिक्ख गुरुओं ने हिन्दु धर्म के सिद्धान्तों के अनुसार हमारे सभी तीर्थों की, विशेष धार्मिक पर्वों पर जैसे सूर्यग्रहण, सोमावती अमावास, चैत चौदस पर यात्राएं की हैं और हमारे तीर्थों को पूरा सम्मान दिया है। हजारों लोग उनके उपदेशों से प्रभावित होकर कृत्कृत्य हुए हैं क्यूंकि उनकी वाणी में सच्चाई थी, परस्पर प्रेम व सद्भावना का प्रचार था उनकी शिक्षाएं हमारे धार्मिक सिद्धान्तों पर ही आधारित थी। उनकीपरम्पराएं उच्च थी। इसीलिए आज भी वे समस्त हिन्दुओं जाति में समान रुप से पूजनीय हैं। उनके

गुरुद्वारे तीर्थ स्थानों के अत्यन्त निकट हैं। मन्दिर और गुरुद्वारे में एक जैसी श्रद्धा का भाव परिलक्षित होता है।

इस प्रकार कुरुक्षेत्र सिक्खों के लिए समान रुप से महत्वपूर्ण धार्मिक स्थल है। लगभग सभी गुरुओं ने इस धार्मिक पवित्र स्थल की यात्राएं की हैं। प्राचीन तीर्थ पर प्रसिद्ध संत गुलाब सिंह जी ने बहुत से धार्मिक ग्रन्थों की रचना की। सारस्वती तट पर भाई सन्तोप सिंह जी ने कई ग्रन्थों का प्रणयन किया। महाराजा रणजीत सिंह ने भी यहां के मन्दिरों को अतुल धनराशि देकर इनका निर्माण करवाया।

****

कुरुक्षेत्र-एक ऐतिहासिक दृष्टि

पुण्यभूमि कुरुक्षेत्र का इतिहास शताब्दियों से चली आ रही सत्य सनातन, धार्मिक, पौराणिक एवं ऐतिहासिक परम्पराओं से जुड़ा हुआ है। एक ओर जहां यह भारतीय संस्कृति का उद्गम और आध्यात्मिक चिन्तन का प्राचीनतम केन्द्र रहा है वहां इसका इतिहास भी अति प्राचीन है। इसका अतीत बहुत ही समुज्जवल धन धान्य से परिपूर्ण एवं ज्ञानगरिमा सम्पन्न रहा है।

सृष्टि के आदिकाल से ही कुरुक्षेत्र धार्मिक अनुष्ठानों एवं प्राचीन आर्य सभ्यता का जन्मस्थल रहा है। स्वयं प्रजापति ब्रह्मा ने यहां अनेकों यज्ञ किए तब यह ब्रह्मवेदि पर हल चलाकर कृषकों को कृषि कार्य की प्रेरणा दी। वामन पुराण में विस्तृत वर्णन एक रुपक के माध्यम से पुराणों की अंलकार शैली में इस घटना का विवरण दिया गया है। वहाँ महाराज कुरु के अष्टांग, महानधर्म, तप, सत्य, दया, क्षमा, शील, दान, योग ब्रह्मचार्य इत्यादि की भी व्याख्या हुई है। परन्तु कुरुक्षेत्र का इतिहास एवं सांस्कृतिक परम्पराएं इन घटनाओं से भी प्राचीन हैं। यहां पर प्राक हड़प्पा (2500-200 ई० पूर्व) हड़प्पा (2200-1800 ई० पूर्व) संस्कृति के कुछ आदि ऐतिहासिक स्थल प्रकाश में आये हैं। कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय व भारतीय पुरातत्व विभाग सर्वेक्षण ने यहां क्रमश| दौलतपुर, मिर्जापुर व भगवानपुर नामक उतर हड़प्पा कालीन (ई० पूर्व 1800-1500) स्थलों उत्खनन किया है। इन प्राचीन भग्नावशेषों से हमें कुरुक्षेत्र के पुराकालीन इतिहास का विवरण मिलता है जो कि ईसा से 1800 वर्ष पूर्व सिन्धु सभ्यता से मिलता जुलता है।

कुरुक्षेत्र का इतिहास बहुत प्राचीन है। यही पर ब्रहमा ने यज्ञ किया व सृष्टि की उत्पति की, ऋगवेद में वर्णित महाराज पुरुखा व उर्वशी का पुन| मिलन यहीं पर हुआ। कुरुक्षेत्र में ही महाराज कुरु ने कर्षण यज्ञ किए। शर्यणावत (प्राचीन कुरुक्षेत्र प्रदेश) का सरोवर के समीप ही इन्द्र ने वृतासुर का वध किया, महर्षि दधीचि ने इन्द्र को अस्थि दान में दी, सुन्द उपसुन्द नामक राक्षसों ने यहां राज्य किया, परशुराम व भीष्म का युद्ध हुआ। आर्यो व अनार्यो के बीच लड़ाईयाँ भी इन्हीं मैंदानों में हुई। इसी क्षेत्र में कौरव व पाण्डवों के बीच प्रलंयकारी युद्ध हुआ और यही योगेश्वर भगवान कृष्ण ने भगवत् गीता का शाश्वत संदेश विषादयुक्त अर्जुन को गांडीव उठाने के लिए अर्थात कर्मयोग हेतु प्रेरित किया। सारे विश्व के दार्शनिक चिन्तन को नये आयाम एवं नवीन दिशा देनें में कुरुक्षेत्र का नाम सर्वोपरि है। जहां स्वयं योगेश्वर परब्रह्म ने ज्ञान ज्योति का प्रकाश किया हो उसकी ऐताहिसकता असंदिग्ध है। गीता के प्रत्येक अध्याय के अन्त में, उपनिषद, ब्रहमाविधा, योगशास्त्र का पुन| पुन| उल्लेख आया है। जिससे स्पष्ट होता है कि गीता का दार्शनिक चिन्तन हमारे वेद, शास्त्रों एवं सनातन परम्पराओं के अनुकूल है। डा० रमेश चन्द्र मजूमदार के अनुसार एवं अन्य प्रसिद्ध विद्धानों के अनुसार ब्राह्मण ग्रन्थों की रचना भी कुरुक्षेत्र में हुई। शतपथ ब्राह्मण में कुरुक्षेत्र को अग्नि,

इन्द्र, सोम, मख, विष्णु और विश्व देवों की यज्ञ भूमि कहा है। इसी ग्रन्थ में पुरुखा व उर्वशी की प्रेम गाथा के वर्णन में कुरुक्षेत्र का वर्णन प्राप्त है। प्राचीन साहित्य में यह प्रेम कथा अत्यन्त लोकप्रिय रही। ऋगवेद से लेकर महाकवि कालिदास तक इस का प्रभाव बना रहा। इस प्रकार कुरुक्षेत्र धर्मभूमि, कर्मभूमि के साथ साथ प्रेमभूमि के रुप में भी प्रसिद्ध रही है।

वैदिक काल के बाद बुद्धकाल में भी कुरुक्षेत्र की सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक परम्परा अक्षुण्ण रही। बुद्ध धर्म के उत्कर्ष काल में अर्थात ईसा से 500 वर्ष पूर्व कुरुक्षेत्र तत्कालीन सोलह महाजनपदों में से एक था और इसे कुरुजनपद कहते हैं। बौद्ध ग्रन्थों में भी कुरुओं के धम्म और शील की पर्याप्त चर्चा मिलती है। गौतम बुद्ध ने भी एक बार कुरुक्षेत्र तीर्थ का भ्रमण किया ऐसा उल्लेख पाणिनी अष्टाध्यायी में मिलता है।

चन्द्रगुप्त मौर्य के काल में कुंरुक्षेत्र पुन: प्रकाश में आया एवं इसका महत्व बढ़ा। यूनानी विद्वान मेगास्थनीज़ जिन्होंने सैल्यूकस के काल में भारत भर का भ्रमण किया। अपनी यात्रा विवरण में कहा है -- "सरस्वती तट का यह प्रदेश जिसे कुरुक्षेत्र कहते हैं रमणीय एवं शान्तिमय है। कला और विद्या राज्य की छत्रछाया में फलफूल रहें हैं।"

इस प्रकार मौर्यकाल में यह मगध साम्राज्य में सम्मिलित था। गुप्तकालीन कुरुक्षेत्र का वर्णन कवि शिरोमणि कालिदास की अमरकृति मेघदूत में मिलता है--

ब्रह्मावर्त जनपदम य छांमया गाहमानः
क्षेत्रं क्षेत्रं प्रधनपिशुनं कौरवं तद्भजेयाः
राजत्यानां सितशरशतैः यत्र गाण्डी व बन्धना
धारा पातैस्तवमित्रं कमलान्यश्च वर्षमुखानि।
मेघदूत।49

तदुपुरान्त ब्रहमावर्त देश में छाया रुप में प्रवेश करने वाले, (यक्ष) तुम जहां पर कौरव पाण्डवों का युद्ध हुआ उस कुरुक्षेत्र में जाना। जैसे तुम कमलों पर असंख्य जलधारा बरसाते हो वैसे ही गांडीवधारी अर्जुन ने सामने खड़े हुए राजाओं के अंगों पर सैकड़ों तीक्ष्ण तीर बरसाये थे और उनके सिर काट दिये थे।

हित्वा हालकभ्रितत रसां रेवती लोचनाकडठ
बन्धु प्रीया समर विमुखो लाङ्गली याः सिषेवे
कृत्वा तासमाश्रिगमपां सौम्य सारस्वतीना
मन्तः शुद्धस्त्वमपि श्रविता वर्णमात्रेण कृष्णः

अर्थात केवल कौरव एवं पांडवों पर समान स्नेह होने से किसी भी पक्ष में युद्ध न करने वाले बलराम जी ने अपनी अत्यन्त प्रिय वह जिस से खेती की आंखो का चिह्न निकलता है ऐसी

सुरा को त्याग जिस सरस्वती का सेवन किया, उस सरस्वती का जल तुम भी सेवन करना ऐसा करने से काले रंग के होने पर भी तुम भीतर से शुद्ध हो जाओगे अर्थात तुम्हारा मन निर्मल हो जाएगा।

कुरुक्षेत्र में सम्राट अशोक द्वारा निर्मित स्तूप से यह सिद्ध होता है कि बौद्धों के लिए भी यह पवित्र धार्मिक स्थान था। चीनी यात्री ह्यूनसांग ने इस स्तूप का विशेष वर्णन किया है। उनके अनुसार इसमें तथागत के पवित्र अवशेष सुरक्षित थे। अशोक ने यहां धर्ममहाराजाओं की नियुक्तियां की और अपने एक अभिलेख में इस सम्बन्ध में विशेष आदेश जारी किए। मौर्यसाम्राज्य के पतन के बाद इस प्रदेश पर यवनों का अधिकार हुआ। शुंगो के समय में यह प्रदेश पुन| मगध के अधिकार में आ गया। बौद्ध साहित्य में शुंगकालीन राजा पुण्यमित्र के काल मे स्थालकोट तक उनके प्रभाव का वर्णन मिलता है। पुन| कुषाणों की मुद्राओं में इस प्रदेश का अधिकार उनके अधिकार में सिद्ध होतां है। समुद्रगुप्त एवं चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य के साम्राज्य में कुरुक्षेत्र सम्मिलित था। हुणों के आक्रमण का भी इस प्रदेश ने सामना किया। छठी शताब्दी के उतरार्द्ध में थानेश्वर में वर्धनों के उत्थान के साथ, कुरुक्षेत्र की गरिमा को चार चांद लग गये। अब वह धर्म एवं संस्कृति के केन्द्र के अतिरिक्त राजनीति का केन्द्र भी बन गया। राजकवि बाण ने वर्धनों के इस प्रदेश की आर्थिक सम्पन्नता का, बौद्धिक साहित्यिक एवं नैतिक उन्नति का सुन्दर वर्णन किया है। उस समय इस प्रदेश का नाम श्री कण्ठ जनपद था जिसकी राजधानी स्थाणीश्वर थी। यहां के ब्राहमण और अन्य वर्ग अपने आचरण एवं व्यवहार की शुद्धता के लिये प्रसिद्ध थे। यहां की सामाजिक व्यवस्था कृतयुग की याद दिलाती थी। यहां की उपजाऊ भूमि, उपवन, सिंचाई की व्यवस्था, गोधन तथा नगरवासियों के चरित्र का सजीव वर्णन हर्षचरित से प्राप्त होता है। बाण भट्ट लिखते हैः-

प्रज्जवलित हवनकुण्डों तथा वैदिक मन्त्रों से ओतप्रोत यहां के धार्मिक परिवेश में पाशुपत धर्म का विशेष प्रचार था। स्थाणीश्वर में मुनियों के तपोवन रसिकों की संगीत शालायें, विद्यार्थियों के गुरुकुल, विदग्धों की विट गोष्ठियां, चारणों के महोत्सव सभी प्रकार के समाज थे। शास्त्रोप जीवी गायक, शिल्पी व्यापारी, बौद्ध भिक्षु सभी लोग थे। यहां के आस पास का प्रदेश इतिहास तथा श्रुति परम्परा से बहुत प्राचीनकाल से प्रसिद्ध था। यह प्रदेश बहुत ही समृद्धशाली था। इसमे हरे भरे उपवन, सुन्दर कुन्ज, अन्नपूर्ण क्षेत्र एवं फलों से भरे उद्यान थे। देश के निवासी सुख शान्ति से जीवन यापन करते थे। सभी प्रकार की आवश्यक वस्तुएं प्रचुर मात्रा में उपलब्ध थी। लोग पुण्यात्मा थे,अतिथि सत्कार का भाव आवश्यकता से अधिक था। अधर्म, वर्णशंकर, विपति एवं व्याधि का कहीं नाम न था। सत्य के जिज्ञासुओं तथा सांसारिक सुख की कामना करने वालों को समान सुविधाएं थी। ऋषियों व्यापारियों तथा विद्वानों सभी के लिए यह प्रदेश प्रिय था लोग ललित कला प्रेमी भी थे। धार्मिक आचरण को पूरा सम्मान देते थे।

चीनी यात्री हयूनसागं ने, जो उस समय भारत आया था। अत्यन्त प्राचीन समय से चली आ रही इस प्रदेश की धार्मिक पवित्रता का उल्लेख अपने यात्रावृत में किया है वह भी इस प्रदेश को धर्मक्षेत्र कहता है और महाभारत युद्व का भी उल्लेख मिलता है। भगवद्गीता से मिलते जुलते ग्रन्थ का भी उल्लेख है जिसमें कर्म आवागमन ज्ञान मुक्ति तथा स्वर्धम पालन का उपदेश है। हर्षवर्धन की मृत्यु के पश्चात् नवीं शताब्दी में यह प्रदेश प्रतिहार साम्राज्य के आधिपत्य में था। प्रतिहारों के शासनकाल में पृथुदक घोड़ों के व्यापार का प्रसिद्ध केन्द्र बना। यहां पर प्राप्त प्रतिहार सम्राट महेन्द्रपाल के अभिलेख में इस प्रदेश की तोमरवंश के सम्बन्ध में ऐतिहासिक सामग्री प्राप्त होती है। इसी अभिलेख में कुरुक्षेत्र और उसकी पावननदी सरस्वती का भी वर्णन है। ऋषि मुनियों के निवास स्थान के कारण इस प्रदेश को पापों का विनाशक कहा गया है और सरस्वती के पवित्र जल को संसार सागर को पार कराने वाली नौका अथवा देवलोक ले जाने वाले रथ से उपमा दी गई है।

ग्यारवी शताब्दी में इस प्रदेश पर तुर्कों का आक्रमण हुआ एवं इस तीर्थ की शोभा में ह्रास हुआ किन्तु 12वीं शताब्दी में चौहानों के शासन में यह प्रदेश पुन| उन्नति पथ पर अग्रसर हुआ। पुन: तरावड़ी के युद्ध में पृथ्वीराज तृतीय की पराजय के बाद कुरुक्षेत्र मुस्लिम शासकों के अन्तर्गत चला गया। मुगलों के अनेक आक्रमण इसे सहने पड़े। सम्राट अकबर जब दूसरी बार (1567ई में कुरुक्षेत्र आये तो उस समय सूर्यग्रहण का मेला लगा हुआ था। थानेश्वर के प्रसिद्ध सूफी संत कुतुब जलालउदीन अकबर के समकालीन थे। जिनसे उसने दो बार भेंट की। प्रथम भेंट 1556 में तथा द्वितीय भेंट **1581** में अबुलपजल उनके साथ थे। इसी परम्परा में आगे शेख चेहली वास्तविक नाम (अब्दुर रहीम) वन्नरी हुये जो संभवत| शाहजहां एवं दाराशिकोह के समकालीन थे। स्थानेश्वर में इनकी समाधि परवना संगमरमरी गुम्बज वाला मकबरा आज भी शेह चेहली के मकबरे के नाम से विख्यात है। इसे उतर पश्चिम भारत में सर्वाधिक आकर्षक एवं मनोरम् स्मारक कहा जाता है।

तदनन्तर पंद्रवी शताब्दी में सिक्ख गुरुओं गुरुनानक, तेगबहादुर, गुरुरामदास हरराय इत्यादि ने कुरुक्षेत्र की यात्राएं की जिनकी स्मृति में यहां गुरुद्वारे बने। इस प्रदेश ने अनेक उत्थान व पतन देखे हैं। परन्तु इसका धार्मिक एवं सांस्कृतिक महत्व बराबर बना रहा। सूफी सम्प्रदाय के साधक कुतुब जलालउदीन इसी थानेश्वर के निवासी थे।

अठाहरवीं शताब्दी में अहमदशाह एवं नादिरशाह के आक्रमणों से इस भूमि को अपार क्षति हुई जिसके परिणामस्वरुप 1850 ई० में यह प्रदेश अंग्रेज़ों के शासन में चला गया। बीसवीं शताब्दी में अर्थात 1947 में जब भारत स्वतन्त्र हुआ तो बहुत से हिन्दु भाई यहां आकर बसे। उनके लिए यह अत्यन्त पुनीत एवं सम्मान का अवसर था। कई सन्तो ने भी इस पुण्यभूमि में शरण ली। एवं इस प्रदेश में धार्मिक वातावरण पुनः उत्पन्न हुआ। कुरुक्षेत्र जीर्णोद्वार समिति ने कुरुक्षेत्र तीर्थ के पुर्ननिर्माण का कार्य प्रारम्भ किया। वे कुछ सीमा तक अपने उद्देश्य अर्थात हिन्दुओं के पवित्र तीर्थ पर विश्वास करने में, उनकी रक्षा करने एवं जीर्णोद्वार करने में

सफल हुए। इसका मुख्यालय गीताभवन कुरुक्षेत्र था। यात्रियों की सुविधा हेतु यहां पर धर्मशाला बनवाई गई सुन्दर मन्दिर बनवाया गया एवं तीर्थों के महत्व को दर्शाने हेतु पुस्तकालय एवं "कुरुक्षेत्र दर्शन" नाम से पुस्तक भी बनाई गई। तीर्थों पर जनता की सेवा हेतु प्याऊ एवं लंगर भी लगाए गये। फ्री चिकित्सालय इत्यादि का भी प्रबन्ध किया गया।

किन्तु कुरुक्षेत्र की कायाकल्प का वास्तविक श्रेय आदरणीय परम श्रद्धेय गुलजरी लाल जी नंदा अध्यक्ष कुरुक्षेत्र विकास मंण्डल को जाता है। वे वास्तव में राजर्षि हैं जिन्हें प्राप्त कर यह धर्मभूमि भी धन्य हो गई। उनके अथक प्रयत्नों से, इस तीर्थ का जो रुप उभरा है उसे देखते ही बनता है। तीर्थों के प्रति धर्म के प्रति पूर्णरुपेण समर्पित नंदा जी ने केवल हरियाणा सरकार से सहयोग लेकर तीर्थों का सुधार करवाया है वरन् कारसेवा द्वारा लाखों श्रद्धालुओं को सुवर्ण अवसर दिया है कि वे अपने हाथों से इस पुण्य भूमि को श्रद्धापुरुप समर्पित कर सकें। जहां वर्षों पूर्व कीचड़ गारा व मिट्टी से भरपूर छप्पड़ नुमा तालाब थे वे आज एशिया में सबसे बड़ा सरोवर है। निरन्तर स्वच्छ जल सतलुज से आ रहा है एवं देश विदेश से हजारों पर्यटक एवं भक्तजन अपने आप को उस महापुरष का ऋणी मान रहे हैं जिन्होंने इन तीर्थों को अत्याधुनिक ढंग से सजाया संवारा है और हमारी धार्मिक आस्था की आधारशिलायें सुदृढ़ की हैं।

****

"कुरुक्षेत्र माहात्म्य"

भारत तीर्थ प्रधान देश है। इसका इतिहास अपने प्राचीन परिवेश में अमर कथाएं संजोए हुए हैं। इसके चारों धाम, सातों पुरियां, गंगा यमुना सरस्वती, गोदावरी, सिन्धु कावेरी, नर्मदा सातों नदियों के कण कण में भारत देश की महान सभ्यता संस्कृति एवं भावात्मक एकता सामाविष्ट है।

समस्त भारत प्रदेश प्राचीनकाल से ही अनेक क्षेत्रों के नाम से जाना जाता है। जैसे कुरुक्षेत्र, ब्रजक्षेत्र सोराष्ट्र क्षेत्र आदि। समस्त क्षेत्रों में कुरुक्षेत्र इसलिए श्रेष्ठ है कि सृष्टि रचना के समय मधुकैटयादि राक्षसों के वध से धरती को राक्षसों की मेद से बचाया, वही पावन धारा कुरुक्षेत्र है।

पौराणिक ग्रन्थों में मुक्ति के चार उपाय बतलाए गये हैं —— ब्रह्मज्ञानी होना, गया जी में स्नान करना, उतरायण में प्राण त्यागना एवं कुरुक्षेत्र में वास करना यह चार प्रकार की मुक्ति स्मृतियों से अभिमत हैं इसमें दो मुक्ति ब्रह्म ज्ञान और कुरुक्षेत्र वास ही है। अर्थात ब्रह्मज्ञानी और कुरुक्षेत्र वासी जीव ब्रह्म समान ही होता है। अर्थात वह पुनः मृत्युलोक में नहीं आता।

शुकसुधासागर में भी उल्लेख आता है कि गया में श्राद्ध करना, उतरायण पक्ष में मरण स्पर्श पद की मुक्ति है। वहां से पुन| लौटकर नहीं आना पड़ता किन्तु कुरुक्षेत्र में वास करने वाला प्राणी अशुद्ध नहीं है वह मरने के बाद मुक्त हो जाता है।

गीता में अर्जुन ने श्री कृष्ण भगवान से यही सन्देह व्यक्त किया है कि हे प्रभु आप तो अन्तर्यामी है स्वयं नरनायाणवतार हैं कृपया यह बतलाइये कि अगर महाभारत का युद्ध हुआ तो वह महान विनाशकारी व भंयकर होगा और संभवत| ही इसके बाद किसी की क्रिया कर्म हेतु कोई बचे और बगैर क्रिया के गति कैसे होगी। तब तक मृतक प्राणियों का क्या बनेगा और आपने स्वयं यह वरदान दिया था कि जो प्राणी कुरुक्षेत्र भूमि में प्राण त्यागेगा वह सीधा स्वर्ग को जाएगा। तो भगवान बोले कि ऐसा ही होगा। कुरुक्षेत्र भूमि में शरीर त्यागने वाले के फूल भी किसी तीर्थ में प्रवाह करने की आवश्यक्ता नहीं। उसे निश्चय ही मुक्ति प्राप्त होगी।

ब्रहमज्ञान गया श्रांद्ध गोग्रहे मरणं तथा।
वासः पुसां कुरुक्षेत्रे मुक्तिरुक्ताचतुर्विधा।

ब्रहमज्ञान होना, गया में श्राद्ध करना, गौशाला में मरना, एवं कुरुक्षेत्र भूमि में वास करना, यह चार प्रकार की मुक्ति श्रुति एवं स्मृतियों में अभिमत है। इन में दो मुक्ति ब्रह्म ज्ञान और कुरुक्षेत्र वास विदेह मुक्ति है अर्थात ब्रहमज्ञानी और कुरुक्षेत्र निवासी जीव ब्रह्म तुल्य हो जाता

है।" न स पुनरावर्तते" इस श्रुति के अनुसार वह जीवन पुनः संसार में नहीं आता। गीता में भी उल्लेख है --

इंद ज्ञानमुपासित्य मम साधर्म्यमागता।
सर्गे ऽऽपि नोप जायन्ते प्रलये न कथान्ति च ।।

गया श्राद्ध और गौशाला में मरण स्वर्गपद मुक्ति है अर्थात पुण्यक्षीण होने पर मनुष्य स्वर्ग से पुन: मृत्युलोक में नहीं आता शंकरोपाध्याय ने.लिखा है --

गंगायां हि जलेमुक्तिर्वाराणस्यां जले स्थले
कुरुक्षेत्रे त्रिधामुक्तिरन्तरिक्षे जले स्थले।

अर्थात गंगा जल में, काशी के जल एवं स्थल में तथा कुरुक्षेत्र के जल स्थल एवं अन्तरिक्ष वास में मुक्ति है। महाभारत में भी --

ब्रहमवेदि कुरुक्षेत्रं पुण्यं ब्रहमर्षि सेवितम् ।
तस्मिन्वसन्ति ये धीराः न ते शोप्याः कदाचन् ।।

कुरुक्षेत्र में रहने वाले स्त्री पुरुप शोचनीय नहीं हैं वे मुक्त हो जाते हैं। कुरुक्षेत्र भूमि में करने वाला का फिर जन्म नहीं होता। इसलिए देवता, ऋपि, गन्धर्व० सिद्ध सभी कुरुक्षेत्र में आकर निवास करते हैं। सूर्य चन्द्रमा आदि ग्रहों का भी समय आने पर पतन हो सकता है किन्तु कुरुक्षेत्र में मारने वालों का पुर्नजन्म नहीं होताः-

कुरुक्षेत्रे मृत्पनान्तु न भूयः पतनं भवेत् ।
अतो देवर्षि गन्धर्वा तत्क्षेत्रे वसनोत्सुकाः ।।

देवभूमि कुरुक्षेत्र

प्रत्येक राष्ट्र एवं जाति का गौरव उस राष्ट्र के महान पुरुपों, धार्मिक परम्पराओं एवं ऐतिहासिक तीर्थों पर निर्भर करता है। पुण्यात्मा महापुरप जहां जन्म लेते हैं अथवा जहां वे अपनी लीलाएं करते हैं वह स्थान तीर्थ बन ज़ाता है। यह बात धर्मक्षेत्र कुरुक्षेत्र पर पूर्णतया चरितार्थ होती है। यहां भगवान कृष्ण ने विश्वव्यापी ज्ञान गीता के रुप मे दिया। स्वयंभू ब्रहमा ने यहां सृष्टि रचना हेतु अनेकों यज्ञ किए। महान आचार्यों एवं ऋपियों ने सरस्वती के पावन तट पर ऋचाएं की। महाभारत का महान ऐतिहासिक युद्ध इसी क्षेत्र में हुआ। अतः कुरुक्षेत्र की प्रसिद्धि न केवल भारत में अपितु देश देशान्तर में व्याप्त है। यह प्रसिद्धि जितनी विस्तृत है उतनी ही प्राचीन भी।

देवताओं ने इसी भू–भाग को अपनी यज्ञवेदि बनया। ब्रह्मा जी के बाद अनेक ऋषि एवं ज्ञान पिपासु यहां आये और अपने उपासना मुक्त तत्व ज्ञान से सारे विश्व को आलोकित किया। यह स्थान आदि काल से ही परम पवित्र तीर्थ बन गया एवं इसको केन्द्र मानकर युगों से मानव द्वारा उत्कर्षकारी कार्यों का संचालन प्रर्वतन एवं सम्वर्धन हुआ। इस प्रकार भारतीय मनीषा कुरुक्षेत्र को ही सृष्टि के विकास का आद्यःस्थल मानती है। ब्रह्मा जी ने विकास क्रम के निमाण की साधना इसी भूमि पर की थी। वेदसंहिता शतपथ ब्राहमण ग्रन्थ, उपनिषद पुराण कुरुक्षेत्र की महिमा से आप्लावित हैं।

कुरुक्षेत्र देवभूमि का कण कण भगवद्भाव से ओत प्रोत है। इस के पग पग पर तीर्थ हैं। महाभारत एवं वामनपुराण आदि पुराणों से प्राप्त विवरण के अनुसार यहां पर 360 तीर्थ हैं अर्थात कुरुक्षेत्र के चतुर्दिक तीथ स्थान हैं। इसकी नामावली एवं संक्षिप्त विवरण परिशिष्ट में दिया गया है। धर्मक्षेत्र कुरुक्षेत्र की महिमा का यशोगान एवं उसका महत्व उपनिषदों, पुराणों धर्मशास्त्रों में विस्तारपूर्वक वर्णन किया गया है। यह तीर्थों में तीर्थराज का स्थान ग्रहण किए हुये हैं। इस तीर्थ की भूमि, जल एवं वायु की महिमा अनन्त है। इस तीथ की 48 कोस की भूमि पुण्यभूमि है देवभूमि है एवं मुक्ति प्रदायिनी है। इस क्षेत्र में कोई भी ऐसा स्थान नहीं जहां ऋषि मुनियों ने कोई यज्ञ न किया हो। प्रत्येक तीर्थ उन ऋषि मुनियों अथवा देवों के नाम से ही सम्बन्धित है। ऐतिहासिक दृष्टि से भी यह भूमि सृष्टि के उत्पति का केन्द्र है सारे विश्व में इससे प्राचीन ऐतिहासिक गौरव सम्पन्न भूमि अन्यत्र कोई नहीं। जाबालि मुनि के अनुसार यह वह क्षेत्र है जहां पर ब्रह्मा से लेकर इन्द्र तक समस्त देवता यज्ञ करते रहे हैं जिसके सेवन से ब्रह्म की प्राप्ति होती है।

महार्षि मनु इसे सरस्वती एवं हषद्वती के बीच की भूमि ब्रह्मावर्त मानते हैं। महाभारत के अनुसार इस तीथ में स्नान करके जो मनुष्य उसको अश्वमेध जितेन्द्रय सेवं ब्रह्मचारी रहता है। उसको अश्वमेघ यज्ञ का फल मिलता है। तथा वह समस्त पापों से मुक्त हो जाता है। पृथ्वी स्वर्ग एवं पाताल, इन तीनों लोकों में सर्वश्रेष्ठ कुरुक्षेत्र है। पुण्य सलिला श्री गंगा जी के जल एवं थल में परन्तु धर्मक्षेत्र कुरुक्षेत्र के जल, थल एवं अन्तरिक्ष में मृत्यु होने से मुक्ति प्राप्त होती है।

देवभूमि कुरक्षेत्र की वायु से पैरों की धूलि उड़कर जो मनुष्य के शरीर पर पड़ती है तो पापी मनुष्य भी परम गति को प्राप्त करता है। वायुपुराण के अनुसार कुरुक्षेत्र चारों युगो का तीर्थ है। जब ब्रह्मादि देवताओं ने सतयुग में सृष्टि के आदि में इस स्थान पर यज्ञ किया तो इस भूमि का नाम ब्रहम्वेदि था। त्रेता में भगवान परशुराम ने क्षत्रियों पर क्षोभ किया तो इसे रामह्द कहा गया। द्वापर में कुरु राजा ने यज्ञ दान एवं मोक्ष की प्राप्ति हेतु इस भूमि का कर्षण किया तो इसे कुरुक्षेत्र कहा गया। कलियुग के आदि में इसे समन्त तथा पांच प्रसिद्ध तीर्थों की भूमि (सन्निहित) ब्रह्मसर, स्थाणेश्वर, रुद्रकूप एवं चित्रमुख कहा जाता है। अत| यह तीर्थ चारों युगों का तीर्थ है। हरिवंश, धर्मक्षेत्र हरियाणा, देवभूमि, हरिक्षेत्र, इसी पवित्र

भूमि के नाम हैं। हरिक्षेत्र विष्णु के नाम से प्रसिद्ध हुआ, देवभूमि इसलिए कहते हैं। कि यहां देहावसान होने पर मनुष्य देवलोक को प्राप्त होता है।

धर्मभूमि इसलिए कहा गया कि यहां धर्म की अधर्म पर अर्थात पाण्डवों की कौरवों पर विजय हुई। दूसरा यहां पर किया गया शुभ कार्य तेरह दिन तक तेरह गुणा होकर फलता है। अत: इस भूमि पर पाप से दूर रहना चाहिए।

देवभूमि के सम्बन्ध में एक दन्त कथा यह भी है कि सृष्टि के आदि में विष्णु भगवान की नाभि से कमल और कमल से ब्रह्मा जी प्रकट हुए तो विष्णु जी जहां विराजमान थे उस समय वहां भूमि नहीं थी, चारों ओर जल ही जल था। ब्रह्मा जी ने उत्पन्न होकर सृष्टि की रचना की। विष्णु जी चौकड़ी मार कर बैठे हुए थे जितनी भूमि उनके आसन के नीचे थी वह देवभूमि कहलाई। इसके बाहर की भूमि मेदिनी कहलाई।

पौराणिक आख्यान के अनुसार देवों एवं दानवों ने समुद्र का मन्थन किया। उसके भीतर से अमृत कलश निकाला। उस अमृत को पीकर वे सभी अमर हो गये। इसी प्रकार हमारे देश में कुछ ऐसे श्रेष्ठ महापुरुष प्रगट हुए हैं जिन्होंने अपने हृदय सागर को मथ कर उसके भीतर से अमृत कलश बाहर निकाला है। उस कलश के अमृत को जो भी पीता है उसका जीवन देवतुल्य हो जाता है, वह अमर बन जाता है।

कुरुक्षेत्र भी वही अमृत रुपी कलश है जिसे हमारे देवों, ऋषियों एवं धार्मिक महापुरुषों ने, अपने हृदय रुपी सागर को मथ कर यह अमृत कलश जनता जर्नादन को मुक्त करने हेतु बनाया है, जो भी इसे पीकर अमर होना चाहते हैं उन्हें यहां निवास करना चाहिए एवं धार्मिक कृत्यों में अपना जीवन समर्पित करना चाहिए। यहीं इस धर्मक्षेत्र कृत्यों में अपना जीवन समर्पित करना चाहिए। यहीं इस धर्मक्षेत्र का पावन सन्देश है।

सहायक ग्रन्थ सूची

1. अमर सिंह संस्कृत साहित्य में कुरुक्षेत्र. 1982 शाहदरा, हेमन्त
2. अग्रवाल, वी.एस. मार्कण्डेय पुराण: एक सांस्कृतिक अध्ययन. 1961 इलाहाबाद, हिन्दुस्तान अकादमी.
3. अग्रवाल, वी.एस. हर्षचरित: एक सांस्कृतिक अध्ययन. 1964 पटना, बिहार राष्ट्र भाषा परिषद।
4. उपाध्याय, बलेख. पुराण विमर्श. 1987. वाराणसी, चौखम्बा
5. उपाध्याय, बलेख. वैदिक साहित्य और संस्कृति. 1967. काशी, शारदा मन्दिर।
6. उपध्याय, भगवतशरण. भारतीय व्यक्ति कोष.1976. दिल्ली, आर्य
7. कल्याणय तीर्थ अकं 1957. गोरखपुर गीताप्रेस
8. कल्याण: वराह अंक. 1977 गारखपुर गीताप्रेस
9. कोशो, पी.वी. धर्मशास्त्र का इतिहास. 1980 लखनऊ, हिन्दी समिति
10. गौतम, राजेन्द्र भारतीय संस्कृतिः दर्शन एवं सभ्यता. 1984 जींद, अंगिरा शोध संस्थान
11. जगदीश वरा नन्द महाभारतम, खण्ड 1–3 1987. दिल्ली, गोविन्दराम हंसानन्द
12. झा, हृदयनारायण संक्षिप्त कुरुक्षेत्र महात्म्य. 1973 कुरुक्षेत्र, मानव धर्म मिशन
13. पाण्डेय, रामतेज आनन्द रामायण. 1988. दिल्ली, चौखम्बा
14. पुरी, उषा भारतीय मिथक कोष. 1988. दिल्ली नेशनल पब्लिशिंग हाउस.
15. पूरी, प्रभात कुरुक्षेत्र परिचय. 1975. कुरुक्षेत्र, डेरा बाबा श्रवणनाथ
16. बर्मन, गोपाल लोकप्रिय गीता. 1984. बनारस,
17. बालकृष्ण कुरुक्षेत्र. 1965. शाहदरा, विश्वविधालय प्रकाशन
18. भाण्डारकर, आर जी. वैष्णव, शैष और अन्य धर्मिक मत 1967. वाराणसी, भारतीय विधा प्रकाशक
19. राय रामकुमार वैदिक इंडेम्स. 1961 वाराण्सी, यौखक
20. राय, सिद्धेश्तरनारायण पौराणिक धर्म एवं समाज 1968. इलाहबाद, पंचनद.
21. वसु, नरेन्द्रनाथ हिन्दी विश्व कोष. खण्ड 5.1986. दिल्ली, वी.आर. पब्लिलिशिंग कारपोरेशन.
22. वार्ष्णेय, लक्ष्मीरागर हिन्दी सन्दर्भ कोश .1979. मेरठ, भारतीय सहित्य प्रकाशन.
23. शर्मा, गिरिधर पुराण अनुशीलन. 1. 1987. पटना, बिहार राष्ट्र भाषा परिषद.
24. शर्मा द्वारिका प्रसाद चरित्रकोश. 1983. दिल्ली ने. प० हाऊस
25. शर्मा द्वारिका प्रसाद हिन्दी महाभारत. 1988 इलाहाबाद, रामनारायण लाल.
26. शर्मा, रामस्वरुप कुरुक्षेत्र रहस्य. 1930 जींद सनातन धर्म सभा
27. पौराणिक कोश. 1970. वाराणसी ज्ञान मंडल

28. शर्मा वनमाली दन्त हरियाणा की वेदान्त परम्परा और बाबा तोतापुरी. 1986. कुरुक्षेत्र, हरियाणा साहित्य सदन.
29. शर्मा, श्रीराम बीस स्मृतियां. 1966 बरेली संस्कृति संस्थान
30. शर्मा, श्रीराम भविष्य पुराण. 1970 बरेली संस्कृति संस्थान
31. शर्मा, श्रीराम ब्रहमपुराण. 1970 बरेली संस्कृति संस्थान
32. शर्मा, श्रीराम वामनपुराण. 1970 बरेली संस्कृति संस्थान
33. शर्मा, श्रीराम श्री भगवतपुराण 1970 बरेली संस्कृति संस्थान
34. सातवलेकर, सभा. महाभारत. 1969. पूना भण्डारकर
35. सूर्यकान्त वैदिक धर्म एवं दर्शन. 1963. देहली, मोतीलाल बनारसीदास

धर्मक्षेत्र कुरुक्षेत्र

पावन धरा पुनीत धांय।
शत शत नमन कोटि प्रणाम।।
धर्मक्षेत्र कुरुक्षेत्र इसी
पावन भूमि के नाम।
देव लोक को प्राप्त करें
जो करते देहावासान।। शत शत नमन -----
गंगा के जल से हो मुक्ति,
वाराणसी के जल थल में मुक्ति।
तेरे जल थल अन्तरिक्ष में
बसा है मुक्ति धाम।। शत शत ----
त्रिदेव से सेवित भूमि।
ऋषियों द्वारा पूजित भूमि।
वेद पुराण तेरी महिमा का
करते हैं यशोगान।। शत शत नमन -----
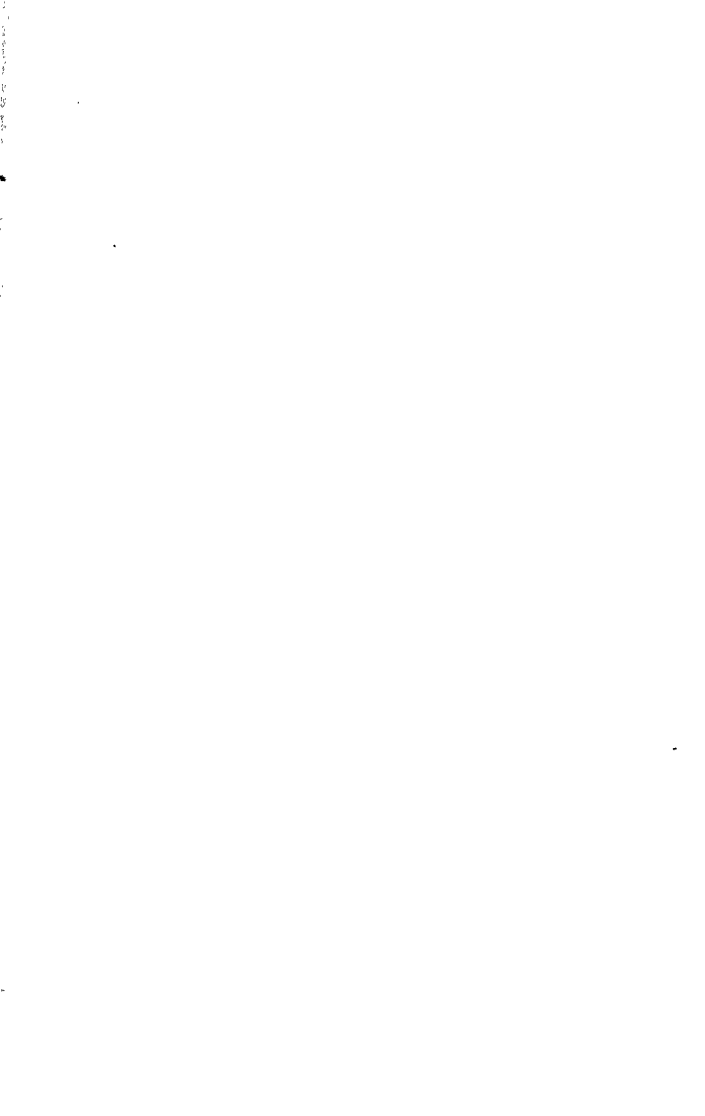
Cultural History — Kurukshetra
Kurukshetra — Cultural History